अंक 02

ज्योतिष की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका | सम्पादक : के. एम. सिन्हा (ज्योतिषाचार्य)

Kundali expert™ For Better Future

नवरात्री विशेषांक

अक्टूबर 2020

ज्योतिष विज्ञान

मूल्य 35 रूपये

- शनि की ढैया
- नवग्रहों का ज्योतिष में महत्व
- नवरात्री पूजन
- मकर राशि और उसकी विशेषता
- नीच भंग राज योग
- भरणी नक्षत्र सम्पूर्ण परिचय
- ज्योतिष और स्वास्थ्य
- कौन से ग्रह कौन सा रोग उत्पन्न करते है ।
- वक्री ग्रहों की विशेषता
- द्वितीय भाव में शनि का प्रभाव

ज्योतिषाचार्य

के.एम.सिन्हा

"जीवन की लड़ाईयाँ सदैव मजबूत और परिश्रमी लोग नहीं जीता करतें जितता आज नही तो कल वहीं है जिसे यकीन है की वो जितेगा"

द्वितीय संस्करण

Publisher
KM ASTROGURU PVT. LTD,
B-1, 101, Block-E, Classic
Residency Apartment Raj
Nagar Extenion, Ghazabad

Printed & Design By
DS PRINT LAB
Shant Husain Nagar,
Padri Bazar Road, Gorakhpur

For ADS & Marketing
Please Contact
Nitish.soni@Kundaliexpet.com
Info@Kundaliexpert.com
Mobile : 9818318303
Landline No:. 0120-4732013

रासायनिक प्रवक्ता के रूप में करियर शुरू करने वाले, आज **श्री के.एम.सिन्हा** न केवल भारत में, बल्कि दुनिया के कई अन्य हिस्सों में एक प्रसिद्ध वैदिक ज्योतिषी और कुंडली विशेषज्ञ हैं। वह कुछ राजनीतिक घटनाओं के बारे में सटीक भविष्यवाणियां करने के लिए भी जाने जाते हैं। कुंडली एक्सपर्ट की अपनी मुख्य शाखा गाजियाबाद में स्थित है। उनकी भविष्यवाणियां वैदिक ज्योतिष पर आधारित हैं जहां वे कुंडली या उसके द्वारा प्रदान किए गए समय, स्थान और तिथि के आधार पर विभिन्न ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करते हैं। वह लोगों को आने वाली समस्याओं को दूर करने और उनसे खुद को रोकने के उपाय भी प्रदान करता है।

ज्योतिषीय नियमों को गणितीय मॉडल में अनुवाद करके उनके द्वारा ज्योतिषीय भविष्यवाणियां भी की गई हैं। एक ज्योतिषी बनने के अपने सपने को पूरा करने और आगे बढ़ने के लिए, **श्री के.एम.सिन्हा** ने रसायन विज्ञान कोचिंग कक्षाएं प्रदान करना शुरू किया। ज्योतिष को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन के 15 वर्षों को समर्पित किया और ज्योतिषीय सिद्धांतों का अध्ययन, विश्लेषण और समझ शुरू किया। ज्ञान प्राप्त करने की इस यात्रा ने अब उन्हें एक ज्योतिषी में बदल दिया है और पिछले 5-6 वर्षों से वह पेशेवर रूप से ज्योतिष का कार्य कर रहे है।

उनके अनुसार ज्योतिष एक विज्ञान है, जो विभिन्न ग्रहों की स्थिति के सिद्धांतों पर काम करता है। अलग-अलग घरों में विभिन्न ग्रहों की स्थिति लोगों के जीवन में बहुत प्रभावशाली भूमिका निभाती है। सटीक पूर्वानुमान प्राप्त करने के लिए, उसके समय, स्थान और जन्म तिथि के बारे में सही जानकारी होना बहुत महत्वपूर्ण है।

के.एम. सिन्हा, के अनुसार जन्म के समय या जन्म की तारीख, समय और स्थान प्रदान करके बनाई गई कुंडली बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कुंडली किसी भी ज्योतिषीय भविष्यवाणियों को बनाने का आधार है। एक जन्म कुंडली या कुंडली 12 घरों द्वारा बनाई जाती है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करती है। तारों की स्थिति (यानी 9 राशि वाले ग्रह) एक तारीख, स्थान और जन्म के समय के अनुसार इन घरों में स्थित होती है कुंडली वही है लेकिन ग्रहों की स्थिति बदलती रहती है जो लोगों के जीवन में प्रभाव डालती है।.

ज्योतिषीय भविष्यवाणियों से जो लाभ प्राप्त हो सकते हैं, वह यह है कि उन्हें अपने जीवन के कठिन समय से अवगत कराया जा सकता है, उन समस्याओं का समाधान करने के लिए उन कठिनाइयों और उपायों का सामना करने से कैसे रोका जा सकता है। इसके अलावा, कोई कैसे अच्छे समय का पूरा उपयोग कर सकता है और इसे अपने पक्ष में कर सकता है। इस बात का भी ध्यान दिया जाता है

मुख्य रूप से गाजियाबाद में स्थित, दिल्ली में सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषी **के.एम.सिन्हा** एक प्रसिद्ध कुंडली विशेषज्ञ हैं और उन्होंने कई व्यक्तिगत और राजनीतिक भविष्यवाणियों को सटीक रूप से किया है। यह व्यक्तिगत जीवन हो, पेशेवर, कैरियर या स्वास्थ्य कोई भी आसानी से परामर्श कर सकता है और विशेषज्ञ की सलाह ले सकता है। वह हस्तरेखा विज्ञान और अंकशास्त्र के माध्यम से भी भविष्यवाणियां कर सकते है। एक कुंडली चार्ट तैयार कर कुंडली विश्लेषण, भविष्यवाणियों और उपायों को कुंडली विशेषज्ञ द्वारा नाममात्र राशि पर प्रदान किया जाता है। यह नाममात्र शुल्क एक वर्ष के लिए वैध है और कोई भी वर्ष के दौरान कभी भी हमारे विशेषज्ञों से सलाह ले सकता है।

ज्योतिष विज्ञान के इस द्वितीय संस्करण में पूरी कोशिश की गई है कोई कमी ना रहें फिर भी यदि कोई त्रुटि हुई है तो आप अपनी प्रतिक्रियाएं info@kundaliexpert.com पर भेज सकते है । आप सभी का बहुत आभार

विषय सूची

शनि की ढैया....................4-5

नव ग्रहों का ज्योतिषी महत्व....................5-12

नवरात्री पूजन....................12-14

मकर राशि....................14-17

कौन से ग्रह से कौन सा रोग उत्पन्न है 17-21

अक्टूबर राशि फल 22-23

दुर्गा सप्तशति....................23-24

वक्री ग्रहो का प्रभाव....................24-25

रत्न ज्योतिष....................25-27

द्वितीय भाव में शनि का प्रभाव....................27-29

अक्टूबर महीने के व्रत और त्यौहार....................30

आपके प्रश्नों के उत्तर 31

© All Right Reserved to KM ASTROGURU PVT. LTD.

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form on by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who quote brief passages in a reviews.

Kundali expert™ For Better Future

WHY SHOULD YOU MUST CONSULT WITH

ASTROLOGER KM SINHA

ASTROLOGER
KM SINHA

CONSULTATION TYPE

IT'S
KM ASTROGURU
PVT.LTD.

1 or 2 Questions
Fee = 3100 + S.T.

Full Analysis
Fee = 5100 + S.T.

	1 or 2 Questions	Full Analysis
KUNDALI PDF	✓	✓
3 FOLLOUP	✓	✓
CUSTOMIZED LIFE REPORT	✓	✓
JYOTISH VIGYAN	✓	✓
CUSTOMIZED DAILY HOROSCOPE	✓	✓
CUSTOMIZED WEEKLY HOROSCOPE	✗	✓
CUSTOMIZED MONTHLY HOROSCOPE	✗	✓
CUSTOMIZED RASHI PARIVARTAN	✗	✓
FULL MOBILE ACCESS	✗	✓

VALID FOR 1 YEAR

आज की दुनिया को देखते हुए हर व्यक्ति समाज और धर्म कि तरफ कम और भोतिक सुखों पर ज्यादा महत्व दे रहें है परन्तु आज के ज्योतिषी है उनका मानना यह है कि शनिदेव जिस भी दिशा में भाव में धर्म अर्थ, काम व मोक्ष के लिए गोचर करे उसी के अनुसार किसी भी व्यक्ति को कोई भी कार्य करना चाहिए। जो भी व्यक्ति इन सभी जानकारीयों से दूर रहते है। उन्ह ही अपने किये गये अशुभ कर्मो के कारण ही शारिरीक और मानसिक परेशानियाँ होती है। तथा कारोबार में भी हानि होती है।

ढैया का विचार

ढैया का मतलब यह होता है कि जब शनिदेव किसी व्यक्ति की चंद्र कुंडली मतलब जन्म के समय कि राशि के अनुसार चतुर्थ व अष्टम से गोचर करते है तो वह किसी व्यक्ति कि राशि में ढाई वर्ष तक रहतें है अर्थात् ढैया का अर्थ ही यही होता है कि जातक कि राशि में ढाई वर्ष तक रहना । वैसे तो शनिदेव हर एक राशि में ही ढ़ाई वर्ष तक रहते है परन्तु चतुर्थ और अष्टम भाव जो होते है। वह मोक्ष के भाव होते है। क्योकि शनिदेव प्रत्येक भाव में धर्म, अर्थ, काम मोक्ष के अनुसार ही फल देते है।

चतुर्थ भाव कि ढैय्या

चतुर्थ भाव कि ढैया जानने के लिए सबसे पहले हम यह देखतें है कि शनिदेव किस भाव में बैठें है यदि चतुर्थ भाव में शनि स्थित है तो यह चतुर्थ के परिणामों को किस तरह से प्रभावित करता है। और चतुर्थ से प्राप्त होने वाले परिणाम हमे किस तरह से प्राप्त होते है और कहाँ-कहाँ उनकी तीसरी सातवीं एवं दसवी दृष्टि पड़ रहीं है क्योंकि इन भावों से सम्बन्धित विषयों में शुभ एवं अशुभ फलों कि प्राप्ति होती है चतुर्थ भाव से शनिदेव चतुर्थ भाव, दशम् भाव तथा लग्न को देखते हैं जब शनिदेव चतुर्थ भाव से गोचर करतें है तो व्यक्ति के पूर्व के अशुभ कर्मो के फलस्वरूप उसके भौतिक सुखों मकान एवं वाहन आदि में परेशानी पैदा होती है तथा इसका संकेत किसी व्यक्ति कि कुंडली में स्थिति दिया करती है। जिससे उसके कारोबार में भी फर्क पड़ता है। तथा उसे परेशनियाँ भी बढ़ जाती है तथा परेशानियों के बढ़ने से उन्हें शारीरिक कष्ट की भी प्राप्ति होती है। अतः चतुर्थ भाव की ढैया में कोई भी मकान खरीदना या बेचना नहीं चाहिए ना हि अपने व्यवसाय में किसी तरह का परिवर्तन करना चाहिए। जो व्यक्ति अत्याधिक शांत रहते हैं तथा धार्मिक कार्यो में संलग्न रहते है ऐसे व्यक्तियों को शनिदेव कि चतुर्थ ढैया में किसी तरह की परेशानियाँ नहीं होती तथा जो व्यक्ति शनिदेव कि चतुर्थ ढैया में नया कार्य करते है उन्हें परेशानी होती हैं।

अष्टम भाव कि ढैय्या

शनि की ढैया और साढ़े साती के विषय में सब जानते है, लेकिन शनिदेव का एक और विशेष गोचर होता हैं जिसे अष्टम शनि के नाम से जाना जाता है अष्टम ढैय्या तीस वर्ष में एक बार आता है और इसका स्पष्टीकरण जन्म कुंडली के आधार पर किया जाता है कि जब चन्द्र कि जन्म राशि से आठवें घर में गोचर का शनि आता है तो अष्टम शनि आरम्भ हो जाता है। चूँकि शनि एक राशि में ढ़ाई वर्ष तक रहतें है, अतः अष्टम शनि की अवधि भी ढ़ाई वर्ष की होती अष्टम ढैया चतुर्थ ढैया से ज्यादा अशुभफलों का संकेत देती है अतः ज्योतिषी तथा कई लोगों के अनुभव के अनुसार जब यह ढैया शुरू होती है तो व्यक्ति को शुभफल की प्राप्ति होती है वह नया कार्य करने लगता है परन्तु अष्टम ढैया नया कार्य शुरू कराकर धोखा दे जाती है इसलिए अधिकतर व्यक्तियों को अष्टम ढैया में विषेश सावधानी बरतनी चाहिए। क्योंकि अष्टम भाव से शनिदेव तीसरी दृष्टि से दशम भाव को सप्तम दृष्टि से से द्वितीय भाव को और दशम दृष्टि से पंचम भाव को देखता है अष्टम भाव सबसे पहले कारोबार में परेशानी पैदा करते है जिनकी वजह से व्यक्ति के कुटुम्ब और धन पर बुरा असर पड़ता है प्रत्येक व्यक्ति को अष्टम ढ़ैया में कोई भी नया कार्य बैंक आदि से कर्ज या जमीन-जायदाद का खरीदना या बेचना या पिता की सम्पत्ति को बाँटना नुकसानदायक होता है इस ढैया के दौरान व्यक्ति को यह कार्य नहीं करने चाहिए। अष्टम ढैया में जो व्यक्ति धार्मिक कार्य, नदी, समुद्र स्नान एवं तीर्थयात्रा आदि करता है तो उस व्यक्ति को अष्टम ढ़ैया में किसी प्रकार कि परेशानी नहीं होती है।

हमारी कुण्डली ढैया किसकों और कब लगती है आइए हम एक-एक करते इसको जान लेते है?

1 शनिदेव जब कर्क एवं वृश्चिक राशि में भ्रमण करतें है तो मेष राशि के लोगों पर शनिदेव की ढैया रहती हैं।

2 शनिदेव सिंह एवं धनु राशि में गोचर करतें है तब वृषभ राशि के लोगों पर शनिदेव कि ढैया रहती है।

3 कन्या एवं मकर राशि में शनिदेव के भ्रमणकाल में मिथुन राशि के लोगों पर शनिदेव कि ढैया रहती है।

4 तुला एवं कुम्भ राशि में गोचर में शनिदेव जब भ्रमण करतें है, तग कर्क राशि के लोगों पर शनिदेव कि ढैया रहती है।

5 गोचर भ्रमणकाल में शनिदेव जब वृश्चिक और मीन राशि में आते है तो सिंह राशि वालों पर शनिदेव कि ढैया रहती है।

6 शनिदेव जब धनु और मेष राशि में स्थित होतें है तो कन्या राशि के लोगों पर शनिदेव कि ढैया रहती है।

7 शनिदेव जब गोचर में मकर एवं वृष राशि में

होते है, तब तुला राशि के जातको पर शनिदेव कि ढैया रहती है।

8 गोचर में शनिदेव जब कुंभ और मिथुन राशि में प्रवेश करतें है तो वृश्चिक राशि के लोगों पर शनिदेव की ढैया रहती है।

9 शनिदेव जब गोचर में मीन तथा कर्क राशि में स्थित रहतें है तब धनु राशि के लोगों पर शनिदवे कि ढैया रहती है।

10 जब शनिदेव मेष ओर सिंह राशि से गोचर करतें है, तब मकर राशि वालों को शनिदेव कि ढैया प्रारम्भ होती है।

11 गोचर में शनिदेव जब वृष और कन्या राशि में आतें है तब कुंभ राशि वालो को शनिदेव कि ढैया प्रारम्भ होती है।

12 शनिदेव जब गोचर में मिथुन एवं तुला राशि में गोचर करते है , तब मीन राशि वालें लोगों को शनिदेव की ढैया प्रारम्भ होती है।

नवग्रहों का ज्योतिष में महत्व

ज्योतिष में सुर्य ग्रह का विशेष महत्व है। हिन्दु धर्म में सूर्य को देवता मानकर इसकी अराधना की जाती है वैदिक ज्योतिष के अनुसार सूर्य कों तारों का जनक माना जाता है। वैदिक ज्योतिष में यह एक महत्वपूर्ण और प्रमुख ग्रह है जन्म कुंडली के अध्ययन में सूर्य की अहम् भूमिक होती है। हिन्दु ज्योतिष में सूर्य ग्रह जब किसी राशि में प्रवेश करता है तो वह धार्मिक कार्यो के लिए बहुत ही शुभ समय होता है। इस दौरान लोग आत्मा शान्ति के लिए धार्मिक कार्यो का आयोजन करातें है

ज्योतिष में सुर्य ग्रह का विशेष महत्व है। हिन्दु धर्म में सूर्य को देवता मानकर इसकी अराधना की जाती है वैदिक ज्योतिष के अनुसार सूर्य कों तारों का जनक माना जाता है। वैदिक ज्योतिष में यह एक महत्वपूर्ण और प्रमुख ग्रह है जन्म कुंडली के अध्ययन में सूर्य की अहम् भूमिक होती है। हिन्दु ज्योतिष में सूर्य ग्रह जब किसी राशि में प्रवेश करता है तो वह धार्मिक कार्यो के लिए बहुत ही शुभ समय होता है। इस दौरान लोग आत्मा शान्ति के लिए धार्मिक कार्यो का आयोजन करातें है

विभिन्न राशियों में सूर्य की चाल के आधार पर ही हिन्दु पंचागं कि गणना संभव हैं। जब सूर्य एक राशि से दुसरी राशि में गोचर करता है तो उसे एक और माह कहतें हैं । राशिचक्र में 12 राशियाँ होती है। अतः राशिचक्र को पूरा करने में सूर्य को एक वर्ष लगता है। अन्य ग्रहों कि तरह सूर्य वक्री नहीं करता । सूर्य हमारे जीवन से अंधकार को नष्ट करके उसे प्रकाशित करता है।

वैदिक ज्योतिष में सूर्य का महत्व

वैदिक ज्योतिष में सूर्य ग्रह जन्म कुंडली में पिता का प्रतिनिधित्व करता हे। जब किसी महिला की कुंडली में हय उसके पति के जीवन के बारे में बताता है सेवा क्षेत्र में सूर्य उच्च व प्रशासनिक पद तथा समाज में मान-सम्मान को दर्शाता है यदि सूर्य कि महा-दशा चल रहीं हो तो रविवार के दिन जातकों को अच्छे फल मिलतें है। सूर्य राशि का स्वामी है। ओर मेष राशि में यह उच्च होता है। जबकि तुला इसकी नीच राशि हैं।

शारीरिक रूप रेखा - जिस व्यक्ति कि कुंडली में सूर्य लग्न में हो तो उसका चेहरा बड़ा और गोल होता है। उसकी आँखों का रंग शहद के रंग जैसा होता है। किसी व्यक्ति के शरीर में सूर्य उसके हृदय को दर्शाता है इसलिए काल पुरूष कुंडली में सिंह राशि हृदय को दर्शाती है। सूर्य पूरूषों की दायीं आँख और स्त्रियों की बायी आँख को दर्शाता है।

रोग - यदि जन्म कुंडली में सूर्य किसी ग्रह से पीडित हो तो यह हृदय और आँख से सम्बन्धित रोगों को जन्म देता है यदि सूर्य शिकायत होती है। यह चेहरे में मुहाँसे, तेज, बुखार, टाठफाइड, मिर्गी, चिल की शिकायत आदि बिमारियों का कारक होता है।

सूर्य की विशेषताऐं

यह घरती पर ऊर्जा का सबसे बड़ा प्राकृतिक स्त्रोत है।

सूर्य सभी ग्रहों का मुखिया है। सूर्य के बाल और हाथ सोने के है। वेदों में सूर्य को जगत की आत्मा कहा गया है। ज्योतिष शास्त्र में नव ग्रहों में सूर्य को राजा का पद प्राप्त है। सूर्य अपने अक्ष पर पुरब से पश्चिम की और घूमता है। सूर्य से सम्बधित कार्य/व्यवसाय सामान्य तौर पर सूर्य जीवन में स्थायी पद का कारक होता है। यह हमारी जन्मपत्री में सरकारी नौकरी को दर्शाता है यदि जिस नौकरी में सुरक्षा भाव सुनिशिचित होता है। वहाँ पर सूर्य का अधिपत्य भी सुनिश्चित होता है।

सूर्य के मंत्र

ज्योतिष में सूर्य ग्रह की शांति और इसके अशुभ प्रभावों से बचने के लिए ज्योतिष में कई उपाय बतायें गये है। जिनमें सूर्य के वैदिक , तांत्रिक और बीज मंत्र प्रमुख है।

सूर्य का वैदिक मंत्र

ऊँ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानों निवशयत्रमृतं मर्त्य च ।
हिरण्ययने सविता रथेना देवों यति भुवनाति पश्यन् ।।

सूर्य का तांत्रिक मंत्र

ऊँ घृणि सूर्याय नमः

सूर्य का बीज मंत्र

ऊँ हां हीं हौं सः सूर्याय नमः

ज्योतिष में सूर्य ग्रह कितना महत्वपूर्ण हैं, यह आपने समझ ही लिया होगा। हमारी पृथ्वी पर सूर्य के द्वारा जीवन संभव है इसी करण सूर्य को समस्त जगत की आत्मा कहा जाता है। सूर्य ग्रह के शुभ फल एवं कुण्डलीयों पर प्रभाव जिस किसी भी व्यक्ति या जातक के सूर्य कुंडली में शुभ ग्रह शुभ स्थिति में स्थित हो तो ऐस

व्यक्तियों या जातकों की प्रबधन क्षमता बहुत ही अच्छी होती है। यह अपने किसी भी तरह के प्रबंधन में सफलता हासिल करतें है।

किसी भी तरह के फैसले लेने से घबरातें नहीं है। यह अपने आस-पास के लोगों का ध्याान रखने वाले होते है। तथा ऊचों सरकारी-गैरसरकारी पद पर आसीन होते है। तथा इनके अपने कामों में एवं मान प्रतिष्ठा में दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की होती है।

सूर्य ग्रह के अशुभ फल एवं कुंडलीयों पर प्रभाव :-

जिस किसी भी व्यक्ति या जातक के लग्न कुंडली में सूर्य सही स्थिति में न हो बल्कि सूर्य अशुभ स्थिति में हो तो ऐसे व्यक्तियों या जातको को बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता हे। ऐसे जातक कमजोर हो जाते ह। इन्हें आँखों कि बिमारी, हड्डियाँ कमजोर होने की सम्भावना होती हे। यदि सूर्य कि स्थिति अत्यधिक खराब हो जाये तो हार्ट-सर्जरी या हार्ट-ब्लोकेज भी हो सकता है। इनके मान-सम्मान में कमी तथा पिता के सुख में कमी रहती है। तथा मान प्रतिष्ठा में कमी आदि परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है।

सूर्य शांति के उपाय-रत्न :-

यदि किसी व्यक्ति या जातक की लग्नकुंडली में सूर्य कि स्थिति शुभ हो और इसका महत्व कमजोर हो तो सूर्य रत्न माणिक धारण करना उचित रहता है। माणिक के जो उपरत्न है गार्नेट(याकूब), रेड टर्मलाइन है यदि माणिक का अभाव हो तो उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है। अतः यह ध्याान रखना होगा कि किसी भी रत्नों को धारण करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी से अपनी कुंडली अवश्य दिखा ली जाए अन्यथा बुरी परिस्थिति का सामना जातक को करना पड़ सकता है। इन उपायों को अवश्य करें सूर्य देव को प्रणाम करें , सादा जल चढ़ाएँ। पिता या पिता तुल्य बुजर्गों की सेवा करें, उनका आर्शीवाद लें।, गुड़ सोना, ताँबा और गेहूँ का दान करें। लाल-चन्दन को घिसकर स्थान के जल में मिलाए, फिर इस पानी से नहाए। गायत्री मंत्र या आदित्या हृदय मंत्र (आदित्य हृदयम) का जाप करें।

ज्योतिष में चंद्रमा के बारे में सब कुछ

चन्द्रमा ग्रह का ज्योतिष में विशेष स्थान है यह ग्रहों में सबसे अधिक गति से चलनें वाला ग्रह होता है यह चंद्रमा मन का प्रतिनिधित्व करता है। चंद्रमा माता, मन, मास्तिष्क, बुद्धिमान, स्वाभाव, जननेन्द्रियों, प्रजनन सम्बन्धी रोगों, गर्भाशय इत्यादि का कारक है।, इसके साथ ही चन्द्र व्यक्ति की भावनाओं पर नियन्त्रण रखता है। मन पर पड़नें वाले अच्छे बुरे प्रभावों का मुख्य कारण भी कहीं न कहीं चन्द्र ही होता है। माता या बुजुर्गो का अपमान करने से चंद्र दूषित हो जाता है। और अपना दुष्प्रभाव दिखाने लगता है कभी-कभी ऐसा भी देखने में आया है। कि चन्द्रमा का प्रभाव अशुभ या खराब अवस्था में हो और कोई व्यक्ति या जातक मात्र भक्त हो तो चंद्रमा अपना बुरा प्रभाव कम हि दिखा पातें है। शायद यही कारण कि बड़ों का आदर पूरें भारतवर्ष में शुमार है।

चन्द्रमा कि विशेषताएँ

वेदों में चन्द्र को काल पुरूष का मन कहा गया है। चन्द्र को सोम के रूप में भी जाना जाता है। चन्द्र सोम के रूप में सोमवार के स्वामी है। चन्द्र को वैदिक चन्द्र देवता सोम के साथ पहचाना जाता है। चन्द्र सत्व गुण वालें है तथा मन, माता कि रानी का प्रतिनिधित्व करतें है। चन्द्र का विवाह दक्ष प्रजापति कि नक्षत्र रूपी 27 कन्याओं से हुआ, जिनसें अनेक प्रतिभाशीली पुत्र हुए थे। चन्द्र के हाथों में एक मुगदर और एक कमल रहता है। चन्द्र हर रात पुरे आकाश में अपना रथ चाँद चलातें है। चन्द्र के रथ को 10 सफेद घोड़े या मृग द्वारा खीचा जाता है। ब्रह्माजी ने चन्द्र को नक्षत्र , वनस्पतियों, ब्राह्मण व तप का स्वामी नियुक्त किया गया है।

चन्द्र के मंत्र

ज्योतिष में चन्द्र ग्रह की शान्ति तथा इसके अशुभ प्रभावों से बचने के लिए , ज्योतिष में कई उपाय बताये गये है। जिनमें चन्द्रमा के वैदिक मंत्र , तात्रिक मंत्र तथा बीजत्र मंत्र प्रमुख हैं।

चन्द्र ग्रह के उपायों के तहत व्यक्ति को सोमवार का व्रत धारण और चन्द्र के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

चन्द्र के वैदिक मंत्र

ॐ इमं देव असपत्नं सुवहयं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्योन्द्रस्येन्द्रियाय। पूत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एक वोडमी राजा सोमोडस्माक ब्राहमणानां राजा।।

चन्द्र ग्रह का तांत्रिक मंत्र

ॐ सों सोमाय नमः

चन्द्रमा का बीच मंत्र

ॐ श्रां श्री श्रौ सः चंद्रमसे नमः

इस प्रकार आप देख सकते है कि ज्योतिष में चन्द्र ग्रह का कितना महत्व है मनुष्य के शरीर में 60 प्रतिशत से भी अधिक पानी होता है इससे आप अंदाजा लगा सकतें है। कि चन्द्रमा मुनष्य पर किस तरह का प्रभाव डालता होगा।

चन्द्र ग्रह के शुभ फल एवं कुंडलीयों पर प्रभाव

माता व माता समान स्त्रियों से सम्बन्ध मधुर रहतें है। मन शांत रहता है।

एक साथ कई काम करने की काबिलियत होती हे। निणर्य क्षमता बेहतर होती है।, रचनात्मक बड़ी हुई होती है।, ऊँची पद प्राप्त होता है।, सभी सुख सुविधाएँ प्राप्त होती है।, चन्द्र ग्रह के अशुभ फल एवं कुंडलीयों पर प्रभाव , माता को कष्ट होता है।, माता से कष्ट मिलता है। , मन विचलित रहता है।, निर्णय क्षमता कमजोर हो जाती है। , हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पातें ।, पेट हमेशा खराब रहता है।, लाछंन लगने की संभवना रहती है।, किसी काम में मन नहीं लगता है।, सुख सुविधाओं का अभाव रहता है।

चंद्र शांति के उपाय-रत्न

यदि किसी व्यक्ति या जातक कि कुंडली में चंद्र कमजोर हो तो चाँदी की अंगूठी में मोती धारण किया जाना चाहिए यदि मोती का अभाव पाया जाता है तो चंद्रकांत मणि या मून स्टोन पहना जा सकता है। अत' इस बात का ध्यान रखना होगा कि कोई भी रत्न धारण करने से पूर्व किसी योग्य विद्वान ज्योतिषी की सहायता या सलाह पूर्ण रूप से ले लेनी चाहिए। अन्यथा जातक को बुरी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है।

यदि व्यक्ति या जातक कि जन्मकुंडली में चन्द्र मारक हों तो इन उपायों को जातक या व्यक्ति को अवश्य करना चाहिए। सेने से पहले तांम्बें की गड़वी में पानी भरकर रखें। सुबह थोड़ा समय लेकर इसे पियें। इसे जीवन भर करें। माता व माता समान स्त्रियों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ले तथा इनकी सेवा भी करें। सेमवार का व्रत अवश्य रखे। हॉस्पिटल में दूध दान करें। किसी ब्राह्मण कों सफेद वस्त्र दान करें। ज्योतिश में मंगल के बारे में सब कुछ ज्योतिष में मंगल का महत्व ज्योतिश में मंगल एक क्रूर ग्रह है यह ग्रह मनुश्य के जीवन व सभी जातकों के लिए बहुत ही प्रभावकारी ग्रह है किसी व्यक्ति में मंगल ग्रह के दोश के कारण ही लोंगों के विवाह में कठिनाई आती है।

वैदिक ज्योतिष में मंगल ग्रह ऊर्जा, भाई, भूमि, शक्ति , साहस पराक्रम शैर्य का कारक होता है। **गरूण पुराण** के अनुसार मनुश्य के शरीर में नेत्र मंगल ग्रह का स्थान है यदि किसी जातक का मंगल अच्छा हो तों वह स्वभाव से निडर रहता है। तथा जिस जातक को हमेशा ही परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। मंगल ग्रह को वैदिक ज्योतिश में देवताओं का सेनापति कहा गया है। मंगल स्वभाव से क्रूर किन्तु एक देव ग्रह है पराक्रम के प्रतिक मंगल सभी बाधा को दूर करने वालें तथा सुख समृद्धि प्रदान करने वालें कहें गये है।

मंगल ग्रह के कारण ही कुंडली में बनता है। मांगलिक दोश

मांगलिक दोष मनुष्य तथा जातकों के जीवन में दापत्य जीवन को प्रभावित करता है। किसी जातकों की कुंण्डली में मंगल दोष होने के कारण ही व्यक्ति के विवाह में देरी अथवा अन्य प्रकार रूकावाटों का सामना करपा पडतां है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यदि किसी जातक की जन्म कुंडली में मंगल ग्रह प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, दवाद्श भाव में बैठा है तो यह स्थित किसी जातक कि कुंडली में मांगलिक दोष का निर्माण करती है। इसके प्रभाव को कम करने के लिए जातक को मंगल दोष के उपाया करने चाहिए।

मंगल कि विषेशताए

मंगल को भौम यानि भूमि का पुत्र भी कहा जाता है। मंगल ऊर्जावान् करवाई, आत्माविश्वास और अंहकार का प्रतिनिधित्व करतें है। मंगल युद्ध के देवता है और ब्रह्मचारी है। मंगल, लाल ग्रह के देवता है। मंगल कि चार भुजाएं है तथा शरीर के रोयें लाल रंग के हैं। मंगल के वस्त्रों का रंग भी लाल है।

ऋण से मुक्ति देने में मंगल बहुत ही महत्वपूर्ण है। इनका ऋणमोचक मंगल स्त्रोंत का पाठ हर तरह के ऋण/कर्ज से मुक्त देनेवाला है।

मंगल के मंत्र

ज्योतिष में मंगल ग्रह कि शांति तथा इसके अशुभ प्रभावों से बचने के लिए ज्योतिश शास्त्र में कई उपाय बतायें गयें। है जिनमें मंगल ग्रह का वैदिक मंत्र तांत्रिक मंत्र तथा बीज मंत्र प्रमुख है। तथा मंगल ग्रह की शान्ति के लिए जातक को मंगलवार का व्रत धारण करना चाहिए और हनुमान चालीसा का पाठ करें। इसके अलावा मंगल ग्रह से सम्बन्धित इन मंत्रों का जाप करें।

मंगल ग्रह का वैदिक मंत्र

ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथित्या अयम् । अपां रेतां सि जिन्वति।।

मंगल का तांत्रिका मंत्र

ॐ अं अंड्गारकाय नमः

मंगल ग्रह का बीज मंत्र

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

ज्योतिष में मंगल ग्रह कितना महत्वपूर्ण है यह आप सब समझ ही गये होंगे मंगल ग्रह हमारे जीवन पर तथा कुंडलीयों पर बहुत ही अशुभ प्रभाव डालतें है। इनसें बचने के लिए हम इन उपायों का प्रयोग भी कर सकतें हैं।

मंगल ग्रह के शुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव

शुभ मंगल जातक को साहसी व् न्यायप्रिय बनाता है। उच्च पदासीन होता है, सम्मानित प्रतिष्ठित होता है। नेतृत्व की क्षमता प्रदान करता हैं। बड़ा मकान सम्पत्ति दिलवाता हैं। ऐसा जातक मेहनती व पराक्रमी होता है। वैवाहिक जीवन सुखी रहता हैं। मंगल ग्रह के अशुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव अशुभ मंगल से दिन प्रतिदिन ऋण बढ़ता रहता है। भूमि संबंधी कार्यो में नुकसान की संभावना बनी रहती हैं

मकान बनाने में बिलम्ब होता है। तथा नयी-नयी परेशानियाँ आती रहतीं है। शरीर में व्यक्ति के कोई न कोई परेशानियाँ होती रहती हैं तथा व्यक्ति को रक्त संबंधली बिमारी होने की संभावना बनी रहती है। विवाह में विलम्ब होता है। जातक को चोट लगने या दुर्घटना होने का भय बना रहता है। जातक की सर्जरी संबधी दिक्कते भी हो सकती है।

ध्यान देने योग्य बाते :-

हमारे सौर मंडल में ग्रहों में मंगल की बात करें तो मंगल सूरज से 14.2 करोड़ मील की दूरी पर है तथा धरती सूरज से 9.3 करोड़ मील कि दूरी पर है मंगल ग्रह को मेष और वृश्चिक राशि का स्वाभित्व प्राप्त हैं। यह मकर राशि में उच्च होता है। जबकि कर्क इसकी नीच राशि हैं। वहीं नक्षत्रों में यह मृगशीरा, चित्रा और धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी होता है।

मंगल ग्रह कि शांति के उपाय–रत्न

यदि किसी कारणवश किसी जातक की कुंडली में मंगल ग्रह शुभ होकर इनके महत्व में कमजोर हो तो मुंगा रत्न धारण करना चाहिए। मूंगे के अभाव में लाल हकिक, लाल गोमेद का उपयोग किया जाता है कोई विद्वान ज्योतिषी की सलाह अवश्य लें। अन्यथा बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता हैं। यदि किसी जातक की जन्म कुंडली में मंगल दोश हो तो व्यक्ति यह उपाय अवश्य करें-

मंगलवार का व्रत रखें।

अगर संभव हो पाये तो हमेशा हनुमान जी की पूजा करें। मंगल स्त्रोत का हमेशा पाठ करें। सतनज्जा (सात अनाज) बंदरों को खिलाए। महामृत्युजय मंत्र का जप सभी ग्रहों की शांति के लिए उत्तम रहता है।

ज्योतिषी में बुध के बारे में सब कुछ ज्योतिष में बुध का महत्व

बुध ग्रह ज्योतिषशास्त्र में एक तटस्थ ग्रह माना जाता हैं बुध ग्रह का ज्योतिष में अपना ही आयाम है। बुध ग्रह को ज्योतिष शास्त्र में वाणी का कारक माना जाता है। ज्योतिष में बुध ग्रह, हमारी जन्म कुंडली में स्थित 12 भावों पर अलग-अलग तरह से प्रभाव डालता है ज्योतिष में बुध ग्रह को एक शुभाशुभ ग्रह माना जाता है जिस जातक के कुडली में बुध कमजोर होता है। वह अपनी बात करने में संकोच करतें है। इसके साथ ही वह जातक अपने वाणी पर नियंत्रण नहीं रख पाता अतः उनकी वाणी के कारण ही उनके अव्यधिक कार्य बिगड़ जाते हैं। बुध ग्रह पृथ्वी और शुक्र के विपरीत है, जिसका वातावरण स्थायी है बुध का वातावरण लगातार बदलता रहता है। बुध ग्रह को नक्षत्र मंडल का राजकुमार कहा जाता है।

वैसे तो बुध हमेशा मंगल करते हैं। लेकिन जब से सूर्य कि गति का उल्लंधन करतें है तब ऑधी चलने, पानी गिरने, और सूखा पड़ने जैसे अनिश्ट होने की आशंका बढ़ती है।

ज्योतिश में बुध की कुछ महत्वपूर्ण विषेशताए-

ज्योतिश में बुध का बड़ा महत्व है। इसे चतुर्थ भाव का कारक माना जाता है। इसका प्रभाव 32 से 35 वर्ष कि अवस्था में जातक के जीवन पर पड़ता है।

जतक के किसी भी राशि पर पहुचने के सात दिन पहलें से ही यह अपना फल देना आरम्भ करता है। यह समय-समय पर अस्त मार्गी तथा वक्री होता है।

सूर्य, शुक्र, राहु तथा केतु इसके नैसर्गिक मित्र है जबकि चन्द्रमा इसका शत्रु हैं मंगल, गुरू तथा शनि से यह समभाव रखता है यानी उदासीन रहता है।

ठसकि एक विशेशता यह भी है कि जब यह शुभ ग्रह से युक्त रहता है तो शुभ तथा पाप ग्रह से युक्त होतो अशुभ माना जाता है अकेले बुध की गणना शुभ ग्रह में होती है।

मनुष्य शरीर में कंघे से लेकर गदैन तक बुध का अधिकार रहता है।

बुध के मंत्र

ज्योतिश में वैसे तो बुध कए प्रकार का शुभ ग्रह ही माना जाता है। परन्तु बुध ग्रह कि शांति तथा किसी कारणवश इसके अशुभ प्रभावों से बचने के लिए ज्योतिश में कुछ उपाय दिये गये है जिनमें बुध के वैदिक मंत्र, तांत्रिक मंत्र तथा बीज मंत्र प्रमुख है।

बुध के वैदिक मंत्र

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वामिश्टापूर्ते सं सृजेथामयं च। आस्मिनत्ध्स्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत्।।

बुध के तांत्रिक मंत्र

ॐ बुं बुधाय नमः

बुध का बीज मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

ज्योतिश में बुध ग्रह कितना महत्वपूर्ण यह तो आप समझ ही गयें होगें अगर आप अपनी जन्म कुंडली में बुध ग्रह कि कृपा पाना चाहतें है तो आप बुध से संबंधिकत इन मंत्रों का जाप या उपाय कर सकतें है ऐसा करने से आपकों विविध क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेगे।

बुध ग्रह शुभ होने पर

जातक का बुध ग्रह शुभ होने पर बहन, मौसी और बुआ की स्थिति ठीक रहती है। सुंदर देह वाला ऐसा व्यकित ज्ञानी और चतुर होता है।

सोच समझकर बोलता है तथा उस व्यक्ति की बातों का असर होता है। वह व्यक्ति अगर इमानदारी छोड़ दे तो शुभ प्रभाव छोड़ देता है। तथा उसके सूँघने की शक्ति गजब की होती है। तथा उसके व्यापार और नौकरी में किसी भी प्रकार की अड़चन नही आती है।

बुध अशुभ होने पर

जिस जातक की सूँघने की शक्ति क्षिण हो जाती है। तथा उस व्यक्ति के समय से पूर्व ही दाँत खराब हो जाते है मित्रों से सम्बधों का बिगड़ना तुलतुलाना अशुभ हो ग्रह तो बहन, बुआ और मौसी पर विपत्ति बनी रहती है। केतु और मंगल के साथ मंदा फल। शत्रु ग्रहों से ग्रसित बुध का फल मंदा ही रहता है। विशेशता बुध ग्रह का प्रभाव व्यक्ति के नौकरी या व्यापार में नुकसान दे सकता है। तथा व्यक्ति के संभोग की शक्ति क्षिण कर देता है।

बुध ग्रह की शांन्ति के लिए हम आपको कुछ सरल उपाय बता रहें है।

अगर यदि किसी जातक की कुंडली पर बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव पड़ रहे हो तो इन सब अशुभ प्रभाव कि शांति कने लिए यह उपाय कर सकतें है।

बुध कि शांति के लिए अपने घर में तुलसी का पौधा अवश्य लगाना चाहिए तथा उसकी निरन्तर देखभाल करनी चाहिए। साथ ही बुधवार के दिन तुलसी के पौधों की पूजा करनी चाहिए।

बुध ग्रह की शांति के लिए हरा वस्त्र , हरी सब्जी, हरे मंग की दाज तथा हरे रंग की वस्तुओं का दान करना चाहिए। बुध शन्ति के लिए गाय को हरी घास खिलाना सर्वोत्तम होता है।

ग्यारह बुधवार, ब्रह्मण को दूध दान में देना तथा बुध स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

छोटी कन्या, बहन, बुआ आदि को सम्माान दे और उनकी सेवा तथा आदर करें , ऐसा करने से बुध दोश शान्त हो जातें है।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हर बुधवार भगवान गणेश को 21 दूर्वा चढ़ाएं।

बुध शांन्ति के लिए दुर्गा सप्मशती और विश्णु सहस्त्रनाम का पाठ करना चाहिए।

बुध ग्रह को मजबुत करने के लिए तथा धन प्राप्ति के लिए पन्ना रत्न युक्त बुध यन्त्र को धारण करना चाहिए।

ग्यारह एकादशी को व्रत और ग्यारह बुधवार व्रत एवं मुट्ठीभर खडी मूंग का भिखारियों को दान करना चाहिए।

ज्योतिष में बृहस्पति के बारे में सब कुद्द ज्योतिष में बृहस्पति का महत्व

बुध शांन्ति के लिए बुधवार को व्रत करना चाहिए।

वैदिक ज्योतिश में बृहस्पति ग्रह को गुरू कहा जाता है। यह धनु और मीन राशि का स्वामी होता है। और कर्क इसकी उच्च राशि है जबकि मकर इसकी नीच राशि मानी जाती है। ज्योतिश के अनुसार जिस व्यक्ति पर बृहस्पति ग्रह की कृपा बरसती हे। उस व्यक्ति के अंदर सात्विक गुणों का विकास होता हैं तथा बृहस्पपि ग्रह के प्रभाव से व्यक्ति सत्य के मार्ग पर चलता हैं। जिस जातक की जन्म कुंडली में बृहस्पति ग्रह मजबूत स्थिति में हो तो जातक के जीवन में हमेशा प्रगति होती हैं अतः यदि किसी जातक कि कुंडली में कोई भाव कमजोर हो और उस पर बृहस्पति अर्थात गुरू की दृश्टि पड़ जाए तो वह भाव मजबूत हो जाता है।

ज्योतिश शास्त्र में बृहस्पति ग्रह कि कुछ महत्वपूर्ण विषेशताएं

ज्योतिश शास्त्र के सभी ग्रहों में बृहस्पति ग्रह को सभी ग्रहो का स्वामी माना जाता है।

बृहस्पति सात प्रकार के गुणों से सम्पन्न है तथा यह ग्रह ज्ञान और शिक्षण का प्रतिनिधित्व करतें है।

हिन्दुओं के ज्योतिश शास्त्र के अनुसार बृहस्पति ग्रह देवताओं के गुरू माने जाते हैं। और बृहस्पति दानवों के गुरू शुक्राचार के कहर विरोधी है।

ये ग्रह बृहस्पति ग्रह होने काण बृहस्पति या गुरूवार के स्वामी माने जाते है।

बृहस्पति ग्रह को वैदिक ज्योतिश में आकाश का तत्व माना जाता है।

बृहस्पति ग्रह कि एक मुख्य विशेषता यह भी है कि यह पिछले जन्मों के कर्म, धर्म, दर्शन, ज्ञान और संतान से सम्बन्धित विशयों के संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है।

बृहस्पति के मंत्र

पैसे तो सभी ग्रहों में बृहस्पति को सभी ग्रहों का स्वामी माना जाता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में बृहस्पति ग्रह के अशुभ प्रभावों से बचने के लिए कुछ उपाय दिये गये है जिनमें से बृहस्पति ग्रह के अशुभ प्रभावों से बचने के लिए कुछ उपाय दिये गये हैं। जिनमें से बृहस्पति के वैदिक मंत्र, तांत्रिक मंत्र तथा बीज मंत्र प्रमुख है।

गुरू के वैदिक मंत्र

ॐ बृहस्पति अति यदर्यो अर्हाद दयुमदविभति क्रतुभज्जनेशु। यहीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम।।

गुरू का तांत्रिक मंत्र

ॐ बृं बृहस्पतयें नमः

बृहस्पति का बीत मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरू वे नमः

इस प्रकार आन समझ सकतें है कि खगोलीय और धार्मिक दृष्टि से ज्योतिष में बृहस्पति का कितना व्यापक महत्व है बृहस्पति ग्रह कभी-कभी हमारे कुंडलियों पर अशुभ प्रभाव डालतें है। उनसे बचने के लिए हम इन मंत्रों का उपयोग करके उपाय निकाल सकते है।

गुरू ग्रह के शुभ फल व कुण्डलियों पर प्रभाव

बृहस्पति ग्रह व्यक्ति को समाज में प्रतिशठा दिलाता है।

यह ग्रह किसी व्यक्ति या जातक की कुंडली में बैठा हो तो यह ऊँचे पद पर आसीन करवाता है।

यह ग्रह किसी जातक की कंण्डली में हो तो उन्हें उत्तम संतान दिलवाता है।

यह ग्रह सभी प्रकार के वाद विवाद में विजयी बनाता है।

यह ग्रह जातक के जीवन में सभी प्रकार के भौतिक (मकान, वाहन, संपत्ति) व आध्यात्मिक सुखों का कारक हैं।

गुरू ग्रह के अशुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव

यदि किसी जातक की कुंण्डली में पर प्रभाव यदि किसी जातक की कुंडली में बृहस्पति ग्रह का अशुभ प्रभाव हो तो उनके मान प्रतिश्ठा में कमी आ जाती हैं। ठसके अशुभ प्रभावों से सोना गुम या चोरी होने कि संभावना होती है। ठसके प्रभावों से चर्बी या मोटापा बढ़ता है।

बृहस्पति के अशुभ प्रभावों से जातक को हमेशा बच्चों कि चिन्ता लगी रहती है।

इनके अशुभ प्रभाव जातक के भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखों में कमी आने का कारण भी होते है।

इनके अशुभ प्रभाव से भी जातक को व्यर्थ के वाद-विवाद में पड़े हुए व्यक्ति हार जाते है।

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव पड़ने पर भी व्यक्ति अधिकतर समय में बिना कारण के भी चिंता करतें रहतें है।

बृहस्पति के शान्ति के उपाय-रत्न

यदि किसी कारवश किसी जातक कि कुंडली में गुरू शुभ होकर बलाबल द्ध महत्व और हीनताऋ में कमजोर हो तो पुखराज रत्न धारण करना चाहिए। यदि पुखराज न धारण कर पाये तो सुनौला का उपयोग किया जाता है। अतः हमें यह ध्यान देना होगा कि कोई भी रत्न धारण करने से पूर्व किसी योग्य तथा विद्वान ज्योतिश की सलाह अवश्य लें।

यदि किसी जातक कि जन्म कुण्डली में बृहस्पति गुह का गुरू मारक दोश होता यह उपाय अवश्य करे।

गुरूवार का व्रत रखे।

हमेशा बृहस्पति दे के मंत्र की एक माला का जाप अवश्य करें।

गुरूओं व गुरू के मान तुल्य सामान्य जन का भी सम्मान करें।

सात्विक भोजन ग्रहण करें।

ब्राह्मण को पीले वस्त्र दान करें।

जातक किसी योग्य गुरू से दीक्षा लेकर प्रज्ञावर्धन स्त्रोत का पाठ करे।

ज्योतिश में शुक्र के बारे में सब कुछ ज्योतिश में शुक्र ग्रह का महत्व

वैदिक ज्योतिशी में शुक्र ग्रह को एक शुभ ग्रह माना गया है। शुक्र वृशभ और तुला राशि का स्वामी होता है। और मीन इसकी उच्च राशि है जबकि कन्या इसकी नीच राशि कहलाती है। इसके प्रभाव से किसी व्यक्ति या जातक को भौतिक सुख, वैवाहिक सुख, भोग विलास, शौहरत कला, प्रतिभा, सौन्दर्य , रोमांस, काम वासना और फैशन-डिजाइननिंग आदि का कारक माना जाता है। शुक्र ग्रह के ग्रहो में बुध और शनि ग्रह शुक्र में मित्र ग्रह है तथा सूर्य और चन्द्रमा इसके शत्रु ग्रह माने जाते है। शुक्र का गोचर 23 दिन कि अवधि का होता है। अर्थात् शुक्र एक राशि में करीब 23 दिन तक रहता है। ज्योतिश में शुक्र को मुख्य रूप से पत्नी का कारक माना गया है।

शुक्र ग्रह की विशेषताएँ

ज्योतिश में शुक्र देव अथवा शुक्र ग्रह शुक्रवार के स्वामी शुक्र ग्रह जो भृगु और उशान के बेटे हैं।

शुक्र ग्रह दैत्यों के शिक्षक और असुरों के गुरू है जिन्हें ज्योतिश में शुक्र ग्रह के साथ पहचाना जाता है।

शुक्र द्वारा जो दिन निर्धारित किया गया है। वह शुक्रवार है तथा शुक्र ग्रह द्वारा नियंत्रित दिशा दक्षिण पूर्व (अग्नेय) है।

शुक्र ग्रह के एक राशि में रहने वाले दिनों की संख्या 23 से 30 के बीच का दिन होता है। तथा पुरे नक्षत्रों में रहने वाले दिनों की संख्या 11 महीने हैं।

शुक्र का प्रतीक रंग सफेद है तथा इस ग्रह के द्वारा शासित धातु चाँदी है शुक्र के लिए किमती रत्न हीरा है।

शुक्र ग्रह के मंत्र

वैसे तो शुक्र ग्रह को ज्योतिशी शास्त्र में शुभ ग्रह माना जाता है।

परन्तु किसी कारणवश जातक की कुंडली में शुक्र के शुभ प्रभाव न पड़कर अशुभ प्रभाव पड़तें है तो अनसे बचने के लिए कुछ उपाय दिए गये है जिनमें से शुक्र ग्रह के वैदिक मंत्र, तांत्रिक मंत्र , बीज मंत्र, प्रमुख है।

शुक्र कस वैदिक मंत्र

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मण व्यपिबत् क्षत्रं प्यः सोम प्रजापति। ऋतुन सत्यमिन्द्रिय विपांन शुक्रमन्धस इन्द्रस्योन्द्रियमिंद पयोडमृत मधु।।

शुक्र का तांत्रिक मंत्र

ॐ शुं शुक्रायं नमः

शुक्र का बीज मंत्र

ॐ द्रां द्री दौं सः शुक्राय नम

इस प्रकार आप समझ सकतें है कि शुक्र ग्रह का हमारे जीवन में तथा ज्योतिश के दृश्टिकोण से कितना महत्व है ज्योतिश के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि शुक्र ग्रह कभी-कभी जातक की कुण्डली में कभी शुभ तो कभी अशुभ प्रभाव डालता है अतः इनके अशुभ से बचने के लिए आन सभी इनसे जुड़ें मंत्र का जाप कर सकतें है। तथा अपनी कुण्डली में आयें परेशानियों से बच सकतें है।

शुक्र ग्रह के शुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव

यदि व्यक्ति कि जन्म कुण्डली में शुभ योगकारक होकर शुभ स्थिति हो तो किसी भी जातक या जातिका को कुशाग्र बुद्धि व आकर्शक व्यक्तित्व का स्वामी बनाता हैं तथा ऐसे जातक कुशाग्र स्वभाव वालें एक कुशल वक्ता होते है। शुक्र ग्रह की शुभ स्थिति मान-सम्मान में अजाफा करवाती है व ऐसे जातक सबसे अच्छे मित्र व्यापारी व साझेदार साबित होते है। ऐसे जातकों को अच्छा खान-पान, बड़ी गाड़ियाँ, नए आकर्शण स्थलों की सैर तथा मंहगें होटलों में रहना जीवनशौली शुक्र प्रभावित जातक के जीवन में हमेशा ही देखने को मिल जाता है ऐसे जातक नृत्य, कला के शौकिन कुशल अभिनेता व राजनीतिज्ञ होते हैं।

शुक्र ग्रह के अशुभ फल व कुण्डलियों पर प्रभाव

यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में शुक्र ग्रह के मारक अशुभ स्थिति में हो तो शुक्र कि महादशा में जातक व/जातिका को छोटी-छोटी जरूरतों के लिए बहुत खपना पड़ता है लव अफेयर में नाकामयाबी मिलती हैं। स्त्रियों से कश्ट प्राप्त होता है ऐसे जातक अधिकतर आकर्शक होने के बजाए आकर्शित होने लगतें है। बहुत अधिक इमोशनल होने लगतें है व सही गलत की सूझ बूझ खो देते है।

शुक्र शान्ति के उपाय - रत्न

यदि किसी जातक कि कुण्डली में शुक्र ग्रह शुभ स्थिति में होने के साथ-साथ यदि जातक की कुण्डली में कमजोर स्थिति में हो तो हीरा या जर्कन धारण किया जा सकता है। परन्तु इस बात का ध्यान हमेशा रखना चाहिए कि सभी उपायों को करने के पूर्व किसी योग्य ज्योतिशी की राय अवश्य ले लेनी चाहिए अन्यथा बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। जातक को। ''यदि किसी जातक की कुण्डली में शुक्र ग्रह अशुभ स्थिति में हो तो उन्हें शांत करने के लिए यह उपास जातक कर सकतें है।''

यदि किसी जातक की लग्न कुण्डली में शुक्र अशुभ हो तो शुक्रवार का व्रत जातक अवश्य रखें तथा हीरा, कर्जन, परफूम, नीले सफेद वस्त्र दान कर सकतें है। तथा काली चिटिंयों को चीनी खिलाएं, यदि किसी कन्या के विवाह में कन्यादान करने का अवसर मिले जातक को तो उन्हें अवश्य स्वीकार कर लेना चाहिए। स्त्रियों से संबंध मधुर बनायें रखें किसी भी स्त्री कि मुसीबत का कारण ना बनें। शुक्र के बीज मंत्र का नियम से उच्चारण स्वयं किया गया सभी जातकों के लिए हमेशा लाभकारी रहता

ज्योतिष में शनि के बारे में सब कुछ
ज्योतिष में शनि ग्रह का महत्व

वैदिक ज्योतिश में शनि ग्रह का बड़ा महत्व हैं। ज्योतिशीय भाश में इसे शनि कि ढैया कहतें है शनि की दशाा साढ़े सात वर्श की होती हैं। जिसे शनि की साढ़े साती कहा जाता है। लेकिन समाज में जितने भी व्यक्ति है उन सभी लोगों के मन में शनि को लेकर एक गलत धारणा बनी हुई है लोग शनि ग्रह के नाम से भयभीत हो जातें है। परन्तु ऐसा वास्वत में नहीं हैं शनि तीनों लोको का न्यायधिश है अतः यह व्यक्तियों को उनके कर्म के आधार पर फल देता है शनि ग्रह पुश्प, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी होता है। हिन्दु ज्योतिश में शनि ग्रह को आयु, रोग , पिड़ा, विज्ञान, तकनीकि, लोहा, खनिज तेल, कर्मचारी, सेवक, जेल, आदि का कारक माना जाता है। यह मकर और कुम्भ राशि का स्वामी होता है। तुला राशि शनि की उच्च राशि है जबकि मेश राशि इसकी नीच राशि मानी जाती है। शनि का गोचर एक राशि में ढाई वश तक रहता है।

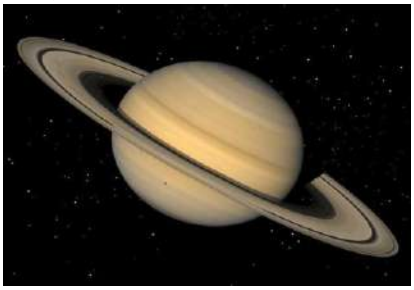

शनि ग्रह कि विशषताएँ

शनि ग्रह कि महत्वपूर्ण विशेषताओं में सबसे महत्वपूर्ण शनि शब्द कि व्युत्पत्ति ' शनय् क्रमति सः' से हुई है अर्थात् वह जो धीरे-धीरे चलता है।

शनि ग्रह को सूर्य की परिक्रमा करने में 30 वर्श लगतें है शनि ग्रह के लिए जो दिन निर्धारित किया जाता है वह शनिवार के स्वामी है। शनिदेव की जीवनसाथी का नाम नीलादेवी अथवा धामिनी है शनि की प्रकृति तमस है तथा शनिदेव अक्सर काले कौए पर सवार होते हैं। शनि की अन्य सात सवारियां गधा, कुत्ता, भैस, गिद्ध, हाथी, घोड़ा, हिरण भी है उनके हाथ में धनुश वाण और एक हाथ में वर मुद्रा है।

शनि ग्रह कठिन मार्गीय शिक्षण, करियर और दीर्घायु को दर्शाता है पुराणों तथा ज्योतिश अनुसार शनिदेव का शरीर इंद्रकांति की नीलमणी जैसा है।

शनि ग्रह के मंत्र

पैसे तो शनि ग्रह का ज्योतिश शास्त्र में बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जातकों कि कुण्डली पर लोग अक्सर शनि ग्रह अपनी राशि में सुनकर भयभित हो जाते है। अतः जातक को कभी-कभी अपने कर्मो के कारण भी शनि के अशुभ परिणामों से झेल जाना पड़ता है तो इनसे बचने के लिए कुछ उपाय दिये गये हैं इनमें शनि के वैदिक मंत्र, तांत्रिक मंत्र तथा बींज मंत्र, प्रमुख है।

शनि ग्रह के वैदिक मंत्र

शनि ग्रह के वैदिक मंत्र

ॐ शं नो देवीरभिश्य आपो भवन्तु पीतयें।
शं योरभि स्त्रतन्तु नः।।

शनि का तांत्रिक मंत्र

ॐ शं शनै श्चराय नमः ।।

शनि का बीज मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनै श्चराय नमः ।।

इस प्रकार आप समझ सकते है कि ज्योतिश में शनि ग्रह कितना भयपूर्ण स्थिति में है तथा यह ग्रह जातक के कर्म के अनुसार अपना प्रभाव सभी व्यक्तियों पर ड़ालता है। तथा यह किसी व्यक्ति पर कर्म के अनुसार शुभ प्रभाव डालता है तथा यह किसी पर अशुभ इन्ही अशुभ स्थितियों से बचने के लिए आप शनि ग्रह के कुछ उपाय तथा इनके सभी मंत्रों का जाप करके सुखी जीवन व्यतित कर सकते है।।

शनि ग्रह के शुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव

जतक कि लग्न कुण्डली यदि शनि शुभ स्थिति में है तो यह जातक को धर्मपरायण, न्यायप्रिय व धैर्यवान् व्यक्तित्व प्रदान करतें है तथा शुभ स्थिति वाले जातक समाज में उच्च प्रतिशठा प्राप्त करने में सहायक होते है। व बंजर भूमि से लाभ पहुचातें है और व्यक्ति को मकान, वाहन संपत्ति का सुख प्रदान करतें है यह माध्यात्मिक उन्नति के साथ- बुजुर्गो व प्रतिशिठत व्यक्तियों के स्नेह का पात्र बनातें है तथा शुभ स्थिति में उत्तम संतान का आर्शीवाद देतें है।

शनि ग्रह के अशुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव

यदि किसी जातक की लग्न कुण्डली में शनिदेव अशुभ स्थिति में हों तो मान प्रतिशठा में कमी आती है। यह ग्रह जातक के जीवन में भूमि में तथा कंस्ट्रक्शन संबंधी कार्यो में असफलता प्रदान करता हैं तथा मकान बाहन, संपत्ति के सुख में कमी आती है यह अध्यात्म अवनति के साथ-साथ बीमारियाँ लगती है, शुभ कार्यो में विलम्ब होता है। अशुभ प्रभाव कि स्थिति में व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार हो सकता है। वह बुरी संगतों में पड़ जाता है। और ऐसे जातक को हर समय कोई न कोई चिन्ता सताती रहती है जातक व्यर्थ के वाद-विवाद में उलझना पड़ता है। और हमेशा हार का मुँह देखना पड़ता है।

शनि शांति के उपाय-रत्न

किसी कारण वश यदि किसी जातक कि कुंडली में शनि शुभ होकर बलाबल ख्रप्रभावक्र में कमजोर होतो ऐसे व्यक्ति को नीलम रत्न धारण करना चाहिए। नीलम के अभाव में नीली का उपयोग किया जाता है। परन्तु यह ध्यान देना होगा कि जातक को कोई भी रत्न धारण करने से पूर्व किसी योगय विद्‌वान ज्योतिश की सलाह अवश्य लेना चाहिए।

''यदि किसी जातक की जन्म कुंडली में शनि देव गुरू मारक में हो तो यह उपाय जातक को अवश्य करना चाहिए।

नृत्य शनि देव के मंत्र की एक माजा अवश्य करें अतः यह उपाय जातक को संध्या काल में अवश्य करना चाहिए।

जातक को इसके प्रभाव से बचने के लिए शनिवार का व्रत अवश्य रखना चाहिए।

जातक को अपने तायाजी व अन्य बुजुर्गो का सम्मान करना चाहिए।

उनका आर्शीवाद लेना चाहिए। तथा सात्विक भोजन ग्रहण करें उड़द कि दाल दान करें , तथा किसी जरूरमंद बुजुर्गो को लाठी तथा छाता अवश्य दान में दें।

ज्योतिष में राहू के बारे में सब कुछ ज्योतिष में राहू का महत्व

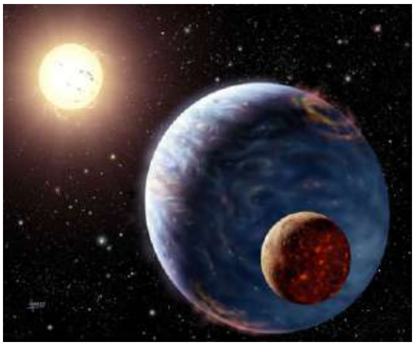

ज्योतिश में राहु ग्रह को एक पापी ग्रह माना जाता है। ज्योतिश शास्त्र में राहु को किसी भी राशि का स्वाभित्व प्राप्त नहीं है लेकिन मिथुन राशि में यह उच्च होता है और धनु राशि में यह नीच भाव में होता है। ज्योतिश में राहु ग्रह को एक छाया ग्रह कहा जाता हे। तथा 27 नक्षत्रों में राहु आद्रा, स्वाति और शतभिशा नक्षत्रों का स्वामी होता है वैदिक ज्योतिश में इन्हें कठोर वाणी, जुआ, यात्राएँ, चोरी, दुश्ट कर्म , त्वाचा के रोग, धार्मिक यात्राएँ आदि का कारक कहते है।

राहु की विशेषताएँ

राहु तमस असुर हैं।

ज्योतिश शास्त्र में राहु को अशुभ माना जाता है। ज्योतिश में राहु को राक्षसी सांप का मुखिया कहा जाता है।

इनकी विशेषता यह है कि हिन्दु शास्त्रों के अनुसार राहू सूर्य या चन्द्रमा को निगलते हुए ग्रहण को उत्पन्न करता है।

हमारे ज्योति में राहु ग्रह न होकर ग्रह की छाया है हमारी धरती की छाया या धरती पर पड़ने वाली छाया का हमारे जीवन में बहुत असर होता है। राहु का परिवर्तन और दुर्घटनाओं के कारक भी होते ह। तथा ऐसा जरूरी नहीं है कि सभी घटनाएँ अशुभ हो कुछ घटनाएँ शुभ भी होती है।

राहु के मंत्र

जयोतिशी में राहु को कुण्डली में एक अशुभ तथा भयावत्व स्थिति में देखा गया है। अतः हमारे जीवन में इनके अशुभ प्रभावों से बचने के लिए इनके कुछ मंत्रों के उपाय दिये गये है जिनमें इनके वैदिक मंत्र, तांत्रिक मंत्र, तथा बीज मंत्र प्रमुख है।

राहु के वैदिक मंत्र

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिश्ठया वृता।।

श्राहु के तांत्रिक मंत्र

ॐ रां राहवं नमः

राहु के बीज मंत्र

ॐ भ्रा भ्रीं भ्रौ सः राहवें नमः,

इस प्रकार आप समझ सकतें है कि राहु का हमारी कुण्डली पर कितना दोशपूर्ण असर पड़ता है। ज्योतिष के अनुसार यह ग्रह (राहु) जातक कि कुण्डली पर अशुभ प्रभाव ज्यादा मात्रा में डालतें है इन्हीं अशुभ प्रभावों से बचने के लिए आप सभी इन मंत्रों का जाप करके कुंडलीयों में अये अशुभ प्रभावों से बच सकतें है।

राहु ग्रह के शुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव

यदि किसी जातक कि कुण्डली में राहु ग्रह स्थिति सही स्थिति में हो तो राहु जातक को कुशाग्र बुद्धि प्रदान करता है साथ ही राहु जातक को मात्र भक्त, शत्रुओं का पूर्णतया नाश करने वाला बलिष्ठ, विवके, विद्वान ईश्वर के प्रति समर्पित समाज में प्रतिशिठत धनवान बनाता है। वह जातक को अचानक लाभ करवाता है। राहु जुआ, सट्टे व लाटरी से भी लाभन्वित करवाता है।

राहु ग्रह दुश्मन की नजर में आये उसे खत्म करने की पूरी योग्यता रखतें है।

राहु ग्रह के अशुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव

यदि किसी जातक कि कुंडली में राहु अशुभ स्थिति में है तो ऐसे जातक को मति भ्रम की स्थिति बनी रहती है ऐसे जातकों को वात रोग जैसे गैस, एसिडिटी, जोड़ो में दर्द और वात रोग से संबंधित सभी बिमारियॉं होने लगती है इनके अशुभ प्रभावों में यह जातक के प्रोफेशन में दिक्कत परेशानी आदि का सामना करतें रहतें है। इनकी कुण्डली में राहु होने के कारण इनका बुरी संगत व बुरें कर्मो के प्रति इनका झुकाव बना रहता ह। इन्हें पैसे की तंगी हमेशा रहती है उचित-अनुचित का मान नहीं रहता है। परिस्थितियों से जूझने की क्षमता पर राहु का प्रतिकूल असर पड़ता है।

राहु शांति के उपाय-रत्न

किसी जातक की लग्न कुंडली में अगर राहु शुभ स्थिति में हो और बलाबल में कमजोर हो तो राहु रत्न गौमेध धारण करना उचित रहता है गोमेद के उपरत्न तुरसा साफी है। अतः गोमेद के अभाव में उपरत्नों का उपयोग किया जा सकता है परन्तु हमें यह ध्यान देना होगा कि किसी भी रत्न को धारण करने से पूर्व किसी योग्य या विद्‌वान ज्योतिशी से जातक को अपनी कुण्डली का उचित निरिक्षण अवश्य करवा लेना चाहिए।

'' यदि किसी जातक की कुण्डली में राहु खराब स्थिति में हो तो उन्हें शान्त करने के लिए यह उपाय अवश्य करना चाहिए।

यदि किसी जातक की कुण्डली में राहु अच्छी स्थिति में ना हो तो ऐस व्यक्ति को शनिवार का व्रत रखना चाहिए। शनिवार को चीटियों को काले तिल खिलाने चाहिए तथा ऐसे व्यक्ति को ॐ रां राहवे नमः का नित्य 108 बार जाप राहु की सम्पूर्णमहादशा में करें तथा किसी जरूरतमंद को चाय पत्ती , जूते दान करें। यह सभी उपाय राहु कि सम्पूर्ण महादशा में करतें रहने से राहु के प्रकोप से आवश्य राहत मिलती है।

ज्योतिषी में केतु के बारे में सब कुछ ज्योतिषी में केतु का महत्व

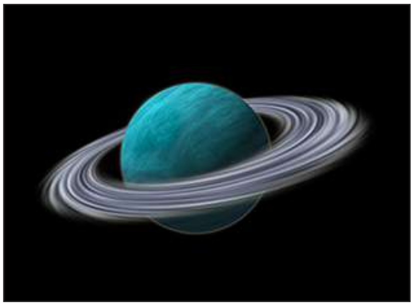

ज्योतिषी में केतु ग्रह को एक अशुभ ग्रह माना जाता है अतः शायद यही कारण है कि ज्योतिष में राहु को किसी भी राशि का स्वाभित्व प्राप्त नही है परन्तु देखा जाए तो धनु केतु की उच्च राशि है जबकि मिथुन में यह नीच भाव में होता है। वही रूद्राक्षों में केतु आश्विनी मघा और मूल नक्षत्र का स्वामी होता है। अतः केतु एक छाया ग्रह है। वैदिक शास्त्रों के अनुसार केतु ग्रह स्वरभानु राक्षस का जड़ है। जबकि इसके सिर के भाग को राहु कहतें है। राहु और केतु दोनों जन्म कुंडली में काल सर्प दोष का निर्माण करतें है। तथा राहु और केतु के कारण ही सूर्य और चन्द्रमा ग्रहण होता है। भारतीय ज्योतिषी के अनुसार केतु ग्रह व्यक्ति के जीवन क्षेत्र में तथा स्मस्त सृष्टि को प्रभावित करता है।

केतु की विशेषताएँ

केतु कुछ विशेष परिस्थितियों में किसी को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचने में मदद करता है।

केतु एक ऐसा ग्रह है। जिसका जबरदस्त प्रभाव पूरी सृष्टि पर और समस्त मानव जीवन पर पड़ता है।

केतु एक रूप में स्वरभानु नामक असुर के सिर का धड़ है। केतु अपने एक हाथ में गदा और दूसरें में वरमुद्रा धारण किए हुए है।

मानव शरीर में केतु अग्नि तत्व क प्रतिनिधित्व करता है।

केतु राक्षस सांप की पूंछ के रूप्में माना जाता है।

केतु को आम तौर पर एक छाया ग्रह के रूप तें जाना जाता है। केतु हमेशा गीद्ध पर समासीन होते है।

केतु प्रकृति में तमस है केतु की 2 भुजाएं है केतु सिर पर मुकुट और शरीर पर काले वस्त्र धारण किये हुये है।

केतु के मंत्र

ज्योतिशी में केतु को एक अशुभ ग्रह माना जाता है अतः ज्योतिशी का मानना है कि केतु हमारे कुण्डली में भी शुभ तथा अशुभ दोनो स्थिति में प्रभाव डालतें है तो अगर किसी कारणवश इनका अशुभ प्रभाव ज्यादा हो किसी जातक की कुण्डली में तो इनके अशुभ प्रभावों से बचने के लिए इनके कुछ उपास दिये गये है जिनमें इनके वैदिक मंत्र, तांत्रिक मंत्र तथा बीज मंत्र प्रमुख है।

केतु का वैदिक मंत्र

ॐ केतुं कृंवन्नकेतवे पेशों मर्या अपेशसे। सुमुशद्धिरजायशाः।।

केतु का तांत्रिक मंत्र

ॐ स्रां स्री स्रौं सः केतवें नमः

इस प्रकार आप समझ सकतें है कि केतु ग्रह का महत्व कितना व्यापक है ज्योतिश शास्त्र के अनुसार ऐसा कहा जाता है। कि किसी व्यक्ति की जन्म कुण्डली में स्थित 12 भाव उसके सम्पूर्ण जीवन को दर्शातें है अतः इन मंत्रों के जाप से हम केतु ग्रह के जीवन में आये अशुभ प्रभावों से हम बच सकते है।

केतु ग्रह के शुभ फल व कुण्डलियों पर प्रभाव

यदि किसी जातक की स्थिति में केतु शुभ स्थिति हो तो इनका प्रभाव भौतिक व अध्यात्मिक दोनो स्थिति में केतु अपना आर्शीवाद प्रदान करतें है। मेहनती बनातें है। व् लक्ष्य प्राप्ति में सहयह पराक्रम व अनुशासन प्रदान करतें है। इव ग्रह के शुभ स्थिति के कारण जातक समाज में उच्च पदासीन, एक प्रतिश्ठित, साफ सुथरी छवि का स्वामी, निडर प्रवृत्ति का, बुद्धिमान व शत्रु विजयी होता है। तथा केतु ग्रह के शुभ प्रभाव के कारण किसी भी जातक पर ब्लैक मैजिक (काला जादु) का भी असर नहीं हो पाता है।

केतु ग्रह के अशुभ फल व कुंडलियों पर प्रभाव

यदि किसी जातक कि कुंण्डली में केतु ग्रह अशुभ स्थिति में हो तो ऐसी स्थिति में जातक जल्दी धवराने वाला होता है। तथा अशुभ प्रभावों वाला जातक ब्लैक मैजिक (काला जादु) का शिकार आसानी से हो जाता है, यह सुस्त, काहिल हर काम को देर से करने वाला समाज में नकारा जाने वाला, बात-बात में चिढ़नें वाला साधारण फैसले लेने में भी धवराने वाला होता है। तथा पैरों में कोई समस्या पैदा होने की संभावना बनी रहती है।

केतु शांति के उपाय-रत्न

यदि किसी जातक की लग्न कुण्डली में केतु कि स्थिति शुभ हो और बलाबल में कमजोर हो तो केतु रत्न लहसुनिया धारण करना उचित रहता है। इसे वैदूर्य मणि, सूत्र मणि, केतु रत्न, कैट्स आई, विडालाक्ष के नाम से भी जाना जाता है।

लहसुनिया के उपरत्न का उपयोग भी किया जा सकता है। परन्तु हमें किसी योग्य व विद्वान ज्योतिशी की सलाह अवश्य ले लेनी चाहिए तथा उन्हें अपनी कुंडली दिखा लेने के बाद ही किसी भी रत्न को धारण करना चाहिएं।

''यदि किसी जातक कि कुंडली में केतु खराब स्थिति में हो तो उन्हें शांत करने के लिए यह उपाय अवश्य करें।''

किसी जातक की कुण्डली में केतु की स्थिति खराब हो तथा वह अशुभ नक्षत्र में बैठा हो तो ऐसे जातक को मंगलवार व्रत रखना चाहिए। तथा मंगलवार को चीटियों को तिल खिलाए, इसके अलावा ॐ कें केतवु नमः का नित्य 108 बार जाप करें, कान छिदवाएं, धी से चुपड़ी हुई रोटी कुत्ते को खिलाएं अतः ये सारे उपाय यदि जातक करतें है तो केतु की सम्पूर्ण महादशा में करतें रहनें से केतु के महाप्रकोप से जातक को अवश्य राहत मिलती है।

नवरात्री पूजन

इस साल अधिकमास लगने के कारण बहुत से ऐसे त्योहार है जो देरी से आऐगें। इस कारणवश इस वर्ष नवरात्रि का व्रत पितृपक्ष समाप्ति के अगले दिन नही बल्कि उससे एक महिने बाद शारदीय नवरात्रि शुरू होगें। जिसके कारण शारदीय नवरात्रि का व्रत 25 दिन के लिए आगे जा रहीं है। ज्योतिषाचार्य के॰ एम सिंहा के अनुसार चूँकि इस बार श्राद्ध खत्म होते ही अधिकमास लग जाएगा, इस कारण इसके बाद आने वाले त्यौहारों में देरी होगी।

आपको बता दें कि ऐसा कई दशकों बाद हो रहा हे। कि श्राद्ध से एक महिने बाद महिनें बाद नवरात्रि कि पूजा शुरू होगी। मान्यता के अनुसार अधिक मास में दान, पुण्य पूजा विशेष रूप से किए जातें है। अधिक मास में किए गये पुण्य कार्यो का खास महत्व होता है। इस साल दो अश्विन मास है ऐसा अधिकमास होने के कारण हो रहा है। इसलिए इस बार चतुर्मास जो हमेशा चार महिने का होता है, पाँच महिने का होगा।

कई दशकों बाद लीप इयर और अधिक मास एक साथ। कुछ जानकारों की जानकारियों के अनुसार करीब 160 साल बाद लीप वर्ष और अधिकमास दोनों ही एक साल में हो रहें है। अतः चतुर्मास लगने से विवाह, मुंडन, कर्ण छेदन जैसे मांगलिक कार्य होने के योग नहीं होगे। इस काल के दौरान पूजन, पाठ, व्रत, उपवास और साधना का विशेष महत्व होता है। इस काल के दौरान देव सो जातें है। देवउठनी एकादशी के बाद ही देव जागतें है। 17 अक्टूबर से शुरू होगें नवरात्र इस साल 17 सितम्बर 2020 को श्राद्ध खत्म होगें उसके अगले ही दिन से ही अधिकमास शुरू हो जायेगा जो 16 अक्टूबर तक चलेगा। इसके बाद से ही सभी जातकों द्वारा 17 अक्टूबर से नवरात्रि के व्रत रखें। जायेगे। इसके बाद 25 नवंबर को देवउठनी एकादशी होगा। जिसके साथ ही चतुर्मास समाप्त होगें तथा इसके बाद से सभी शुभ कार्य जैसे विवाह, मुंडन आदि शुरू होगें। विष्णु भगवान के निद्रा में जाने से इस काल को देवशयन काल माना गया है। एसी मान्यता है कि भगवान विष्णु चार माह के लिए सकारात्मक शक्तियों को बल पहुँचाने के लिए व्रत पूजन का भारतीय संस्कृति में अत्याधिक महत्व है। चतुर्मास के दौरा न भगवान विष्णु कि पुजा होती है। 19 साल बाद फिर बना ये योग ज्योतिषाचार्य के. एम. सिन्हा के अनुसार दो अश्विन मास वाला अधिकमास वर्ष 2001 मे अश्विन में अधिकमास में बना था इस वष 2020 में आश्विन मास अधिकमास होगा, इसलिए दो आश्विन रहेगें। अधिकमास 18 सितम्बर से शुरू होकर 16 अक्टूबर तक चलेगा। इसके कारण व्रत-पर्वो में 15 दिन का अंतर आ रहा है। यानी जनवरी से अगस्त तक आने वाले त्योहारे करीब 10 दिन पहले और सितंबर से दिसंबर तक होने वाले त्योंहार 10 से 15 दिन की देरी से आयेगें।

आइए हम इसकों एक चार्ट के माध्यम से त्योहारों में होने वाले अन्तर को देखते है:-

वर्ष 2019
12 सितंबर अनंत चतुर्दर्शी
14 सितंबर से 28 सितंबर श्राद्धपक्ष
29 सितंबर से नवरात्र
8 अक्टूबर दशहरा

27 अक्टूबर
8 नवंबर देवउठनी
वर्ष 2020
1 सितंबर अनंत चतुर्दर्शी
2 सितंबर से 17 सितंबर श्राद्ध पक्ष
17 अक्टूबर नवरात्र
25 अक्टूबर दशहरा
14 नवंबर
25 नवंबर, 2020 बुधवार

अधिकमास क्या है। अधिकमास का निर्माण कैसे होता है। आइए इसकों समझतें है:-
पंचाग के मुताबिक एक सूर्य वर्ष 365 दिन और करीब 6 घंटे का होता है। जबकि, एक चंद्र वर्ष 354 दिनों का माना जाता है। दोनों वर्षो के बीच लगभग 11 दिनों का अन्तर होता है। यहद अंतर हर तीन साल में लगभग एक माह के बराबर हो जाता है इसी अंतर को दूर करने के लिए तीन साल में एक चंद्र मास अतिरिक्त आता है। जिसें अतिरिक्त होने की वजह से अधिमास कहा जाता है।
ज्योतिशाचार्य के. एम. सिंहा के अनुसार इस बार कैसे भावपूर्ण करें पूजा मंत्रों के जाप से भी देवी होती है प्रसन्न।
शनिवार 17 अक्टूबर से नवरात्र का पर्व आरम्भ हो रहा है। कोरोना काल के इस दौर में हर तरफ लगभग लॉकडाउन देखने को मिला है। चैत नवरात्रि जोकि 25 मार्च 2020 को पुर लाकडाउन के दौरान परन्तु अत जो स्थिति है इसमें तो सभी लोग आसानी से आदि शक्ति की अराधना पूरे मन और हर्षोउल्लास के साथ कर सकतें है अब तो कोरोना के इस काल में भी सरकार ने काफी सारी छूट दे रखी है। हफतें के पूरे दिन सारी दुकानें लगभग खुली रह रहीं है। ऐसे में लगभग सभी लोग माता कि पुजा अराधना करने के लिए पूजा सामग्री की सारी सामाग्री आसानी से प्राप्त कर सकतें है। ''के. एम. सिंहा ने बताया की सनातन धर्म व ज्योतिश आदिकाल से ही देश-काल एमं परिस्थितियों कों महत्व देता आया है। हर पंचाग में इस बात को जिक्र किसी भी मुहूर्त को निकालने से पहले दिया होता हे। अतः इस महत्वपूर्ण तथ्य को ध्यान में रखतं हुए शनिवार से प्रारम्भ होने वाले आश्विन, शुक्ल प्रतिपदा नवरात्रों में आप अपने घरों में रहकर जो भी सामाग्री हो बाजार से आसानी से लेकर उसी से पूजन एवं हवन करें यहद यह सब सामाग्री किसी कारणवस नही उपलब्ध हो पाती है तो परेशान ना हो आपके घर में जो भी पूजा सामाग्री अपलब्ध हो उसी से पूजन करें। पान, फल, फूल, नैवेध आदि के लिए ज्यादा परेशान न हों। ईश्वर हमेशा भाव के प्रमी होतें है। वस्तुओं के नहीं यह बात हमेशा ध्यान में रखें। इस बात का स्पष्ठ उल्लेख हमारी पौराणिक पुस्तकों में मिलता है।

इन वस्तुओं को करें विकल्प के रुप में उपयोग :

ज्योतिषाचार्य के. एम. सिन्हा के अनुसार आदिशक्ति विशेष रूप से भाव की सेवा ग्रहण करती है। यदि माता के पूजन के लिए कोई भी सामाग्री उपलब्ध न हो तो सिर्फ देवी के मंत्रों का उच्चारण करके ही पूजन किया जा सकता है। देवी को प्रसन्न करने के लिए आत्मा संयम, सादा जीवन व ध्यान ज्यादा आवश्य है अपितु वस्तुओं के।

ऐसे करें पूजन

कोरोना काल के दौरान तथा आए दिन लॉकडाउन को देखते हुए, कलश स्थापना घर के एक शुद्ध पात्र में भी हो सकती है। उसके लिए बाजार से अगर मिट्टी के कलश मिल जातें है। तो और भी अच्छा रहेगा लेकिन अगर किसी कारणवश मिट्टी के कलश नहीं मिल पातें हे। तो परेशान होने कि जरूरत नहीं है, लाख चुन्नी के जगह लाल हल्दी का प्रयोग में ला सकतें है अगर यह भी न हो पाये तो हल्दी के थापे लगाकर भी पूजन कर सकतें है। हल्दी तो वैसे भी रोग नाशक होती है। तथा प्रसाद के रूप में तुलसी दल ग्रहण करना स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से काफी लाभप्रद है इसके अलावा शंख, घण्टे, ढोलक, मंजीर अपने घर में बजाकर भी आज देवी की अराधना कर सकतें है। साथ ही विषैले किटाणुओं को खत्म भी कर सकतें हे। इसके लिए मंदिन जातक एकत्र होने की आवश्यकता कतई नहीं हे। संभव हो तो अखंड जोत अवश्य जलाएं इससे वातावरण शुद्ध होता है। अजारी (हवन) का सामान घन में हो तो अवश्य करें न

भी न हो तो एक तोला शुद्ध देशी धी का दीपक जलाएं । यह वातावरण को शुद्ध कर ऑक्सीजन पैदा करता है।

घट स्थापना का महत्व

नवरात्रि में कलश या घट स्थापना का विशेष महत्व है। कलश स्थापना को घट स्थापना भी कहा जाता है। नवरात्रि की शुरूआत घट स्थापना के साथ ही होता हे। घट स्थापना शक्ति की देवी का आह्वान है मान्यता है कि गलत समय में घट स्थापना करने से देवी माँ क्रोधित हो सकती है। रात के समय और आमवस्या के दिन घट स्थापित करने की मनाही है विशेष रूप से घट स्थापना का सबसे शुभ समय प्रतिपदा का एक तिहाई भाग बीत जानें के बाद होता है। अगर किसी कारणवश आप शुभ मुहुर्त में कलश स्थापित न कर पाए तो अभिजीत मुहुर्त में भी कलश स्थापित कर सकतें है। यह अभिजित मुहुर्त में भी कलश स्थापित कर सकतें है। यह अभिजित मुहूर्त प्रत्येक दिन का आठवां मुहूर्त कहलाता है।

घट स्थापना की तिथि और शुभ मुहूर्त

घट स्थापना की तिथि : 17 अक्टूबर 20 दिन (शनिवार)

प्रतिपदा तिथि प्रारंभ : 17 अक्टूबर 20 को सुबल 01:00 बजें से

प्रतिपदा तिथि समाप्त : 17 अक्टूबर 2020 को रात 09:08 मिनट तक

घट स्थापना मुहूर्त : 17 अक्टूबर 2020 को सुबह 06:23 मिनट से सुबह 10:12 मिनट तक तथा अभिजीत मुहूर्त सुबह 11:43 बजे से दोपहर 12:29 मिनट तक।

कुल अवधि : 46 मिनट।

कलश स्थापना की सामाग्री

जैसे कि आप सब जानतें है कि मां दुर्गा को लाल रंग खास पसंद है। इसलिए लाल रंग का ही माता का आसन बनाए। इसके अलावा कलश स्थापना के लिए मिट्टी कर पात्र , जौ, मिट्टी जल से भरा हुआ कलश मौली, इलायची, लौंग, कपूर, रोली, सातुन, चावल, सिक्के, अशोक या आम के पाँच पत्ते, नारियल, चुनरी, सिंदूर, फल-फूलों की माला श्रृंगार पिटारी भी चाहिए।

कलश स्थापना कैसे करें:

नवरात्रि के पहले दिन यानि कि प्रतिपदा को सुबल स्नान कर लें। मंदिर की साफ-सफाई करने के बाद सबसे पहले गणेश जी का नाम ले और फिर माँ दूर्गा के नाम से अखंड ज्योत जलाएं । कलश स्थापना के लिए मिट्टी के पात्र में मिट्टी डालकर उसमें जौ के बीज बोए।

अब एक ताम्बें के लोटे पर रोली से स्वास्तिक बनाएं। लोटे के ऊपरी हिस्से में मौली बोंधे। अब उस लोटे में पानी भरकर उसमें कुछ बूदें गंगाजल की मिलाएं। फिर उसमें सवा रूपया, दूबा सुपारी, इत्र और अक्षत डाले। इसके बाद कलश में अशोक या आम के पाँच पत्ते लगाएं। अब एक नारियल को लाल कपड़े से लपेटकर उसे मौली से बांध ले फिर नारियल को कलश के उपर रख दें। अब इस कलश को मिट्टी के उस पात्र के ठीक बीचों–बीच रख दे जिसमें आपने जौ बोएं है। कलश स्थापना के साथ ही नवरात्रि के नौ व्रत रखने का संकल्प लिया जाता है। आप चाहें तो कलश स्थापना के साथ ही माता के नाम की अखंड ज्योति भी जला सकतें है।

नवरात्रि में कन्या पूजन कैसे करे।

जिस तरह से नवरात्रि का पर्व हम हर साल मनातें है। उसी तरह हम इस बार भी नवरात्रि का पर्व पूरी श्रद्धा से मनायेगें जिस तरह नवरात्रि के नौ दिनों में देवी के नौ अलग अलग रूपों की पूजा की जाती है। ठीक उसी प्रकार नवरात्रि के सप्तमी तिथि से कन्या पुजन भी शुरू हो जाते है। नवरात्रि के इस पूरे व्रत करने के दौरान सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण नवरात्रि में कन्या पूजन का विशेष महत्व होता है। अतः इस कन्या पूजन के बिना नवरात्रि का पूरा फल प्राप्त नहीं होता है। तथा माता का आर्शीवाद भी अधुरा रह जाता है और किसी प्रकार की मनोकामनाएं भी नहीं पूरी हो पाती। अष्टमी और नवमी के दिन कन्याओं की नौ देवी का रुप मानकर घर में इनकी विधि विधान से पूजा करके अपने व्रत को पूर्ण रूप से पूरा करना चाहिए।

कन्या पूजन कि विधि:

कन्या पूजन और भोज के लिए सबसे पहले 9 कन्याओं को निमंन्त्रण दिया जाना चाहिए।

कन्या पूजन शुरू करने के सबसे पहले 9 कन्याओं के पैरों को बारी-बारी से दूध और पानी से भरे थाली में उनके पैरों को धोकर उनके पैरों को सूखे कपड़े से पोंछ कर उनके पैरों में आलता लगाकर कुमकुम, फूल और अक्षत से उनकी सच्चे मन से पूजा करके उनका आर्शीवाद लेना चाहिए। इसके बाद सारी कन्याओं के माथे पर अक्षत ओर कुमकुम का टिका लगाना चाहिए।

फिर उसके बाद माता दुर्गा का ध्यान करते हुए सभी कन्याओं को भोजन करवायें और दक्षिणा देकर उन्हें विदा करें इसके अलावा 9 कन्याओं के साथ एक बालक भी होना चाहिए क्योकि बालक को हनुमानजी का रूप माना जाता है।

श्राद्ध में करें पितृ दोष का निवारण

पित्र पक्ष 2020 श्राद्ध पक्ष इस बार 2 सितंबर से शुरू हो रहा है। तो इस दौरान पितृ पक्ष के 16 दिनों में श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान आदि इस प्रकार के पुण्य काम करके पित्तरों को प्रसन्न किया जाता है। इस बार प्रतिपदा का पहला पितृ श्राद्ध 1 सितम्बर को होगा और इस साल पितृपक्ष का समापन 17 सितंबर को होगा और अंतिक श्राद्ध यानी अमावस्या श्राद्ध 17 सितंबर को किया जायेगा। अतः हमारी भारतीय संस्कृति में पितृ पक्ष में दान का भी बहुत महत्व होता है। मान्यता है कि दान से पितरों की आत्मा को संतुष्टि मिलती है। और पितृ दोष भी खत्म होता है। धर्म ग्रन्थों में श्राद्ध में दान की गई वस्तु से मिलने वाले फलों के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया है।

मकर राशि इन सभी 12 राशियों में 10वीं राशि है तथा इस राशि का स्वामी शनि होता है। काल पुरूष के चक्र के अनुसार यह राशि पैर में जंघा को सूचित करती है मकर राशि में गुरू नीच होता है। अर्थात् वह यहां पर अपना सबसे निम्न

फल देता है और जिन लोगों के नाम का पहला अक्षर भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी है वे मकर राशि जातक होते है।

नक्षत्र

मकर राशि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के 2 से 4 चरण , अभिजीत नक्षत्र का चौथा चरण, श्रवण नक्षत्र के 1 से 4 चरण एवं धनिष्ठा नक्षत्र के पहले दो चरण मिलकर मकर राशि बनती है। नक्षत्रों के कुल 13 चरण मकर राशि में समाविष्ट होतें है इस राशि का विस्तार 270 अंश से 300 अंश तक फैला हुआ है।

मकर राशि के लक्षण एवं गुण

भौतिक लक्षण : मकर राशि के भौतिक लक्षणों में व्यक्ति का शरीर दुबला-पतला, उम्र के साथ स्वास्थ्य का सुधरना, बड़े दॉत, बड़ा मुख, नाक विशिष्ट रहतें है।, बाल कालें और मोटे होते है, चेहरा पतला और अंडाकार , कुबड़ी कमर, घुटनों पर मस्सा या निशान, मगरमच्छ के समान जबड़े लघु मस्तक तथा दाढ़ी में बाल कम होते हैं।

अन्य गुण :

उत्तम विवेक शक्ति, सत्ताप्रेमी, मितव्ययी , विचारशील , आत्मनिर्भर, बुद्धिजीवी । मकर राशि के लोग किसी भी कार्य में सफलता न मिलने तक निराश ही रहतें है। ईमानदार और निष्कपट होते है। शक्ति के आगे अडिग रहतें है। तथा मकर राशि वाले लोग कठिनाई में भी किसी से सहायता के लिए नहीं कहते, वाकशक्ति में बाधाएं रहती है। ऐसे जातक तकनीकि ओर वित्तीय कार्यो में सफल होते है पर पुराने मित्रों से अच्छे संबंध होते है प्रेम प्रसंगों में रूचि कम होती है तथा ऐसे व्यक्ति स्वयं से वरिष्ठ आयु के विपरीत लिंग व्यक्तियों से संबंध स्थापित करतें है।

संभाव्य रोग :

घुटनों में चोट, त्वाचा रोग, खरोंच, हड्डी टूटना, गठिया, पित्ती आदि। तथा मकर राशि वालो जातक अगर बाल्यावस्था में हो तो अग्नि, हथियार या लोहे से चोट लगने की आशंका रहती है।

मकर राशि के जातको का 33 से 49 वर्ष की आयु में जीवन आनन्दमय रहता हैं। 50 या51 वर्ष में स्वास्थ्य कष्टदायी होता है।

अशुभ वर्ष : 5,13,27,36,57,62, और 67 जलीय स्थान, बहुत मात्रा में पानी वाले स्थान, नदी के किनारे, पृष्ठोदय राशि, स्त्री राशि , नीचले अंगों में कमजोरी बलवान होतें है।चन्द्र के अंश नक्षत्र चरण नामाक्षर राशि स्वामी नक्षात्र स्वामीयोनी नाड़ीगण00:00 से 10:20उत्तराषाढ़ 2,3,,4भाेज, जीशनिश्रविनकुल अंत्यमनुष्य 10:00 से 23:20श्रवण 1,2,3,4खी,खू, खो, खोशनिचन्द्रवानर अंत्यदेव23:20 से 30:30धनिष्ठा 1,2गा, गीशनिमंगलथ्संह मध्य रांक्षसनिम्न कोष्टक में चन्द्र के अंश, नक्षत्र, चरण, राशि स्वामी, योनी, नाड़ी, गण एवं नामाक्षर विषय की जानकारी दी गइ इस राशि की आकृति 'ग्रह' मगर जैसी होती है। पृथ्वी पर के क्रान्ति अंशों पर आधारित विषुववृत रेखा से 24 से 20 अंशों तक इस राशि की व्याप्ति रहती है।

जो व्यक्ति ज्योतिष का ज्ञान रखतें है। उनकी सुविधा के यह तालिका प्रस्तुत की गई है जिससे आपको यह पता चल सके की किस नक्षत्र में वर्णमाला के कौन से अक्षर आतें हैं क्योकि बहुत से ऐसे व्यक्ति है जो इन नक्षत्रों के चरणअक्षरों के आधार पर बच्चों का नाम रखतें है अतः हर नक्षत्र को चार वर्ण मिले है। इस तरह राशि में 9 नक्षत्र चरण होते है। वैसे तो 27 नक्षत्र होते है लेकिन यहाँ अभिजीत नक्षत्र को भी लिया गया है।

उत्तराषढ़ा नक्षत्र के जातको के लक्षण:

यदि किसी जातक का जन्पम उत्तराषढ़ा नक्षत्र में हुआ है तो ऐसे में जन्में जातक बोलने में लड़खड़ाते हैं, यह अनेक भाषाओं के जानकार, सर्वाजनिक कामों में रूचि रखने वाले अल्पायुषी, स्वाभीमानी, कपड़े-लत्तें के बारे में विशेष सतर्क, सर्वाजप्रिय , दयालु होते है। नौकरी व्यवसाय में ऐसे जातक को घाटा सहन करना पड़ता हे। ऐसे जातक वकिल, जज, अध्यापक, कलेक्टर, कमिश्नर, ज्योतिषी की हैसियत को बहुत ही अच्छे से जानते है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की महिलाओं के लक्षण :

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मी महिलाएं बहुत ही मिठा बोलने वाली, भाव-भगत में तत्पर तथा पति की आज्ञा का पालन करने वाली, बुद्धिचातुर्य से जीवन में यश प्राप्त करने वाली तथा पुत्र का सुख भोगने वाली होती है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की व्याधियाँ एवं उनसे मुक्ति के उपाय :

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाले स्त्री तथा पुरूष अधिकतर नेत्ररोग, कटिपीड़ा, दाह एवं मानसिक रोगों से त्रस्त रहतें है तथा इन व्याधियों के शर्मनार्थ नित्य विश्वदेव पूजन करें। तथा इन मंत्रों का जाप दस हजार बार करें एवं दशांश हवन भी करें।

'' ॐ विश्वेदेवा श्रृणुतेन गूं हवं में ये अंतरिक्षेय य उपधविष्ठाय। अग्निजिव्हा तवाषजत्रा आयघास्मिन्वाहर्षि मादयधम्।।
ॐ विश्वेभ्यों देवेभ्यों नमः।।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चरणों का फलित :

प्रथम चरण : उत्तरराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्में जातक उदार मन के , गौरवपूर्ण के सुन्दर, अच्छे शरीर वाले सौष्ठव से युक्त, अच्छी सूझ-बूझ के धनी, दानवीर एवं कारीगरी में कुशल एवं सफल होते है।

द्वितीय चरण : उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्में जातक सभाषण चतुर, सुन्दर, गठीले, स्वभाव से कठोर, कंजूस, अनायास शत्रुओं से घिरे होते है।

तृतीय चरण : उत्तराषाढ़ा नक्षत्र कि तृतीय चरण में जन्में जातक असफल, अभिमानी, जिद्दी, गंभीर वाणीयुक्त एवं मोटे होते है।

चतुर्थ चरण : उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्में जातक जीवन में शक्ति से भरपुर, सदैव अद्भूत कार्य करने में लगे रहने वालें, व्यापार में सफलता प्राप्त करने वाले होते है।

नक्षत्रग्रहताराणमधिणी विहवभावनः। तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमों स्तुते।।

श्रवण नक्षत्र में जन्में जातकों के लक्षण :

इस नक्षत्र में जन्में जातक गोले चेहरे एवं गोरे रंग के होते है। तथा ऐसे जातक के उम्र का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है इस नक्षत्र के जातक सभी प्रकार के ज्ञान जिज्ञासु से पंडित तथा अनेक प्रकार के व्यवसाय में रत होता है। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव 30 वर्ष की आयु तक ज्यादा रहतें है 46 वर्ष में सुदृढ़ स्थिति होती है। 65 वर्ष में ल्यव-सायिक उन्नति चरम सीमा पर होती है इनका दाम्पत्य जीवन सुखद, शांत और हर्षित होता है। पत्नी आज्ञाकरी, भक्त, गणों से भरपूर होती है।

श्रवण नक्षत्र में जन्मी महिलाओं के लक्षण

इस नक्षत्र में जन्मी महिलायें परिवार में प्रशांसित, सभी मामलों में परिपक्त होती हे। इनके दाम्पत्य जीवन में कलह और विरोधाभास रहता है ऐसी महिलाओ की पति से मांगें बहुत अधिक रहती है।

जिन्हें वह परिस्थितिवश पूरी नहीं कर पाता है। तथा इस नक्षत्र वाली स्त्री जातक लम्बी, पतली-दुबली, लम्बा मुखड़ा, ऊपर के लम्बे छिदे दाँत व आकर्षक सुन्दर होती है।

श्रवण नक्षत्र कि व्याधियां एवं व्याधि मुक्ति के उपाय :

इस नक्षत्र में जन्मे स्त्री या पुरूष, चर्मरोग, कुष्ठ पित्त साध दुःखी विक्षिप्तता, क्षय, प्लूरेसी, वायुगुल्म आदि रोगा से क्लेश होते है। ऐसे व्यक्तियों को अपने दैनिक जीवन में काफी संघर्ष करके आगे बढ़ना पड़ता है तथा इन्हें नौकरी और व्यवसाय में पेरशानियाँ होती है। तथा ऐसी व्याधियों से मुक्त होने के लिए जातक को 'ॐ नमों भगवते वायुदेवाय' का जाप स्फटिक की माला पर प्रतिदिन 108 बार जाप करना चाहिए।

श्रवण नक्षत्रों में आपने सभी जातकों के लक्षण क्या होगें उनके उपय क्या होगें यह सब तो आपने समझ ही लिया होगा, आइए अब इनके चरणों के बारें में जान लेते है यह चरण अपने प्रभाव से किस जातक को क्या फल देगें इसकों भी जान लेते है इसके चारों चरणों के बारे में हम थोड़ा समझतें है।

प्रथम चरण :

श्रवण नक्षत्रों के पहले चरणों में जन्मे जातक , कद में पूरे लम्बे, स्वाभिमानी तथा अपनी बात पर हर परिस्थिति में अडे रहने वाले, उदास रहने वाले, हर कार्यो को सोच समझकर करने वाले, फिर भी उपयश (कलंक,बदनामी) पाने वाले होते है।

द्वितीय चरण :

श्रवण नक्षत्रों के द्वितीय चरण में जन्में जातक बहुत ही कंजूस होते है। तथा ऐसे जातक किसी के काम न आने वाले, स्वार्थी विशेष कामातुर रहते है।

तृतीय चरण :

श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्में जातक कई प्रकार के अलग-अलग रोगों से ग्रसित होते है। ऐसे व्यक्ति धन से संपन्न होते है। तथा बहुत ही खर्चीले भी होतें है यह यातो वैध, हकिम या डॉक्टर होते है।

चतुर्थ चरण :

श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्में जातक , चरित्रहिन होते है। तथा धर्मात्मा भी होते है। धार्मिक कार्यो को बढ़-चढ़ कर करने वाले होते है। तथा ऐसे लोग कृषिकार्य में (दक्ष) जानकार होते है।

धनिष्ठा नक्षत्र के जातकों के लक्षण

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक सर्वगुण सम्पन्नत्र मान-सम्मान से परिपूर्ण, नरमादिल के तथा से लोग दानि स्वभाव के होते है ओर ऐसे व्यक्ति , जिद्दी, गुस्सैल, ज्ञानी होते है ऐसे जातक इतिहास और विज्ञान से परिपूर्ण होते है तथा इनको पूर्वजों से धन मिलते रहतें है, यह बुद्धि के बहुत धनी होते है। तथा इन्हें कई क्षेत्रों में सफलता मिलती रहती हे।

धनिष्ठा नक्षत्र की महिलाएं :

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वाली महिलाएं आर्थिक दृष्टि से कुमकुवक होती है एसी महिलाओं को आभूषणों का शौक बहुत ज्यादा रहता है अपने हाव भाव से दूसरो को सहज आकृष्ट कर सकती है धर्म में श्रद्धा रखने वाली होती है। लेखन कला में रूचि और गती रहती है इनके कन्या संतति अधिक होती है।

धनिष्ठा नक्षत्र की व्याधियां एवं उनसे मुक्ति के उपाय:

धनिष्ठा नक्षत्रों में जन्में स्त्री-पुरूषों को अध्ययन में, नौकरी में, व्यवसाय में अंतत अड़चनो का मुकाबला करना होता है।, पैरों में फैक्चर होना, रक्तचाप, अचानक हृदय गति से अवरोध उत्पन्न होना अतः ऐसी व्याधियों से भी क्लेश करना होता है। ऐस परेशानियों को दूर करने के लिए भगवान विष्णु की उपासना करें तथा निम्न मंत्रों का जाप 108 बार करें मंत्र जाप होने पर घड़ा भर पानी अपने मकान के बाहर दक्षिण दिशा में डाले।

ॐ वसूनांच कृषश्यक्षन्धिया वा यज्ञेर्वारों स्यों अर्वन्तोवायेरत्रिमतरः। सातों वनुंवाये सुश्रुतोधः ॐ वसुभ्यों नमः ।।

धनिष्ठा नक्षत्र के चरणों का फलित :

धनिष्ठा नक्षत्र में किस चरण में कौन व्यक्ति जन्में तथा उन चरणों के प्रभाव से हमारे जीवन में किस प्रकार के शुभ अथवा अशुभ फल मिलें आइए हम इसके चारों चरणों को जान लेतें है। यह किस प्रकार से आपके जीवन को फलित बनातें है। इसकों देखतें है।

प्रथाम चरण :

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्में प्रथम चरण के व्यक्ति के जातको का जीवन सिद्धान्त नहीं होता । इनके जीवन में किसी तरह के नियम का कोई महत्व नहीं हाता, शरीर इनका मजबूत व पूर्ण विकसित रहता है।

द्वितीय चरणः

धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितयी चरण में जनमें जातक का स्वभाव उत्पन्त ही दुष्ट होता है। तथा ऐसे जातक दूसरों को ठगने , धोखा देने वाले, दीनहीन एवं चित्रकला में रूचि रखने वाले होतें है।

तृतीय चरण :

धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्में जातक कृशकाय, सुन्दर एवं सम्मानित होते है।

चतुर्थ चरण :

धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ में जन्में जातक पूर्ण रूप से संपन्न किन्तु क्रूर, दुष्ट झगडालू तथा व्यर्थ का अभिमान करने वाला व्यक्ति एवं यह व्यक्ति ठग भी होते है।

मकर राशि के व्यक्तियों का भविष्य :

मकर राशि के व्यक्ति ऊँची शरीरयष्टी, गौरवपूर्ण, सुन्दर नेत्र के होते है तथा यह माननशील, गंभीर, सेवाभावी, आध्यात्मिक, धैयवान, त्यागी गृहस्थी में असंतुष्ट, दूसरों की निन्दा करने वाले, स्त्रियों से लभान्वित चोर, छोटी-मोटी नौकरी या व्यापार करने वाले व्यक्ति मकर राशि के होते है। शिक्षा में कम, स्वभाव से क्रोधी, फिर भी विनोदी पिता से कम लाभन्वित संगीत प्रेमी, तथा स्त्री से शारिरीक संबंध रखने वाले होते ह। मकर राशि की महिलाए बड़े चेहरे कि एवं छोटी नाकवाली होती इनके कन्या संतति अधिक रहती है तथा ऐसे व्यक्ति चंचल और डरपोक भी होते है।

मकर राशि का अनुभव सिद्ध फलित :

मकर राशि के जातक अगर देखा जाए तो यातो धनवान होते है। या फिर ऐसे-वैसे जीते है। ऐस व्यक्ति के जातकों का स्वभाव झगड़ालू होता है। ये लोग आलसी भी होते है यह लोग लोभी वृति के कारण अच्छे मौके का फायदा नहीं उठा पातें है मकर राशि वाले व्यक्ति को छोटा-मोटा व्यापार या छोटी-मोटी नौकरी ही इनके नसीब में होती है इन्हें काला या फीका रंग बहुत ही भाता है इन्हें पुत्र का सुख प्राप्त होता है किन्तु कन्या संतति अधिक रहती है।

मकर राशि के व्यक्ति कागज, कपड़ा, लेखन, भाषण, पुस्तक, प्रकाशन या पुस्तकों की बिक्री, जज, क्लर्क, रेल, फायर बिग्रेड, पेट्रोल पंप, फैक्टरी, ट्रक, ड्राईवर, आटे की चक्की, खेती आदि क्षेत्र में मकर व्यक्ति आगे रहते है राज कारण में ऐसे व्यक्ति सरपंच या विधायक बन सकतें है।

प्रतिकूलः

1 हर वर्ष का जुलाई महीना

2 हर महीने की 9, 12, 22, 30 ये तारिखे।

कौन से ग्रह से कौन से रोग उत्पन्न होते है।

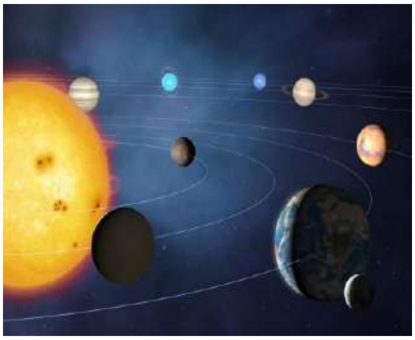

सूर्य (Sun)

यदि किसी जातक कि कुण्डली में सूर्य एक पापी ग्रह के रूप में हो तथा किसी कारणवश इसका अशुभ प्रभाव जातक कि कुण्डली पर पड़ता हो ऐसी स्थिति में हम जातक के रक्त के प्रभाव को जाँच सकते है, उसके पित्त को हम जाँचते है किसी जातक के सिर में दर्द रहता है उसको हम परखते है तथा हम उसकी मानसिक और आर्थिक गतिविधियों को देखते है अगर इस स्थिति में कोई जातक मजबूत है तो ऐसे जातको का सूर्य बहुत अच्छा होता है क्योंकि सूर्य जो है वह प्रथम कारक का ग्रह भी माना जाता है । इसी तरह से अगर किसी व्यक्ति के मन में व्याकुलता पायी जाती है, तथा घबराहट होती है । तो इसको भी हम ज्योतिष में सूर्य से ही देखते है। तथा पेट की भी जितनी भी परेशानियाँ होती है। वह सब सूर्य से होती है क्योंकि सूर्य एक गर्म ग्रह है जो कही न कही हड्डियों के दर्द से भी जुड़े हुए होते है । अग आप 27 नक्षत्रों को देखते है तो हर नक्षत्र का एक स्वामी होता है तो सूर्य उसमें जिसका स्वामी बनता है, तो वह भी किसी न किसी तरीके से महारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचातें है । सूर्य एक राणा ग्रह होता है ।

चन्द्रमा (Moon)

चन्द्रमा कि यदि हम बात करें तो यह इतना तेज गति से चलने वाला ग्रह होता है, अतः चन्द्रमा जो होता है वह 30° पार करने के लिए सवा 2 दिन का टाइम लेता है अतः जब चन्द्रमा को 12 राशियों को पार करना हो तो 12 में 2.25 से हम गुणा करके देखे तो लगभग 29 या 30 दिन आ जाते है, अर्थात् इसी के कारण हम कहते है कि एक महिन में 30 दिन होते है ।

इसके विपरित अगर हम सूर्य कि बात करते है तो सूर्य 1 दिन में 1° पार कर जाते है इसका मतबल एक राशि को 30° है। उसको धीरे-धीरे करके एक राशि को वह 30 दिन से पार करेगा । और जब सूर्य एक राशि से दूसरे राशि में परिवर्तन करता है तो उसे हम संक्रान्ति कहते है जिसमें हम मुख्य रूप से 'मकर संक्रान्ति' का नाम सुनते है । इसी तरह जब कभी भी सूर्य अलग-अलग राशियों से प्रवेश करते है तो उन्हे उनके नाम कि संक्रांति से दर्शातें है जैसे - सूर्य आदि मेष राशि में गया तो मेष संक्रांन्ति, वृष में गया तो वृष संक्रान्ति में करके हम ग्रहों की गति से पता लगाते है । चन्द्रमा बहुत तेज गति वाला ग्रह होता है जैसे हमारा मन बहुत ही तेज गति चलता है वैसे ही चन्द्रमा होता है अर्थात् चन्द्रमा को हम एक तरह से मन का कारक भी कहते है अगर किसी जातक कि कुण्डली में चन्द्रमा पर राहु की दृष्टि हो जाये चन्द्रमा पर राहु कि दृष्टि हो जाये या शनि कि दृष्टि हो जाये तथा किसी भी तरह से इनकी दृष्टि चन्द्रमा पर पड़ती है या इनकी दृष्टि से चन्द्रमा के ऊपर गलत प्रभाव पड़ता है तो सबसे पहले यह किसी जातक की मानसिक स्थिति को गड़बड करता है या चोट पहुँचाता है इसका सबसे बड़ा कारक यह होता है। कि चन्द्रमा जो है वो चौथे भाग का कारक ग्रह माना जाता है तथा जातक कि कुण्डली का चौथा भाव जो होता है उसे हम सुख स्थान कहतें है तो अगर आदमी सुख ही नहीं है तो व्यक्ति मानसिक रूप से परेशान ही रहेगा। तो कुण्डली का जो चतुर्थ स्थान है वह चन्द्रमा देखता है जिसके कारण जातक मानसिक रूप से परेशान रहता है। चन्द्रमा को हम शनि ग्रह भी कहतें है। ' इसके अलावा हम देखतें है कि नेत्र से सम्बन्धि जितनी भी परेशानी होती है वह सब हम चन्द्रमा से ही देखतें है, तथा गलें में, छाती में हुई परेशानियों को भी हम चन्द्रमा से ही देखतें है। और जब कभी व्यक्ति को कैल्शियम की कमी हो जाती है तो हम यह कहतें है कि कहीं न कही हमारा चन्द्रमा कमजोर हो गया है तथा स्त्रीयों के अन्दर कण्डकोश के रोग में जो भी दिक्क्तों होती है। वह भी हम चन्द्रमा के प्रभाव से ही देखतें है।

मंगल (Mars)

अब हम मंगल ग्रह के बारे में बात कर लेतें है मंगल ग्रह को सेनापति ग्रह कहा जाता है मंगल ग्रह के उपस्थित होने के कारण, अगर किसी व्यथ्कत को रक्त से सम्बन्धित परेशानी हो गई या किसी व्यक्ति को रक्त कैंसर हो गया है तो जातक की कुण्डली में मंगल ग्रह को प्रभाव होगा, अर्थात उस व्यक्ति का मंगल दूषित हो रहा होगा, उस व्यक्ति की दशा, अंतरदशा में अचानक से इनका प्रभाव बड़ जायेगा और मंगल ग्रह से, जिनती भी दुर्घटनाएं होती है। तथा अगर आप साहसी, पराक्रमी नहीं है अगर आपकों डर लगता है तो भी जातक की कुण्डली पर मंगल का पाप प्रभाव हो सकता है अतः जिस व्यक्ति को रक्तचाप, जलन, तथा गुप्तांग में हो जाता है तो उसपर भी कही न कही मंगल का ही प्रभाव रहता है।

बुद्ध (Mercury)

बुध ग्रह कि बात करें तो बुद्ध को कुमार ग्रह भी कहा जाता है। अतः इस ग्रह को कुण्डली में बेटे जैसा माना जाता है अर्थात बुद्ध ग्रह में बुद्धि से सम्बन्धित जितनी भी परेशानियां होती है। वह सब इसमें आती है। असके अलावा त्वाचा से सम्बन्धि जितनी परेशानी होती है। वह भी इसमें आती है अतः इसमें बुध ओर मंगल दोनो का प्रभाव होता है बुध से सम्बन्धित परेशानी देखे तो व्यक्ति के नखर सिस्टम से सम्बन्धि, बुद्धि सम्बन्धि, फेफडे, या वाणी सम्बन्धि परेशानि जैसे हकलाना आदि सम्बन्धि परेशनियाँ जों है वह बुध के प्रभाव से होती है।

बृहस्पति (Jupiter)

अब हम बृहस्पति ग्रह को देखते लेते है, बृहस्पति ग्रह सभी ग्रहों का गुरू होता है अतः हम अगर सबसे ज्यादा कुण्डली के कारक प्रभाव को देखतें है चाहे वह द्वितीय स्थान हो, पंचम स्थान हो, नवम् स्थान हो दशम् स्थान होा, एकादश स्थान हो इन सभी स्थानों का जो कारक ग्रह होता है। वह गुरू होता है और गुरू जो होता है वह आकाश तत्व होता है तथा जहाँ भी रहता है वहाँ बहुत ज्यादा वृद्धि कर देता है तो यह आपको देखना होगा कि 'गुरू' आपकी कुण्डली में अगर खराब स्थिति में है और उसकी दृष्टि यदि जातक के शरीर के किसी एक अंग को प्रभावित करेगा ही, जिससे व्यक्ति को बहुत सारी दिक्कतों देगा। अतः गुरू के प्रभाव से व्यक्ति को कब्ज ये सम्बन्धि बिमारियां होगी, जिस व्यक्ति को बैठे-बैठे अचानक से चक्कर आने लगतें है उनके ऊपर गुरू का प्रभाव रहता है टाइफायड, चर्बी तथा मोटापे का कारण भी बृहस्पति के प्रभाव से ही होते है। तथा जितनी भी पाचन सम्बन्धी परेशानियाँ होती है वह गुरू यानि बृहस्पति के प्रभाव से ही होते है।

शुक्र (venus)

बात करतें है शुक्र ग्रह कि शुक्र ग्रह को ज्योतिष में एक राक्षस गुरू के नाम से जाना जाता है तथा शुक्र को सप्तम स्थान को कारक ग्रह माना जाता है। शुक्र ग्रह के प्रभाव से हर व्यक्ति ऐसो आराम से रहता है। वह इंसान शुक्र के प्रभाव से हर समय वहीं चीजें करता है जिसमें व्यक्ति को मजा आता है, अर्थात जिस व्यक्ति का शुक्र कमजोर होगा उस जातक को वह गले से सम्बन्धित परेशानी दे सकता है, तथा गुप्तांगों में दिक्कत दे सकता है तथा शुक्र के कमजोर होने कि स्थिति में वह किडनी को भी बहुत ज्यादा प्रभावित करता है, तथा पथरी से सम्बन्धि परेशानी हो सकती है।

शनि (Saturn)

अब हम शनि ग्रह कि बात करते है शनि ग्रह को ज्योतिष में सेवक के नाम से जाना जाता है । शनि ग्रह से हम पिण्डलियों को देख सकतें है घुटनों को शरीर के अलग-अलग जोड़ों को , नखर सिस्टम को, कफ को सांस सम्बन्धित परेशनियों को हम शनि कि स्थिाति से देखतें सकतें है।

क्या आपकी कुण्डली में कैंसर योग तो नहीं....

वर्तमान समय में या आज से कई साल पहले भी कैंसर नामक बिमारी बहुत ही ज्यादा लोगों के लिए खतरनाक होते है। अगर किसी जातक को कैंसर नामक बिमारी हुई है तो उस जातक की निंद ओर होश सब उड जातें है यह बिमारी ही ऐसी है जिसको सुनकर लोगों के होश उड़ जातें हे ओर अगर सामान्य रूप से देखा जाए तो आज कि तारिख में इस बिमारी के ठीक होने की संभावना बहुत ही कम होती है।

K M Sinha के अनुसार हांलाकि बहुत से जातकों की कुण्डलियों में यह देखा गया है कि कैंसर जैसी बिमारी का इलाज कहीं न कहीं Medical Astrology से भी किया जा सकता है। कुण्डली में कैंसर के योग है या नहीं यदि आपको अपनी जन्म कुण्डली में यह जानना है कि आपकी कुण्डली में कैंसर के योग है या नहीं तो आपको दो या तीन बातों का ध्यान अवश्य रखना होगा । जिसमं आपकों थोड़ा बहुत अदाजा लग जायेग की कैंसर का योग आपकी कुंडली में है या नहीं। अगर यह सब उपाय करने से आपको यह लगता है कि कहीं न कहीं कैंसर के योग बन रहें है तो आनको किसी विद्वान ज्योतिषी से सलाह अवश्य ले लेनी चाहिए। बिना सलाह के कोई भी उपाय आपकों नुकसान पहुँचा सकतें है। ''इसके अलावा अगर आपका को कोई चिकित्सा उपचार चल रहा है तो वो भी चलने दे और आन इसके साथ-साथ किसी योग्य-ज्योतिषी की सलाह भी ले सकतें है।''

अगर किसी जातक कि कुण्डली में लग्नेश यदि रोग स्थान पर चला जाता है तो ज्यादा से ज्यादा सम्भावना यही रहती है कि जो जातक होंगें वह पूरी जिन्दगी किसी न किसी रोग से प्रभावित रहेगा तथा जो जातक का शरीर होगा जैसे कि जल तत्व पाला होगा तो ब्लड से सम्बन्धित जितनी भी परेशानियॉं होगी वह सब जातक को होने ही होगें, तथा चन्द्रमा गैस की भी परेशानियों का भी कारक होता है। तथा अगर देखा जाये तो ऐसी स्थिति में पूरे जन्म हि जातक को परेशनियॉं ही रहेगी। थोड़ा हम इस चीज को समझतें है कि यदि लगन का मालिक खुद 6 वें स्थान पर हो जाए तो अलग-अलग प्रकार के रोग उत्पन्न करतें है जैसे कि लग्न का स्वामी अगर रोग में बैठ जाए तो आदमी रोगी हो जाता है यदि लग्न का स्वामी खुद अष्टम में स्थान पर होकर बैठ जाए तो उसकी आयु पर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है तथा लग्न का स्वामी अगर द्वादश स्थान पर बैठ जाए तो भी किसी जातक का शरीर हमेशा रोग से प्रभावित रहेगा। लेकिन अगर लग्नेश पर किसी विरोधी ग्रह कि दृष्टि हो जाती है। जैसे दो ग्रह होते है।

जैसे दो ग्रह हमेशा किसी कि कुण्डली पर असर करते हैं। और यह एअरी ग्रह होते है और शनि ग्रह इसका प्रभाव बहुत ही लम्बें समय तक होता है और अगर राहु कि भी दृष्टि बन जाती है तो शनि ओर राहु दोनो की दृष्टि बनती है और दोनो की दृष्टि बनती है और दोनो ही अगर ब्लड के कारक को अगर देख लेते है मन के कारक ग्रह को देख लेते है तो जातक का मन हमेशा किसी न किस कारण से परेशान रहेगा।

और अगर देखा जाए तो दोनो ही ग्रह बहुत लम्बे समय तक किसी न किसी रोग को देते ही देते है जैसे यदि किसी जातक को हाई ब्लड प्रेशर हो जाता है तो यह बिमारी एसा नहीं है कि एक दिन में सही हो जाता है बल्कि यह बिमारी पूरी जिन्दगी आनके साथ जुड़ जाती है। तथा लोगों को दवा पूरी जिन्दगी लेना पड़ता है तथा नरवस सिस्टम, सरवाइकल आदि ऐसी कुछ बिमारियां है जिससे व्यक्ति लम्बे समय तक परेशान रहता है। ''अगर राहु ओर शनि किसी रोग वाले ग्रह को देख रहें है और उसका ग्रह किसी नक्षत्र में पॉंच जाए और उस नक्षत्र में अगर वह किसी जैसे अगर पेट में पहुच जाए तो पेट से सम्बन्धि कैंसर का योग बन जाता है अतः यह आप सब समझ गये होगें की किसी कारण से हम कैंसर के योग होने का पता लगा सकतें है यदि कुण्डली में कैसर का योग बन रहा है तो किसी योग ज्योतिषी की सलह अवश्य लें।

क्या आपकी कुंडली में अस्थमा का योग है?

ज्योतिषशास्त्र में यदि किसी जातक को दमें कि शिकायत है, यदि किसी कि सांस ज्यादा फुलती है तथा उसके फेफड़े में किसी प्रकार के अगर रोग उत्पनन होते है तो हम इस प्रकार के रोगों को भी ज्योतिषी में कुंडली के माध्यम से समझतें है, अगर हम देखे तो जो 27 नक्षत्र होतें है उनका भी हमारे शरीर पर कुछ ना कुछ प्रभाव पड़ता है तथा हमारे शरीर पर कुछ होता है। वह श्वास नली को भी बताता है तो यदि अगर किसी जातक को दमें कि बिमारी हुई है, सांस फुल रहा है तो हम कुण्डली के तृतीय भाव इसे पराक्रम भाव भी कहा जाता है ओर उसके कारक यानि मंगल ग्रह को भी देखना पड़ता है, तथा छठा भाव भी देखना पड़ता है जो कि रोग का भाव है किस तरह के रोग उत्तपन्न करते है, तथा जो कारक भाव होतें है उस पर किस ग्रह कि दृष्टि पड़ रहीं है यह भी माध्यम से समझतें हैं।

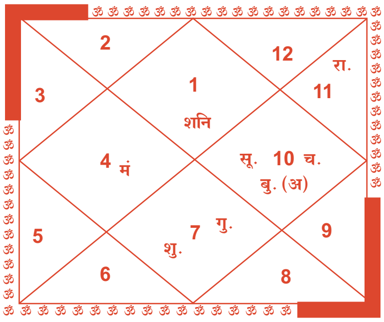

इस चार्ट में आपने देखतें है जैसे कि 1 कि का मतलब सूर्य होता है 2 का मतलब शुक्र, 3 का मतलब बुध, 4 का मतलब चन्द्रमा, 5 का मतलब होता है सूर्य, 6 का मतलब होता है बुध, 7 का मतलब होता है शुक्र, 8 का मतलब होता है मंगल, 9 का मतलब होता है बृहस्पति, 10 और 11 दोनो का स्वामी शनि होता है, और जो 12 होता है वह बृहस्पति होता है अतः यह ज्योतिषशास्त्र में बताया गया है।

तो आइए हम इस कुण्डली को देखते हुए यह पता लगातें है कि इस कुण्डली वाले जातक को अस्थमा है या नहीं हम इस कुण्डली में देखे तो न॰ को देखते है तो यह मंगल की नीच राशि है तो मंगल आपनी नीच राशि यानि 4 पर पड़ता है और इसमें नीचता भंग हो जाती है तो, दमा, या फेफड़े से सम्बन्धित परेशानियां कम हो जाती

है। ''अगर किसी भी ग्रह का लग्नेश खुद नीच राशि में बैठ लाये तो वह उस भाव से सम्बन्धित परेशानिया उत्तपन्न करेगा ही करेगा। जैसा कि आपने इस कुण्डली में देखा कि लग्न का स्वामी चौथे भाव में बैठा हुआ है अतः इस भाव से हम माता को बताने है तथा, भूमि, मकान और वाहन को भी बतातें है और अगर चिकित्सा ज्योतिषी का बात करें तो यह चौथा भाव फेफड़ें को भी बताता है, और इसमें तीसरा भाव स्वास नली को बताता है, तो अगर हमें मुख्य रूप से यह जानना है कि किसी जातक को आस्थमा है या नहीं तो हमें तीसरा भाग, देखना रहता है, चौथा भाग और राहु और शनि की स्थिति को देखनी है और 6ठां भाव को देखना रहता है अतः इससे यह पता चल जायेगा कि किसी जातक को अस्थमा है या नहीं ।

यदि किसी जातक कि कुण्डली में अस्थमा के योग बन रहें है तो कुछ चौजों का खास उपास कर लेना चाहिए।

जैसे हम कुण्डली में 1 का सबसे महत्वपूर्ण ग्रह मंगल ही होता है अर्थात लग्न का लग्नेश हमेशा महबूत रखना चाहिए, यह कमजोर होगा तो कोई न कोई दिक्कतें अवश्य करेगा, अतः इसके उपास के रूप में हमें मंगलवार को हनुमान जी को केला चढ़ाना चाहिए उनकी पूजा करनी चाहिए, तथा शनि कि भी पूजा करनी चाहिए, शनि चालिसा पढ़ना चाहिए, अर्थात् इन सब उपायों को करने से आन अस्थमा संबंधी बीमारी को दूर कर सकतें है।

क्या आपकी कुण्डली में शुगर का योग है?

जैसे आपने अस्थमा, कैंसर के रोग कैसे होते है या होने के योग बन रहें है या नहीं यह सब अपने ज्योतिष के माध्यम से देखा, तथा हमारे ज्योतिषीचार्य के॰ एम॰ सिन्हा के अनुसार किसी जातक कि कुंडली में शुगर होने का योग है या नहीं तथा हम यह भी जानेगें कि मधुमेह किसी जातक को होने के लिए कौन-कौन से ग्रह इसके जिम्मेदारी होतें है और ''कुण्डली का जो छठा भाग होता है वह रोग, ऋण, शत्रु इन तीनों भाग को बताता है अतः कुंडली का हर भाग किसी न किसी रोग को बताता है जैसे हम बात करे प्रथम भाग कि तो यह मास्तिक सम्बन्धि रोग, मानसिक विकार को देखा जाता है, दूसरा भाग वाणी सम्बन्धि परेशानी को बताता है जैस (व्यक्ति का तुतलाना) या आँखों में पीड़ा जैसे (चश्में लगना) तो यह 12 भाग कि तो यह भाई के बारे में बताता है या श्वास नली से सम्बन्धी रोग बताता है, जो चौथा भाव होता है जो छाती संबंधी बीमारी को बताता है , तथा फेफड़े सम्बंधी रोग को बताता है, तथा 6ठां भाव हर प्रकार के रोगों को बताता है, 7वां भाव व्यक्ति के सैक्सुवल संबंधी परेशानी को बताना है, 8वां भाव किडनी, लीवर सम्बन्धित रोग को बताता है 9वें भाग से पीठ से संबन्धित परेशानियों को बताते इस तरह से 10, 11 भी किसी न किसी रोग से संबंधित होते है।

किसी जातक को शुगर होने, ना होने के कारण

यह जानने के लिए किसी व्यक्ति के अन्दर जो पैनक्रीया होते है (अग्नाशय) होते है वह हमारे शरीर में जितने भी शुगर होते है उसको परिवर्तन कर देता है और हार्मोन्स विकसित करता है जो कि व्यक्ति के अन्दर ऊर्जा विकसित करता है ओर हमारे शरीर में जो शुगर होता है उसको ग्लूकोज और फ्रक्टोज, में सड़न उत्पन्न हो जाता है।

लेकिन अगर आपका अग्नाशय ठीक रूप से काम नहीं कर रहा है तो वह आपके शरीर के अन्दर जो शुगर मौजूद है उसके मात्रा को वह ऊर्जा में परिवर्तित नहीं कर पायेगा जिससे कि आपके शरीर में शुगर की मात्रा को बढ़ा देगा। जिससे आपका ब्लड मीठा हो जायेगा तोहम इसे कहते कि शुगर के कारक ग्रह कि बात करें तो बृहस्पति होता है मीठा होता है तथा जो भी मीठे की बात करते है जैसे आम यह मीठा होता है तथा जो भी मीठे की बात करतें है तो हम बृहस्पति को मीठा ग्रह कहते है इसका ज्योतिशास्त्र में जो मेन कारण है पीलीया होता है आदमी का शरीर पूरी तरह से पीला पड़ जाता है इसका भी जो मेन कारण होता है वह बृहस्पति ही होता है तो अगर बृहस्पति का 6ठें भाव से रिलेशन हो जाए, यदि बृहस्पति छठे भाव को देख रहा है तथा खुद भी अच्छा फल देने के लिए प्रतिबुध नहीं है तो निश्चित रूप से जातक को शुगर कि बीमारी हो सकती है।

आइए हम थोड़ा जान लेते है कि शुगर कि बिमारी होने के पिछे क्या कारण है:

बृहस्पति ग्रह वही पर भी कुण्डली में आपके छठे भाव को देख रहा है और वह अच्छे स्थान पर नहीं बैठा हो तो इस स्थिति में जातक को शुगर रोग के होने कि सम्भावना बढ़ जाती है।

2. चन्द्रमा जो होता है वो मन होता है चन्द्रमा मन का कारक होता है चन्द्रमा ब्लड को बताता है और जब ब्लड मीठा हो रहा है तो इसका मतलब यह होता है कि चन्द्रमा अगर रोग स्थान पर हो, और उस पर बृहस्पति कि भी दृष्टि पड़ रही हो ऐसे में जो इनकी दशा अंतरदशा होगी तो इससे ब्लछ में मीठापन आ जायेगा। जिसको हम शुगर कहतें है।

हम इस कुण्डली के माध्यम से यह देखतें है कि शुगर के योग कैसे होते है?

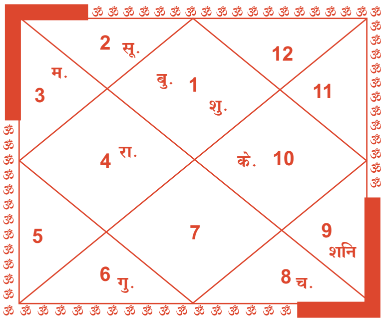

इस कुण्डली में अगर हम देखे तो लग्न में 1 लिया हुआ है इसका मतलब इसका जो मालिक बना बो मंगल बना, अर्थात मंगल जो है वो पराक्रम भाव में बैठा हुआ है, स्वास नली के स्थान पर बैठा हुआ है और अपने शत्रु राशि में बैठा हुआ है, मंगल कि बुध से अति शत्रुता होती है, यह अपने अति शत्रु राशि में बैठा हुआ है, और साथ में हम देखे तो 6वां भाव जो है। वह खुद बुध का भाव है, बुध का जो स्थान है वह लग्न में बैठा हुआ है और किस स्थान का स्वामी है यह रोग स्थान का स्वामी है अगर आप इसे ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नहीं देखतें है साधारण तरीके से देखते है तो हम कह सकतें है कि यह रोग को लेकर शरीर पर बैठ गया तो इंसान रोगी तो होगा ही यह निश्चित है इस कुण्डली से। और मगर देखा जाए तो 6ठें भाग में खुद गुरू अन्दर है अगर 6ठें नम्बर पर गुरू उपस्थित नहीं भी होता या गुरू इस भाव को भी देखता तो भी यहां पर शुगर होने की संभावना ज्यादा रहती ही रहती ।

अगर जातक को किसी भी प्रकार का टेशन होगा तो हार्मोन्स बनेगा नहीं तो व्यक्ति को शुगर संबंधि रोग हो जायेगा।

इस कुण्डली में देखे तो गुरू 6ठें भाव में है और यह रोग का स्वामी है तथा रोग का स्वामी खुद लगन में जाकर बैठ गया है यानि इंसान जो होगा वह शरीर से ही रोगी होगा और रोगी होता तो किस प्रकार का रोगी होगा गुरू जो है वह पीलापन, है मीठा है और चन्द्रमा अष्टम स्थान में है आयु, मृत्यु के स्थान में है तथा नीच राशि में है और नीच भंग में नहीं है अर्थात् चन्द्रमा और गुरू दोनो ही परेशानी में है एक मीठा एक ब्लड तो इससे यह पता चलता है कि जातक की कुण्डली में शुगर होने के योग हैं।

क्या आपकी किडनी खराब तो नहीं होगी?

हमारे ज्योतिषचार्य के॰ एम॰ सिन्हा के अनुसार ज्योतिषी में जातक की कुण्डली में किडनी से संबन्धित बिमरियों को देखतें है इनमें हम देखतें है कि किसी कि किडनी अचानक फेल क्यों हो जाती है, तथा किडनी के फेल होने के क्या

हो जाती है, तथा किडनी के फेल होने के क्या कारण होते है और किडनी से सम्बन्धित किन-किन बातो का ध्यान हमें रखना चाहिए।
''किडनी का जो काम होता है। हमारे शरीर में वह शुद्धिकरण का होता है। ये ब्लड को शुद्ध करके शुद्ध वाले ब्लड को हृदय तक पहुचाने का काम करते है इसके एकमात्र यही काम होते है।''
तथा नक्षत्रों से होने वाली बिमारीयों को ध्यान देते हुए हम किसी कि कुण्डली में किडनी सम्बन्धि परेशानी है या नहीं इस बात का पता लगा सकतें है।
सबसे पहले हम ये जानेगें कि जो किडनी का स्थान कुण्डली में बताया गया है ज्योतिष में वह अष्टम स्थान होता है। जिसे हम आयु स्थान मृत्यु स्थान कहते है अष्टम स्थान पर अगर किसी विरोधी ग्रह कि ऊर्जा पड़ रही तो इसकी अर्न्तदशा में उस चील से सम्बन्धित होगे जिसका नक्षत्र रोग में चला गया हो उस द शा अन्तर दशा में जातकों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है अतः किसी भी जातकों की किडनी धीरे-धीरे लम्बे समय से खराब होती जाती है।

किसी कि कुण्डली में किडनी खराब होने के योग कैसे बन रहे है आए इसको हम देखतें और समझते है,?

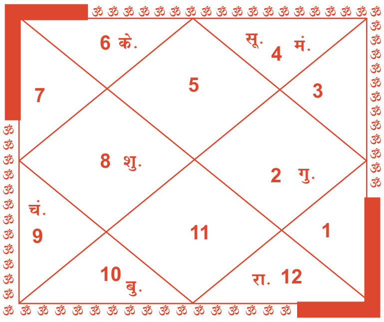

आइए हम इस सिंह लगन कि कुण्डली में देखते है उदाहरण के लिए।

इस कुण्डली में जो लग्नेश है वह खुद द्वादश स्थान पर बैठा है और साथ में इसका मित्र मंगल नीच अवस्था में है और वह कुण्डली में सीधा 6ठे स्थान को देख रहा है तो मंगल यहां रोग उत्पन्न कर रहा है और मंगल ब्लड का भी कारक होता है ब्लड व्यक्ति का शुद्ध नहीं हो रहा है तो इसका मतलब ब्लड से रिलेटेड कुछ दिक्कते व्यक्ति को होगी ही, और अगर चन्द्रमा कि बात करे तो चन्द्रमा के ऊपर शनि कि दसवीं दृष्टि पड़ रही है इसका मतलब चन्द्रमा भी परेशानी में है और साथ में मंगल भी रोग स्थान को नीच होकर देख रहा है तो इस कारण रोग को भी बढ़ायेगा, तो किडनी में ब्लड कि गति यानि प्रवाह को बनाये रखता है लेकिन ब्लड कि शुद्धि नहीं कर पा रहा है और जब शनि और राहु किसी भी स्थान को देख रहे होते है तो वह किसी जातक को एक, दो दिन का रोग नहीं देते है वह ऐसा रोग देते है जो पूरी जिन्दगी जातक के साथ रहती है क्योकि शनि ग्रह बहुत ही धीमी गति से चलने वाला ग्रह होता है। और वह जिस गति से चलता है उस गति से व्यक्ति के जीवन में रोग को भी प्रभावित करता है। और राहु के आ जाने से आपको अचानक से पता चलेगा कि आपकी यह रोग हुआ है। ओर अगर इस कुण्डली में देखे तो 11वाँ स्थान है और जो 10वां स्थान है दोनो शनि का स्थान है और शनि खुद पूर्ण प्रबल मार्गेश को लेकर अष्टम स्थान पर बैठा हुआ है। अर्थात इस कुण्डली में साफ-साफ यह दिखायी दे रहा है कि जातक की किडनी खराब होगी ही होगी, और कुण्डली में मारग भाव होने के कारण किडनी में दिक्कतें बहुत ही ज्यादा बढ़ जायेगी। तो इस कुण्डली को देख कर आप समझ गयें होंगे के कारण उसकी किडनी खराब होने जैसी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

पीलिया रोग के कारण और उपाय

ज्योतिषाचार्य के० एम० सिन्हा के अनुसार आइए हम Health Astrology के इस 7वें पार्ट में देखतें है कि किसी जातक कि कुण्डली में पीलिया होने के योग तो नहीं और अगर किसी कारण वश योग बन भी रहें है तो उसके कारण या उपाय क्या है इसको देखते है। ''किसी जातक कि कुण्डली का 6ठा भाग रोग का कारक होता है और हमे किसी कि कुण्डली में रोग का पता लगाना होता है तो हम सबसे पहले उस कुण्डली में छठे भाग को देखते है किसी भी जातक कि कुण्डली में लीवर का जो स्थान होता हजै। वह अनुराधा नक्षत्र से होता है और ज्येष्ठा नक्षत्र पेट से सम्बन्धित है। अब हम यह जानते है कि जीवर में पूरा शरीर व्यक्ति का पीला क्यो हो जाता है और अगर गुरू आनकी कुण्डली में अष्टम स्थान पर पहुँच गया है तो उससे भी पीलिया होने कि सम्भावना रहती है। जातको को पीलिया होने के कुछ कारणों को देखते है:

1. गुरू जो है वो अगर जातक कि कुण्डली में अष्टम स्थान पर हो।
2. जो रोग का स्थान है यानि छठा स्थान उस पर मंगल कि दृष्टि न हो , मंगल नीच का न हो, तथा उस पर किसी विरोधी ग्रह कि दृष्टि न पड़ रहीं हो।
3. चन्द्रमा बल में कमजोर न हो।

आइए हम इस कुण्डली से उदाहरण देकर समझ लेतें है।

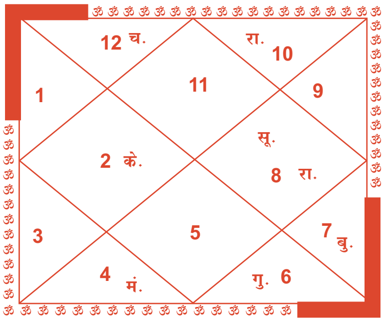

हम इस कुण्डली से समझ लेते है इस कुण्डली में आपको यह दिखायी दे रहा होगा कि 4 न० में जो मंगल है वह नीच राशि का माना जाता है

तो मंगल 4 न० पर नीच का होकर बैठा हुआ है तथा छोटे भाई बहनों का स्थान लेकर नीच के स्थान पर बैठा हुआ है इससे यह पता चलता है कि यह खुद को तो रोग देगा ही साथ ही छोटे भाई-बहनों को ब्लड सम्बन्धि रोग भी देता है। इसके अलावा अगर हम गुरू का स्थान देखते है पीलिया का जो कारक होता है वह गुरू होता है और गुरू अष्टम स्थान पर है जो कारक होता है वह गुरू होता है और गुरू अष्टम स्थान पर है जो कि अच्छा नहीं माना जायेगा इस कुण्डली में क्योंकि गुरू का अष्टम भाव में जाना अपने आप में पाँच भाव को अष्टम में जाना होता है । क्योंकि गुरू जो होता है वह दूसरा घर, पाँचवा घर, 9वां, 10वां, और 11वां, इन पाँच घरों का कारक माना जाता है।
इसमें दूसरा घर धन से , पाँचवा पेट से , 9वाँ भाग्य स्थान पिता का स्थान है, 10वाँ कर्म क्षेत्र नौकरी का स्थान और 11वाँ एकादश भाव होता है जिसमें अपनी आय के बारे में बताता है, अतः इन पाँच चीजो का अकेला मालिक होकर इस कुण्डली में यह अष्टम स्थान पर बैठा है और गुरू पिले रंग का होता है इसके कारण जातक के शरीर में पीले रंग कि अधिकता हो जाती है जिसके कारण जातक का शरीर पीला पड़ जाता है तो हम कहते है कि व्यक्ति को पीलिया हुआ है साथ ही हम राहु, केतु, तथा शनि कि भी दृष्टि को देखते हुए यह ज्ञात कर सकते है कि व्यक्ति को पीलिया रोग हुआ है यह रोग मंगल कि दशा अंतरदशा, तथा गुरू कि दशा अंतरदशा चलेगी तब पीलिया होने कि संभावना होती है।
अगर किसी जातक को पीलिया होने कि सम्भावना बन रहीं है तो ऐसे में जातक को अपना गुरू मजबूत करना चाहिए, गुरू मजबूत करने के लिए कही भी घर से निकलने से पहले माता-पिता के पैर हुइए उनकी सेवा करिए क्योकि गुरू माता-पिता ही होते है, इसके अलावा अनार के जूस का सेवन करे

और इससे सम्बन्धित रत्न भी पहन सकते है परन्तु यह बात ध्यान में रखीयेगा किसी भी रत्नों को पहनने से पहले किसी योग्य ज्योतिषी कि सलाह अवश्य ले अन्यथा जातक को किसी न किसी दिक्कतों का सामना कना पड़ सकता है।

क्या आपके कुण्डली में डिप्रेशन या हाइपरटेशन तो नहीं है

हमारे ज्योतिषाचार्य के॰ एम॰ सिन्हा के अनुसार आज हम कुण्डली में डिप्रेशन या हाइपरटेंशन के बारे में जानते है, यदि कोई व्यक्ति मानसिक रूप से बहुत ज्यादा ग्रसित हो ऐसे व्यक्ति कि कुण्डली में ऐसे कौन से योग बन रहे है जिससे कि व्यक्ति को सोने के लिए भी निंद की दवा खानी पड़ती है और सामान्य रूप से हम देखे तो आज कि तारिख में डिप्रेशन या हाइपरटेशन आम बाते हो गयी है, यदि बच्चे पढ़ाई में सफलता हासिल नहीं कर पाते तो डिप्रेशन के शिकार हो जाते, माता-पिता को अलग डिप्रेशन होते है बच्चो को लेकर, अगर देखा जाए तो हर एक घर में आज के जमाने में डिप्रेशन के एक ना एक व्यक्ति मिल ही जायेगें, परन्तु जय

अगर लग्नेश नीच का हो गया, सूर्य मेष राशि में उच्च का होता है। और सूर्य तुला राशि में नीच का होता है।

बात करें शुक्र कि तो यह कन्या राशि में नीच का होता है और मीन राशि में यह उच्च का होता है।

बात करें अगर बुध कि तो बुध शुक्र का उल्टा होता है। बुध कि जो उच्च राशि होता है वो कन्या होती है और मीन राशि में बुध कि नीच राशि होता है।

बात करें चन्द्रमा कि तो इसकी उच्च राशि वृष राशि होती है और चन्द्रमा कि जो नीच राशि होती है वो वृश्चिक राशि होती है।

मंगल कि बात करे तो इसकि उच्च राशि मकर राशि होती है। और कर्क राशि मंगल कि नीच राशि होता है।

वृहस्पति कि बात करें तो इसकी उच्च राशि कर्क होती है। और मकर इसकि नीच राशि होती है।

इसी प्रकार सारे ग्रहों कि उच्च और नीच राशि होती है अगर आपको यह पता चल जाए कि कोई भी ग्रह आपका लग्नेश होकर अपनी उच्च राशि पर बैठा है या फिर लग्नेश होकर नीच राशि पर बैठा है अगर लग्नेश होकर वह नीच राशि में बैठा है तो आपको वह हमेशा ऋणात्मक फल ही देगा, जिस भाव में नीच होकर बैठा है। उस भाव से सम्बन्धित फल देगा। जो हमारा मन होता है उस पर चन्द्रमा का प्रभाव रहता है अगर चन्द्रमा पर बृहस्पति का अगर शुभ प्रभाव हो तो यह सोचने समझने कि क्षमता को बढ़ा देता है। क्योंकि यह आकाश तत्व होते है। इसी तरह अगर उसमें शनि की दृष्टि होती है तो वह उसके सोचने समझाने कि क्षमता को कस कर देता है और अगर गलती से चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि पड़ जाए तो आदमी हिंसक हो जाता है और अगर चनद्रमा पर राहु कि दृष्टि होती है, वे भ्रम पैदा करता है इसके कारण आपके हर चीज सही लेगेगी परन्तु वास्तव में वह सही होगा नहीं भ्रमित कर देता है व्यक्ति को तो लम्बे समय तक जो बिमारी हीेत है वह आपकों पता है कि चन्द्रमा और राहु ये दोनो ऐसे ग्रह जो लम्बे समय तक लोगो को परेशानियों में रखते है डिप्रेशन में क्या होता है कि व्यक्ति हर स्थिति में एक ऋणात्मक फल सोचने लगता है और हमेश ऋणात्मक सोचने का मतबल है कि किसी ऋणणत्मक ग्रह कि दृष्टि का असर शुरू होना ।

आइए हम कुण्डली के माध्यम से इस चीज को समझते है कि किसी व्यक्ति को डिप्रेशन याहाइपरटेंशन होने के क्या योग होता है ।

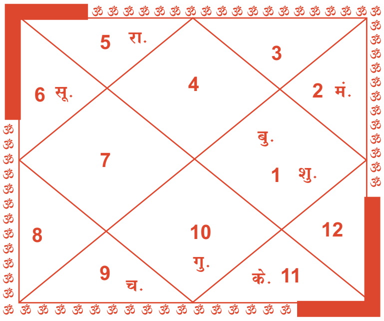

इस कर्क लग्न कि कुण्डली से हम समझने कि कोशिश करतें हैं। कर्क लग्न कि कुण्डली में जो लग्नेश होता है वह चन्द्रमा होता है। चन्द्रमा जो है वह छठवे घर में बैठा है छठां घर का मतलब होता है वह रोग से सम्बन्धित होता है चन्द्रमा जो है वो लग्नेश होकर रोग स्थान पर बैठा है । चन्द्रमा अगर खुद रोग स्थान पर बैठ जाता है तो अधिक से अधिक यहां सम्भावना हो जाती है कि आदमी रोगी होगा और किस प्रकार का रोगी होगा मानसिक रूप से रोगी होगा क्योंकि कर्क राशि वाले लोग बहुत ही भावुक होते है अतः इस चन्द्रमा पर कोई बुरी दृष्टि तो नहीं पड़ रही यह देखना होगा शनि कि जो तीसरी दृष्टि है वह चन्द्रमा पर पड़ रहीं है जिससें कि यह व्यक्ति के सोचने समझने कि दशा अंर्तदशा निश्चित रूप से कम कर देता हैं और यदि राहु पर शनि कि दृष्टि चले या शनि पर राहु कि दृष्टि चले और उसमें चन्द्रमा कि अंतर दशा हो जाए तो जिस जातक कि यह कुण्डली बनी है उस जातक को पूरी तरह यह पागल भी बन सकता है इस व्यक्ति को हाइपर टेंशनाइस्ड कर सकता है । और स्थिति में आने के लिए चन्द्रमा का दुषित होना सबसे पहला कारण होता है वह भी चन्द्रमा पर पड़ रही और रोग भाव में पड़ रही है तों इस कारण से हो सकता है कि जब व्यक्ति डिप्रेशन में जायेगा तो हिंसक हो जायेगा। तो इस कुण्डली में आपने देखा कि ग्रहों कि दशा, अन्तर्दशा से किस प्रकार के रोग हो सकतें है अतः इसको कम रखने के उपाय व्यक्ति को अवश्य करना चाहिए।

कुण्डली से जाने हार्ट अटैक

हमारे ज्योतिषाचार्य के॰ एम॰ सिन्हा के अनुसार किसी जातक कि कुण्डली में अगर हार्ट अटैक का योग बन रहा है तो उसे हम अपनी कुण्डली के माध्यम से कैसे समझेंगे इसको हम देखेगें।

विशेष रूप से हार्ट अटैक जो होता है उसका कारक ग्रह सूर्य को माना जाता है अगर किसी भी कुण्डली में सूर्य पाप स्थान पर पहुँच जाए तथा नीच को हो जाए उसका नीच भंग न हो तो इस स्थिति में सूर्य से सम्बन्धित दिक्कतों हो जाती है अगर किसी जातक कि कुण्डली में सूर्य खराब है तो उन्हें 2 या 3 बातों का ध्यान अवश्य देना चाहिए।

एक तो आनकी हडिड्यों में दर्द शुरू हो जायेगा अगर हड्डीयों में हमेशा दर्द रहता है तो यह सूर्य से ही सम्बन्धित रोग होते है।

टगर आपनके मुँह में थूक के निकलने का क्रम ज्यादा हो जाता तो भी सूर्य कि कुण्डली में खराब होने कि सम्भावना रहती है। और अगर कुण्डली में सूर्य कमजोर है तो आँखों कि रौशनी भी कम हो जाती है कहीं न कही और, सूर्य के कमजोर होने कि स्थिति में विटामिन-डी के भी मिलने के अवसर कम हो जाते है।

आइए हम कुण्डली के माध्यम से हार्ट अटैक कि स्थिति को देखतें है कर्क राशि वालो जातकों कि कुण्डली से हम उदाहरण समझतें है।

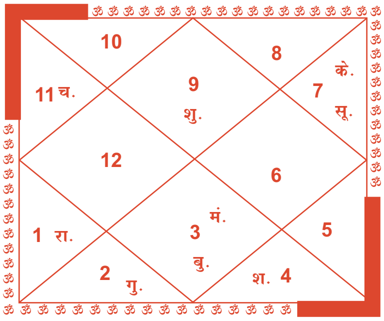

12 राशियाँ अक्टूबर

अक्टूबर 2020 का फल लग्न के आधार पर किया गया है आने वाला अक्टूबर का महिना जातको के लिए कौन सा फल देने वाला है इन सब बातों को हम अक्बूबर में आने वाली राशियों के अनुसार बनेगे। जिस भी जातक की जन्मकुण्डली में चन्द्रमा जिस राशि में होता है जातक का राशि भी वही होता है। और वैसे ही किसी जातक के नाम के प्रथम वर्ण के आधार पर भी राशि का निर्धारण किया जाता है जैसे यदि आपका नाम म, मी, मू, में, मो, टा, टी, टू, टे वर्ण से आरम्भ हो रहा है तो आपकी राशि सिंह होगी। आप अपनी राशिफल अथवा भविष्यफल इसी राशि के अनुसार ही देखें। उसका क्रिधान्वयन करने में सहायता प्रदान करेगा। इन राशिफल के प्रत्येक शब्द तथा वाक्य विशेष रूप से विचारणीयस है।

मेष राशि October 2020

मेष राशि के जातकों को अक्टूबर महीने में करियर और आर्थिक पक्ष के क्षेत्र में आपको थोड़ा संभलकर चलना होगा। इस महीने जातक को अपने पारिवारिक जीवन में अच्छे फलों कि प्राप्ति हो सकती है परन्तु ध्यान रहे इस महीने आपको बहुत ही संभलकर रहना होगा, क्योंकि आप अपनी कोई किमती वस्तुओं को खो सकते है या आपके किमती वस्तुओं के चोरी होने की संभावना भी हो सकती है। और विद्यार्थीयों के लिए मेष राशि का महीना थोड़ा सा विपरीत होने वाला है इस महीने पढ़ाई में मन लगाने में दिक्कते आ सकती है वही इस महीने आपके और आपके प्रेमी के बीच कुछ गलत-कहनियाँ जगह बना सकती है। और नवविवाहित जातकों कि बात करें तो इस महीने आप फैमिली प्लानिंग भी कर सकते है।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय ऊ हनुमतें नमः का जाप करें ।

वृषभ राशि October 2020

वृषभ राशि वाले जातकों का करियर अगर बीते समय में सही से नहीं चल रहा था कुछ दिक्कतें अगर आ रही थी तो इस मीने में वह दिक्कतें देर हो सकती है और यदि आपके घर में किसी की तबीयत खराब है तो उस पर भी आपको अपना पैसा खर्च करना पड़ सकता है अपने पारिवारिक जीवन में अगर कुछ दिक्कतें आ रही है इस राशि के विद्यार्थियों को इस महीने में स्थिति को सुधार सकते है इस राशि के प्राप्ति हो सकती है इस राशि के जातको के लिए प्रेम जीवन प्रतिकूल रह सकता है वही शादीशुदा जातकों के जीवन में कामुकता की अधिकता रहेगी। और अगर स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से देखे तो इस महीने इस राशि के जातकों को पेट और कंधे में दर्द कि समस्या हो सकती है।

उपायः प्रतिदिन सूर्योदय के समय श्री लक्ष्मी नारायण भारती का जाप करें।

मिथुन राशि October 2020

मिथुन राशि के जाकों कि अगर करिया कि बात करें तो उनका अक्टूबर महीना शुभ रहेगा। आपके आय में वृद्धि होने से घर की आर्थिक स्थिति सुधर सकती है। वहीं अगर देखा जाए तो आपकी माता की सेवृत इस महीने बहुत अच्छी रहेगी, जिसकी वजह से आप बहुत सारी चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे और विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में माता-पिता का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। और जातक के प्रेम जीवन में लवमेट के किसी रिश्तेदार के साथ आपकी बहस हो सकती है। और मिथुन राशि वाले जातक जो शादीशुदा है उनका ससुराल पक्ष के लोगों के साथ सामांजस्य भाव इस महीने अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य कि बात करें तो इस महीने में जातक को छाती में दर्द की समस्या हो सकती है खासकर छाती के बाए तरफ की हिस्से में।

उपाय : प्रतिदिन एक नियत समय पर महामृत्युंजय का 108 बार जाप करें।

कर्क राशि October 2020

कर्क राशि के जातको को अक्टूबर में करियर के क्षेत्र में वृद्धि हो सकती है और इनको और इनके कारोबार में बहुत ही ज्यादा मुनाफा मिलने की उम्मीद है और इस महीने आपकी आमदनी में वृद्धि होने से कई रूके हुए काम आपके पूरे हो जाऐगे। और अगर कर्क राशि की बात करें तो उनका पारिवारिक जीवन बहुत ही सुखद होने वाला है और विद्यार्थि लोग अपनी पढ़ाई के साथ-साथ और भी दूसरें कामों में अपना मन लगा सकते है इस राशि के प्रेमी जातक अपने लवमेट से बिना घरवालों को बतायें ही शादी करने का प्लान बना सकते है। और शादी शुदा वाले जातकों के साथ इस महीने उनका तालमेल बहुत ही अच्छा रहेगा। और इस राशि के लोगो के स्वास्थ्य की बात करें तो इस महीने उनके मुंह से जुड़ी कोई समस्या हो सकती है।

उपाय : प्रतिदिन सुबह के समय श्री शिव तांडव स्त्रोत का जाप करें।

सिंह राशि October 2020

सिंह राशि के जातकों को अक्टूबर महीने में करियर के क्षेत्र में अच्छे बदलाव आ सकते है। और इस राशि वालो के लिए आमदनी से सम्बन्धित क्षेत्रों में वृद्धि होगी, जिससे आप घर के आने वाले कई खर्चो को आसानी से देख सकते है। इस राशि के प्रेमी जातक अपने प्रेम सम्बन्ध के बारे में अपने घरवालों को बता सकते है और विद्यार्थियों के लिए यह महीना सामान्य रहने वाला है। और वाले जातकों के लिए यह महीना किसी पैसे से जुड़ी मुद्दों को लेकर मतभेद हो सकता है। शादीशुदा लोगो का यह महीना आपके लिए मतभेद हो सकता है। शादीशुदा लोगो का यह महीना आपके लिए सामान्य रहेगा और इस माह में आपके लिए जीवनसाथी का स्वास्थ्य सही रहेगा। और स्वास्थ्य की बात करें इस रशि के जातकों को आँख और कान से जुड़ी समस्या हो सकती है।

कन्या राशि October 2020

कन्या राशि वाले जातक शारीरिक रूप से फिट रहेंगे और अपने कार्यक्षेत्र में भी अच्छे से काम कर पायेंगे। इस महीने आपकी आमदनी में वृद्धि देखी जा सकती है इसके साथ ही इस राशि के जातको को पारिवारिक जीवन में भी अच्छे फल प्राप्त होना चाहिए। और इस महीने विद्यार्थी जातकों को अच्छे फल प्राप्त करने के लिए बहुत ही ज्यादा मेहनत करनी पड़ सकती है। प्रेम और वैवाहिक जीवन की बात करें तो इन दोनों ही क्षेत्रों में आपकों को थोड़ा वैवाहिक जीवन की बात करें तो इन दोनो ही क्षेत्रों में आपको अच्छे परिणाम मिलेंगे। और स्वास्थ्य को लेकर कन्या राशि वाले जातकों को थोड़ा सर्तक रहना होगा, क्योंकि किसी अनधान डर कि वजह से आपकों सिर दर्द, आँखों का दर्द, आँखों कि कमजोरी जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय श्री सरस्वती मंत्र का जाप करें।

तुला राशि October 2020

तुला राशि वाले जातकों को इस महीने कार्यक्षेत्र को लेकर बहुत ही सोच समझकर चलना होगा क्योंकि आपके शत्रु आपके खिलाफ साजिश कर सकते है। आपकों पारिवारिक जीवन में भी बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि आप आर्थिक रूप से इस महीने बहुत मजबूत रहने वाले है।

तथा विद्यार्थियों के लिए यह माह बहुत ही अच्छा रहेगा। बात रके विवाह और प्रेम जीवन की तो वह सामान्य रहेगी, लवमेट के साथ छोटा मोटा झगड़ा या टकरार हो सकती है। और इस राशि वालो के गृह नक्षत्रों के अनुसार स्वास्थ्य कि सिथति इस महीने बहुत बच्छी नहीं रहने वाली है। आपको आँख, सिर और कान में दर्द कि समस्या हो सकती है।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय श्री अष्टलक्ष्मी पाठ करें ।

वृश्चिक राशि October 2020

वृश्चिक राशि वाले जातको कि पारिवारिक जीवन कि स्थिती इस महीने बेहतर मिल सकती है झगड़े सुलझ सकतें है। तथा विद्यार्थियों के लिए यह महीना बहुत ही अच्छा रहने वाला है। करियर की स्थिति देखा जाए तो आपको इस महीना बहुत ही अच्छा रहने वाला है। करियर की स्थिति देखा जाए तो आपकों इस महीनें अच्छा फल मिलेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी प्रगति हो सकती है। इसके साथ आपकी आमदनी में भी बढ़ोतरी हो सकती है। लेकिन इस राशि के जातकों को लेन-देन के मामलों में थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। और आपका स्वास्थ्य इस महीने बहुत अच्छा नहीं रहेगा आपके शरीर के बाए हिस्से में यानि बाएँ या सिर के बाएँ हिस्से में आपकों दर्द की संभावना हो सकती है।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय ऊँ नमः शिवाय का 108 बार जाप करें।

धनु राशि October 2020

धनु राशि वाले जातकों को इस महीने करियर के क्षेत्र में थोड़ी मशक्कत करने की जरूरत पड़ेगी। इस राशि के जो लोग नौकरी पेशा वाले है उनके कार्य क्षेत्र में अच्छे फलों कि प्राप्ति की संभावना हो सकती है। और आपका आर्थिक क्षेत्र सामान्य रहेगा तथा पारिवारिक जीवन में भी अच्छे फल प्राप्त हो सकते है। इस महीने इस राशि वालों को शिक्षा के क्षेत्र में काफी मदद मिल सकती है। और प्रेम सम्बन्ध वाले जातक इस महीने अपनी प्रेमिका को माता से भी मिला सकते है। आपके स्वास्थ्य कि बात करें तो अच्छे फलो कि प्राप्ति हो सकती है तथा किसी पुरानी बिमारियों से भी छुटकारा मिल सकता है

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय हनुमान चालीसा का पाठ करे।

मकर राशि October 2020

मकर राशि वाले जातक इस महीने अपने कार्यक्षेत्र में अच्छे फल पा सकते है। आपके कार्य करने कि गाति तेज होगी जिससे आपके बॉस प्रभावित होने इस राशि वाले जातक धर्मिक कार्यो में अपना पैसा खर्च कर सकते है। विद्यार्थियों को इस महीने कड़ी मेहनत करने कि जरूरत होगी। आपका प्रेम और वैवाहिक जीवन इस महीने सामान्य रहेगा । और पारिवारिक जीवन में भाई-बहनों के साथ अच्छा तालमेल रहेगा जिससे आपके माता-पिता काफी खुश रहेंगे। और स्वास्थ्य कि बात करें तो इस राशि वाले जातकों को कंधे से दर्द रहने कि संभावना हो सकती है। तथा सूर्य नीच अस्त होने से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय ऊँ नमः नरायण का 1008 बार जाप करें।

कुंभ राशि October 2020

कुंभ राशि वाले जातकों को करियर के क्षेत्र में कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। वही इस राशि के कारोबारियों की बात करें, तो धन लाभ होने कि संभावना निश्चित रूप से बनी रहेगी। और इस महीने आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी ना होने के कारण आपको सोच समझकर चलना होगा। पारिवारिक जीवन कि स्थिति देखी जाए तो इस महीने अपने पिता के साथ वक्त अवश्य बिताना चाहिए। और प्रेमी जातकों को अपने व्यवहार में विनम्रता लाने कि जरूरत है। कुछ सोची योजनाओं में कामयाबी और मान सम्मान में वृद्धि होगी। शादीशुदा जातक अपने घर में आए किसी समस्याओं के कारण झगड़ सकते है। इस राशि वाले जातक अगर किसी लम्बी बिमारी से परेशान है तो उन्हे अपना खास ख्याल रखना होगा।

उपाय : प्रतिदिन सूर्योदय के समय श्री गणेश वन्दना का जाप करें।

मीन राशि October 2020

मीन राशि वाले जातकों के करियर में सामान्य फल मिलने कि उम्मीद है। और अपने आर्थिक स्थिति को मजबूत करनें के लिए आपको काफी प्रयास करनें होंगे। इस राशि के जातक अपने दोस्त के साथ मिलकर कोई नया कार्य शुरू कर सकते है। विद्यार्थियों की बात करें तो इस राशि के कुछ जातक झगड़ सकते है। अपने स्कूल या कॉलेज में। इस महीने आपका सप्तम भाव सक्रिय अवस्था में होने के कारण आप को वैवाहिक जीवन में अच्छे फलों कि प्राप्ति हो सकती है। वही इस राशि के जातक प्रेम सम्बन्धों में पड़े इन्हे कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। और इस राशि के जातकों को स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्या गुप्तांग में हो सकती है।

उपाय : प्रतिदिन ऊँ गण गणपते नमः मंत्र का 1008 बार जाप करे ।

दुर्गा सप्तशती

सबका कल्याण करता है श्री दुर्गा सप्तशती का त्रिपुंज।।

नवरात्रि के इस पावन पर्व पर श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ पढना अत्यन्त लाभकारी होता है। श्री दुर्गा सप्तशती के 13 मध्याय के 700 श्लोको का नवरात्रि के प्रतयेक दिन में पाठ किये जाने का विधान है। और अगर आप इन 13 अध्यायों का पाठ करके देवी के नव रूपो को पूरी श्रद्धा से प्रसन्न कर सकते है। इन सारे अध्यायों का पाठ करने से आपका व्रत पूर्ण रूप से सफलत हो जाता है तथा माँ दुर्गा आपकी सारी मनोकामनाओं को पूर्ण करती है तथा प्रसन्न रहती है। आज के इस व्यस्ततापूर्ण समय में समय ना मिल पाने के कारण अरग 13वाँ अध्याय सम्भव नहीं हो पाए तो कीलकम्, कवचम् व अर्गला के साथ व ग्यारहवें अध्याय का पाठ लाभकारी होता है। तथा श्री दुर्गा सप्तशती के मध्यम चरित्र में अर्गला व कीलकम् के साथ दूसरे तीसरे व चौथे अध्याय का पाठ उपयोगी होता है।

''श्री दुर्गा सप्तशती का कवचम् सब प्रकार से लोगो की रक्षा करने वाला है इस दुर्गा सप्तशती के पाठ में ''ऊ नमः चाण्डिकायै'' से प्रारम्भ हुए इस महामंत्र निधि में देवी के नौ रूपों के नाम है। और इसमे कुछ 55 श्लोक है। इसमें देवी के रूप स्वरूप व वाहन के साथ यश और कृति के वृतान्त का अपूर्व वर्णन है। अर्थात् अर्गला का जो स्त्रोत् है उसकी शुरूआत यह हम कहे कि

श्री गणेश भी ''ॐ नमः चण्डिकायै '' से ही होता है, जिसमें माँ दुर्गा से पूरे 18 बार प्रार्थना की गई है इसमें यह प्रार्थना कि गई है कि 'हे माता! आप मुझे रूप दो , जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो !'

अतः श्री दुर्गा सप्तशती पाठ में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जो भी अर्गला स्त्रोत का पाठ करके सप्तशती रूपी महास्त्रोत का पाठ करना है, वह सप्तशती की जप संख्या से मिलने वाले श्रेष्ठ फलों को प्राप्त करना है । इस पाठ के प्रारम्भ में देवी के एकादश नाम सहित कुल 25 श्लोक है ।

''दुर्गा माता कि अराधना में फीलक स्तोत्रम का प्रारम्भ भी ' ॐ नमः चण्डिकायै ' से हुआ है, जिससे कुल 142 श्लोकों से भगवती के समय आत्म निवेदन प्रसतुत किया गया है । इस फीलकम स्तोत्रम के पाठ में यह लिखा गया है कि इस कल्याणमय स्त्रोत का जप हमेश करना चाहिए । इस स्त्रोत का उचच स्वर से पाठ करने पर माँ दुर्गा का उच्च स्वर से ही पाठ करना चाहिए । कहते है कि जिस घर में श्री दुर्गा सप्तशती रहती है वहाँ माँ दुर्गा किसी न किसी रूप में अवश्य रहती है । कीलकम्, कवचम् व अर्गला को त्रिपुंज कहा जाता है जो देवी को अत्यन्त प्रिय है । तथा शास्त्रो में यह बताया गया है कि देवी के पहले कवचम् फिर अर्गला और अंत से कीलकम् का पाठ करना चाहिए । इसके साथ्ज्ञ ही देवी के 32 नामो कि माला, जैसे ' अथ दुर्गाद्वात्रिंशत्राममाला भी परमकल्याण - कारी है तथा यह भी बताया गया है कि जो भी दुर्गा सप्तशती में अंकित फीलकम् स्त्रोत, कवचम्, स्त्रोत व अर्गला स्त्रोतम् का पाठ करता है, जगन्माता उसके सम्पूर्ण पंचकार्य, जैसे - तिरोभाव, सृष्टि, स्थिति, संहति और अनुग्रह का निष्पादन स्वयं कर आगे का हर मार्ग सर्वसुलभ कर देती है ।

ज्योतिषाचार्य के.एम.सिन्हा

दुर्गा सप्तशती पाठ में रखे 10 बातों का ध्यान

देवी माता कि अराधना करनें के लिए, तथा माता दुर्गा से अपना मनचाहा फल पाने के लिए, अपने मनोकामनाओं कि पूर्ति करने के लिए दुर्गा सप्तशती के पाठ का विशेष महत्व है । परन्तु विशेष फल कि प्राप्ति के लिए इसका पाठ विधि-विधान और और नियम के साथ किया जाना आवश्यक है अतः इस पाठ को करने से पहले इन 10 बातों का ध्याान रखना अत्यन्त आवश्यक है ।

आइए जानतें है कि किन 10 बातों का ध्यान हमे दुर्गा सप्तशती का पाठ करने से पहले देना चाहिए ।

यह बात तो आप जानतें होंगे कि किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले गणेश जी कि पूजा करने का विधान है । अतः दुर्गा सप्तशती का पाठ करने से पूर्व भी इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए । अगर आपके घर में कलश स्थापना कि गई है तो, कलश का पूजन, नवग्रह पूजन एवं ज्योति पूजन किया जाना आवश्यक होता है ।

माँ दुर्गा सप्तशती का पाठ करने से पूर्व श्री दुर्गा सप्तशती कि पुस्तक को शुद्ध किये हुए आसन पर साफ लाल कपड़ा बिछाकर रखें । और इस पुस्तक की विधि विधान से कुंकुम, चावल और पुष्प से पूजन करें उसके बाद स्वयं अपने माथे पर भस्म, चंदन या रोली लगाकर पूरव दिशा कि ओर होकर तत्व शुद्धि के लिए 4 बार आचमन (ओक में जल लेकर पियें)

श्री दुर्गा सप्तशती के पाठ में कवच, अर्गला और कीलक स्त्रोत के पाठ से पहले शाप के प्रभाव से छुटकारा पाना अत्यन्त जरूरी है अतः यह जानना आवश्यक है कि दुर्गा सप्तशती का हर मंत्र, ब्रम्हा, वाशिष्ठ और विश्वामित्र जी द्वारा शपित किया गया है अतः शाप या उसके प्रभाव से छुटकारा पाये बिना इस अराधना का सही प्रतिफल प्राप्त नहीं होता है ।

यदि पाठ करते समय एक दिन में पाठ पूरा नही हो पा रहा, तो पहले दिन केवल मध्यम चरित्र का पाठ करें । अगर यह भी या रहा किसी कारण वश तो फिर दूसरा विकल्प यह है कि एक, दो, एक चार, दो एक, और दो अध्यायों को क्रम से सात दिन में पूरा कर सकते है ।

श्री दुर्गा सप्तशती में श्रीवेव्थथर्वशीर्षम स्त्रोत का नित्य पाठ करने से वाक-सिद्धि और मृत्यु पर विजय प्राप्त हो जाती है परन्तु इस स्त्रोत का पाठ पूरे विधि विधान से करना चाहिए अन्यथा नहीं करना चाहिए

श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करने से पहले यह बातें भी ध्यान में रखनी चाहिए कि पाठ करने से पहले और बाद में नर्वाण मंत्र '' ओं ऐं ही क्लीं चामुण्डाये विच्चे '' का पाठ अवश्य करना चाहिए । यहाँ इस निवार्ण मंत्र का विशेष महत्व होता है । इस मंत्र के उच्चारण में, मां सरस्वती, मां लक्ष्मी और मां काली के बीजमंत्र निहित है । वैसे तो दुर्गा सप्तशती का पाठ संस्कृत में ही ज्यादा लिखा होता है और बहुत से लोग इसका पाठ संस्कृत में करना आपको बहुत कठिन लग रहा है और आप इस संस्कृत से पढ़ने में असमर्थ है तो आप हिन्दी में ही सरलता से इसका पाठ कर सकते है । हिन्दी से पढ़ते हुए ही आप इसका अर्थ आसानी से समझ पायेंगे ।

श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करते समय इस बात का विशेश ध्यान देना चाहिए कि माता का पाठ स्पष्ट शब्दों में उच्चारण करे, लेकिन और से या उतावले होकर न पढ़े । शारदीय नवरात्र से देवीस्वरूपा माँ जदगम्बा अपने उग्र स्वरूप में होती है अतः उनकी अराधना बहुत ही श्रद्धा से करनी चाहिए और सच्चे मन से माता कि अराधना करनी चाहिए । नित्य पाठ करने के बाद कन्या पूजन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है अन्यथा कन्या पूजन के बिना व्यक्ति कि मनोकामनाएं पूरी नही हो सकती अधूरी रह जायेगी ।

श्री दुर्गा सप्तशती के पाठ में, अर्गला, कीलक और तीन रहस्यों को भी सम्मिालित करना चाहिए । तथा प्रत्येक व्यक्ति जो माता व्रत पूरी श्रद्धा से रखते है उन्हे दुर्गा सप्तशती के पाठ के बाद क्षमा याचना, क्षमा प्रार्थना अवश्य करना चाहिए, ताकि अनजाने में आपके द्वारा हुए अपराध से मुक्ति मिल सके ।

दुर्गा सप्तशती के प्रथम, मध्यम और उत्तर चरित्र का क्रम से पाठ करने से व्यक्ति कि सारी मनोकामनाएं पूरी होती है । दुर्गा चरित्र के इस पाठ का क्रमानुसार पाठ करने से शत्रुनाश और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । इसे महातंत्री क्रम कहते है । अतः देवी पुराण माता का प्रातः काल पूजन और प्रातः में विसर्जन करने का कहा गया है अगर आप देवी पुराण में कहे गये पाठ के अनुसार पूजन करते है तो पूर्ण सिद्धि की प्राप्ति होती है ।

वक्री ग्रहों का प्रभाव

वक्री ग्रह क्या है ?

किसी भी जातक कि कुण्डलीयों में वक्री ग्रह को भी विशेष रूप से देख लेना चाहिए । कभी-कभी कुण्डलीयों में ग्रहो के गलत नक्षत्रों में बैठने के अलावा भी ग्रहों का वक्री होना जातक कि कुण्डली में बहुत कुछ कह जाता है इसलिए ज्योतिष में ग्रहो का वक्री होना भी विशेष रूप से देखा जाता है । ग्रहों का कक्षा भण्डाकार होता है जिसके कारण पृथ्वी से उनकी पूरी में परिवर्तन

आ जाता है ऐसी स्थिति में जब कोई ग्रह उल्टा चलता हुआ प्रतित होता है तो उसे ही हम वक्री ग्रह कहते है । वास्तव में देखा जाए तो कोई ग्रह उल्टा नही चलता लेकिन वह अपनी परिभ्रमण पथ कि स्थिति के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि वह उल्टी दिशा में जा रहा है । अतः देखा जाए तो ग्रहों का वक्री होना सभी के लिए कष्टदायी फल लेकर नही आता, बल्कि कुछ कुछ जातकों के लिए यह शुभ फल भी लेकर आता है ।

वक्र ग्रह के फल :

सामान्य तौर पर ग्रहों कि बात करें तो शुभ वक्रीय ग्रह शुभ फल देते है और अशुभ वक्रीय ग्रह अशुभ फल देते है । यहाँ पर बस इस बात का ध्यान देना है कि सूर्य और चन्द्रमा सदैव सामान्य गति में चलने वाले ग्रह होते है । और सूर्य और चन्द्रमा कभी वक्री नहीं होती है । वही पर अगर राहु और केतु कि बात करें तो यह सदैव वक्रीय अवस्था में ही स्थित होते है । और जो शेष ग्रह होते है वह कभी वक्रीय अवस्था में रहते है तथा कभी मार्गी अवस्था में रहते है और कभी-कभी कोई ग्रह एक राशि में वक्री होकर पिछली राशि में चला जाता है और कभी-कभी उसी राशि में बना रहता है । फिर जैसे ही ग्रहों का वक्री होना समाप्त हो जाता है वह फिर अपने मार्गी अवस्था में आ जाता है । अर्थात् अपनी पुरानी स्थिति में वापस पहुँच जाता है प्रत्येक ग्रह वक्रीय स्थिति में अलग-अलग व्यक्तियों को अलग -अलग फल देते है इसलिए प्रत्येक ग्रह की वक्री स्थिति देखते हुए ही हम किसी जातक की कुण्डली में वक्री के होने के शुभ या अशुभ फलो को बता सकते है ।

आइए अब हम समझतें है कि कौन सा वक्री ग्रह लाभ देगा और कौन सा ग्रह नुकसान :

ज्योतिषशास्त्र में भारतीय ज्योतिष में वक्री ग्रह को लेकर अनेको ग्रंथ रखे गये है, लेकिन विदेशों में भी ग्रहों के वक्री होने को लेकर कम शोध नही हुए है । अनेक विदेशी वैज्ञानिकों ने भी ग्रहों का वक्रीय शेध करने के बाद भारतीयों विद्वानों के मत से सहमति जताई है अतः वक्रीय ग्रहों के साथ गोचर में चल रहे ग्रहों को जोड़कर सटीक भविष्य कथन किया जाता है । आइए हम इन पाँच ग्रहों कि वक्रीय स्थिति में शुभ या अशुभ फलो को समझते है ।

मंगल ग्रह :

मंगल ग्रह का वक्री होना व्यक्ति को हर स्थिति से नुकसान ही पहुँचाता है । विशेष रूप से किसी व्यक्ति के वैवाहिक जीवन, और यौन सुख पर मंगल के वक्री होने के बहुत ज्यादा असर पड़ता है चूँकि मंगल ग्रह जो है वह पुरूषत्व का प्रतिनिधि ग्रह है इसलिए यह व्यक्ति के ताकत, उत्साह, स्त्रियों के प्रति आर्कषण झुकाव, संभोग की शक्ति एवं विवाद के प्रति रूझाान के बारे में कथन देता है तथा जब भी मंगल वक्री होता है तब पुरूष, संगाई तथा विवाह या अपने जीवन साथी के प्रति गलत निर्णय ले बैठने है और जब गलत निर्णय ले लेते है उसके बाद यह जीवन भर पछताते है और अगर किसी स्त्री जातक की कुण्डली में मंगल ग्रह वक्रीय स्थिति में हो तो उस स्त्री की विवाह के प्रति, तथा यौन सम्बन्धों के प्रति इच्छाएं पूरी खत्म हो जाती है तथा वह इन सब चीजो को बकवास मानने लगती है । अतः वक्री मंगल के प्रभाव से व्यक्ति झूठें मुकदमों पारिवारिक वजह से उलझा जाता है ।

बुध ग्रह :-

बुध ग्रह का वक्री होना व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता, विचार, निर्णय लेने की क्षमता लेखन, व्यापार आदि से होता है । बुद्ध ग्रह जब भी किसी जातक कि कुण्डली में वक्रीय स्थिति में हो तो व्यक्ति को शंति से काम लेना चाहिए । अति उत्साहित होकर व्यक्ति को कोई निर्णय नही लेना चाहिए । क्योंकि बुध ग्रह वक्री स्थिति में व्यक्ति को गलत निर्णय लेने के लिए प्रेरित कर देता है । इसलिए व्यक्ति व्यक्ति के जीवन में जो जैसा चल रहा है उसे चलने देना चाहिए । तथा वक्री बुध होने कि स्थिति में कोई तथा काम प्रारम्भ ना करें । तथा स्त्री जातको के बुध का वक्री होने की स्थिति में समाज, परिवार, कार्यस्थल पर अपमान का सामना कर सकती है । इस ग्रह के वक्री होने वाले लोगो को अचानक कहीं से धन की प्राप्ति के योग बनाते है ।

बृहस्पति ग्रह :-

बृहस्पति ग्रह का वक्री होना अत्यन्त शुभ माना जाता है । इसमे व्यक्ति का भाग्य चमकता है तथा बृहस्पति जिस भाव में भी वक्री होता है व्यक्ति को उस भाव में अनुकूल परिवर्तन आते है । जब व्यक्ति कुण्डली के द्वितीय भाव में आकर वक्री होता है तो आपार धन सम्पदा प्रदान करता है । तथा व्यक्ति के सिर से कर्ज का बोझ उतर जाता है । तथा व्यक्ति का डूबा हुआ पैसा वापस मिल जाता है । जब किसी जातक कि कुण्डली में बृहस्पति नवम् भाव में होता है तब उसके जीवन में भाग्योदय होता है तथा द्वादश स्थान में वक्री होने पर व्यक्ति अपने जन्म स्थान की ओर बढ़ता है और संपत्ति प्राप्त करता है और यदि स्त्री जातक कि बात करें तों स्त्रियों की कुंडली में वक्री बृहस्पति हो तो उन्हे विवाह सुख कि प्राप्ति होती है आर्थि तरक्की होती है ।

शुक्र ग्रह :-

शुक्र ग्रह का वक्री होने का विशेष रूप से सीधा सम्बन्ध भोग-विलास यौन सुख से होता है । शुक्र ग्रह के वक्री होने से स्त्रियों के मन में दबी भावनाएं बाहर आने लगती है उस समय वे अपने पति या प्रेमी से अधिक प्यार वाला चाहती है यदि उन्हे प्यार न मिले तो वह पुरूषो को त्यागने में जरा भी संकोच नही करती है अतः पुरूष जातको की कुण्डली में अगर शुक्र वक्रीय स्थिति में हो और गोचर में वक्री हो तो उनमें भी यौन इच्छाएं तीव्र हो जाता है इस स्थिति में पुरूष शराब का सेवन भी अधिक करने लगता है अतः जब शुक्र पुरूष का स्त्री कि कुण्डली में वक्री होने के बाद मार्गी होने लगता है तो पति-पत्नि के बीच मतभेद तुरंत मिट जाते है तथा कोर्ट कचहरी के मुकदमों का निपटारा हो जाता है और टूटे सम्बन्ध पुनः जुड़ जाते है ।

शनि ग्रह :-

शनि ग्रह को लेकर कुछ जगहों में भारतीय ज्योतिषियों और विदेशी ज्योतिषियों में कुछ मतभेद बताए गए है । अर्थात् भारतीय ज्योतिषियों के माध्यम से शनि ग्रह का वक्री होना जातक को दुर्घटना से सम्बन्धित तथा धन हानि जैसी चीजों से सम्बन्धित होता है । परन्तु एकदम इसका उल्टा विदेशी ज्योतिषियों का मानना है कि शनि के संघर्षो में राहत देता है । शनि के वक्रिय होने कि स्थिति में व्यक्ति कार्यो का स्वयं विश्लेषण करता है ।

रत्न ज्योतिष

रत्न, उनकी पहचान, फायदे और कीमत

रत्न क्या है ?

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भारतीय ज्योतिष में रत्न के बहुमूल्य पत्थर है जो बहुत प्रभावशाली और आकर्षक होते है । ज्योतिष के अनुसार जो रत्न होते है उसमें दैवीय ऊर्जा सामयी हुई होती है जिससे मनुष्य जीवन का कल्याण होता है । रत्न सामान्य रूप से अपने शुरूआती अवस्था में महज एक पत्थर के टुकड़े होते है लेकिन बार में इन्हे बारीकी से तराशकर पॉलीशिंग के बाद पेशकीमती पत्थर बनाया जाता है । तथा यह अपने खास गुणों के कारण रत्न का प्रयोग आभूषण निर्माण, फैशन, डिजाइनिंग और ज्योतिष आदि में किया जाता है ।

रत्न ज्योतिष का महत्व !

रत्न ज्योतिष का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। अक्सर मनुष्य अपने कुण्डलीयों में आए ग्रहों कि बुरी स्थिती के कारण बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इन सब बुरे प्रभावों से बचने के लिए हमारे वैदिक ज्योतिष में ग्रहों कि शांति के लिए कई उपाय बताए गये है, अतः इन सभी में से एक उपाय यह है कि राशि के अनुसार रत्न धारण करना। हमारे ज्योतिषाचार्य के.एम.सिन्हा का यह कहना है कि इन रत्नों को पहनने से बुरे ग्रहो के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है तथा जीवन में आ रही सभी छोटी-बड़ी सम्स्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। ज्योतिषि में हर राशि का अलग-अलग प्रभाव होता है। ठीक उसी प्रकार 12 राशियों पर भी रत्नों का भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। ज्योतिष विज्ञान के अनुसार आइए हम रत्न ग्रहों का प्रतिनिधित्व करते है।

रत्नों के प्रभाव की वैज्ञानिक अवधारणा

ज्योतिषशास्त्र के वैज्ञानिकों कि अवधारण के अनुसार रत्नों का व्यक्ति के जीवन से हजारो वर्ष पुराना नाता है रत्न जहाँ एक और हमारी जमीन से हजारों फुट नीचे से पहाड़ो और गुफाओ में से निकलते है वही दूसरी और समुंद्र और में तथा पौधो कि डालियो, जड़ों व फलो कि डालियों में पाये जाते है जैसे-रत्न मूंगा व संजीवनी बूटी जो पहाड़ो पर चमचमाती दिखाई देती है। अर्थात ज्योतिष में रत्नों से निकली चुम्बकीय शक्ति-तरंगे मानव जीवन को अति विचित्र ढंग से प्रभावित करती है। अर्थात् यह सभी जानते है कि सूर्य कि श्वेत किरणों से सात रंग छुपे होते है वैज्ञानिकों के अनुसार रंग और प्रकाश का गहरा सम्बन्ध है। अतः यह एक विचित्र संयोग ही है कि प्रकृति में सात रंग बनाए, ग्रह भी सात बनाए, वार भी सात है और रत्न भी सात ही प्रमुख रूप से बनाए गये है यह तो जानना जरूरी है की पहचान प्रिज्म तीन पहलू वाले कांच खण्ड से होती है अतः ये प्रकाश किरणे सात रंगो पर सवार रहती है। ऋषियों ने इस वैज्ञानिक सत्य को इस ढंग से स्पष्ट किया गया है।

यह काल रूपी घोड़ा जो विश्वरूपी रथ को खींचता है इसकी सात किरणे ज्योतिष से बतायी गयी है। अतः सौरमण्डल के सदस्यों में ग्रहों की ये व्यात किरणे अखिल ब्रम्हाण्ड को निम्न रंगो से आवेष्टित करती है।- ये सात रंगे इस प्रकार है।

लाल	(Red)	-	R
नारंगी	(Orange)	-	O
पीला	(Yellow)	-	Y
हरा	(Green)	-	G
आसमानी	(Blue)	-	B
नीला	(indigo)	-	I
बैंगनी	(Violet)	-	V

भौतिक विज्ञान में सौर प्रकाश की व्याख्या कि गई है इसके अन्तर्गत एक शब्द मिलता है - ROYGBIV यह इन रंगो का ही संक्षिप्त नाम है। यह इन रंगो का ही संक्षिप्त नाम है। अतः सूर्य कि किरणों में छिपे इन सात रंगो को हम प्रिज्म की सहायता से आसानी से देख सकते सकते है। आपने अक्सर यह देखा होगा जब कभी सूर्य के प्रकाश में हल्की बारिश होती है, तो इन्द्रधनुष में हमे नंगी आँखो से, ये सात रंग इसी क्रम से दिखाई।

चन्द्र राशियाँ एवं राशि रत्न

सूर्य	स्वर्ण (Gold)
चन्द्रमा	चाँदी (SIlver)
मंगल	ताँबा या स्वर्ण (Copper & Gold)
बुध	कांसा (Gold & Alloy)
बृहस्पति	स्वर्ण (Gold)
शुक्र	सफेद सुवर्ण या चाँदी (Platenium or Silver)
शनि	लोहा, त्रिलोह (Iron - Trimetal)
राहु	पंचधातु (Five Metal or Alloy)
केतु	पंचधातु (Five Metal or Alloy)

नामाक्षर	राशि चिन्ह	राशि स्वामी	राशि रत्न
1. चू-चे-चो-ला,ली-लू ले-लो, आ-मेष राशि		मंगल Mars	मूंगा Coral
2. ई-उ-ए, ओ-वा-वी-वू, वे-वो-वृष राशि		शुक्र Venus	हीरा Diamond
3. का-की, कु-घ-ङ-छ, के-को-हा-मिथुन राशि		बुध Mercury	पन्ना Emerald
4. ही, हू-हे-हो-डा, डी-डू-डे-डो-कर्क राशि		चन्द्रमा Moon	मोती Pearl
5. मा-मी-मू-में, मो-टा-टी-टू-टे- सिंह राशि		सूर्य Sun	माणिक्य Ruby
6. टो-पा-पी, पू-ष-ण ठ, पे-पो- कन्या राशि		बुध Mercury	पन्ना Emerald
7. रा-री, रू-रे-रो-ता, ती-तू-ते-तुला राशि		शुक्र Venus	हीरा Diamond
8. तो, ना-नी-नू-ने, नो-या-यी-वृश्चिक राशि		मंगल Mars	मूंगा Coral
9. से-यो-भा-भी,भू-ध-का-डा, में -धनु राशि		बृहस्पति Jupiter	पुखराज Yellow Sapphire
10. भो-जा-भी, खी-खू खे-खो, गा-गी- मकर राशि		शनि Saturn	नीलम Blue Sapphire
11. गू-गे,गो-सा-सी-सू, से-सो-दा- कुम्भ राशि		शनि Saturn	नीलम Blue Sapphire
12. दी, दू-थ-झ-भ,दे-दो चा-ची-मीन राशि		बृहस्पति Jupiter	पुखराज Yellow Sapphir

जन्म नक्षत्र, रंग एवं उनके वृक्ष

नक्षत्र	अंग्रेजी नाम	अंग्रेजी नाम	वृक्ष
1. अश्विनी	(ट्राइएंगूलम)	(Blood-red)	कारस्कर
2. भरणी	(अलभूतैन)	(Blood-red)	धात्री
3. कृतिका	(प्लाएडीज)	(White)	उदुम्बर
4. रोहिणी	(एल्डेबरेन)	(White)	जम्बू
5. मृगशिरा	(ओरयिन बैल्ड)	(Silver-Gray)	खादिर
6. आर्द्रा	(वेटलगीज)	(Green)	कृष्ण
7. पुनर्वसु	(पोलक्स)	(Lead)	वंश, बांस
8. पुष्य	(प्रैसपी)	(Black mixed with red)	पीपल
9. आश्लेषा	(सिकल)	(Black mixed with red)	नाग
10. मघा	(रैगूलस)	(Ivory or like liie butter)	रोहिणी
11. फू. फा.	(डैनेबोल)	(Light Brown)	पलाश
12. उ.फा.	(डैनेबाला)	(Deep Green)	प्लक्ष
13. हस्त	(करबस)	(Black)	अम्बष्ठ
14. चित्रा	(स्पाइका)	(Black)	बिल्व
15. स्वाति	(आर्कचूरस)	(Golden)	अर्जुन
16. विशाखा	(लिबरा)	(Reddish Borwn)	विकंकत
17. अनुराधा	(अलइक्नील)	(Cream)	बकुल
18. ज्येष्ठा	(एनटेरीज)	(Brownish Yellow)	सरल
19. मूल	(अश-साहुल्लाह)	(Black)	सर्प
20. पूषा.	(अन्-नाइस)	(Copper)	वंजुल
21. उ.षा.	(अल्-बलदाह)	(Brownish Yellow)	पनस
22. अभिजित	(विशा)	(Light Blue)	पनस
23. श्रवण	(आल्टेपर)	(Silver Gray)	अर्क
24. धनिष्ठा	(डौलफीनस)	(Aequamarine)	शमी
25. शतभिषा	(सद् उल् मौलिका)	(Silver Gray)	कदम्ब
26. पू.भा.	पैंगासल	(Purple)	निम्ब
27. उ.भा.	पैंगासस	(Brown)	आम्र
28. रेवती	एनड्रीमेडा		मधूक

अंशानुसार रत्न धारण विधान

आपने कई बार ऐसा देखा होगा कि जितने भी जातक है अकसर बिना किसी जानकारी के कोई भी रत्न धारण कर लेते है जिससे कि उनके जीवन में अनजाने में ही बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है अतः हमारे ज्योतिषाचार्य के.एम.सिन्हा के अनुसार हमें अपनी जन्म कुण्डली उपस्थित अनुकूल ग्रह जितने अंशो (Degree) का हो उतनी ही रत्नों या कैरेट का रत्न जातक को धारण करना चाहिए मेरे पास भी कई ज्योतिष प्रेमी, तथा रत्न विशेषज्ञ भी आते है। और इसी प्रकार का प्रश्न मुझसे भी कहते है। तो अगर मै इसकी चर्चा ना करू तो यह किताब मधूरी रह जायेगी इसके बारे में आगे और कुछ आगे बताने से पूर्व हमे इसके प्रत्येक ग्रह की उच्च-नीच व मूलत्रिकोण के अंशो का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः इस यह जानते है कि ग्रहो के राशि अंश 30तक होते है। यदि कोई ग्रह 29-30 अंश में हो तो 29-30 रत्ती या फिर कैरेट का रत्न पहनना समभव नहीं है। इसी प्रकार कोई ग्रह यदि (O) या (1) का है, तो रत्न कितने रत्ती का पहनायेंगे, एक समस्या हो जायेगी। इस विषय में मेरा निवेदन है कि अनुकूल ग्रह यदि स्वगृही या उच्च का है, तो उससे सवाया रत्न धारण करना चाहिए। ऐसा करने पर जातक को जबरदस्त लाभ होगा। और अगर चन्द्रमा यदि कर्क में है तो सवा चार रत्ती का मोती पहनाएँ, यदि सिंह राशि में है तो सवा पाँच रत्नी का मोती, और अगर यदि चन्द्रमा वृष राशि में है तो सवा दो रत्ती या कैरेट का मोती, जातक के लिए बहुत ही अत्याधिक अनुकूल रहेगा। परन्तु कुण्डली में यह ध्यान देना होगा कि चन्द्रमा नीच या परमनीच में तो नहीं है अगर है तो मोती कोई भी फल नहीं दे पायेगा। इसी प्रकार से देखकर सभी रत्नों को पहनाएं।

द्वितीय भाव में शनि काप्रभाव

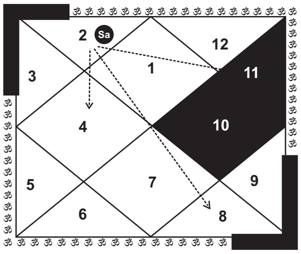

यदि वृषभ का शनि लग्न से द्वितीयेश धन एवं कुटुम्ब स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर बैठा हैतो कारोबार, राज समाज के सम्बन्धों से धन प्राप्त होगा और परिवार मान-प्रतिष्ठा, आवरू की शक्ति प्राप्त करेगा। धन का स्थान कुछ बन्धन का कार्य भी करता है इसलिए पिता के सहयोग मे कुछ कमी रहेगी और तृतीयेश शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को चन्द्रमा की कर्क राशि में देख रहा है इसलिए माता और भूमि के सुख संबंधो में पेरशानी के योग से कार्य पूर्ण करेगा। सप्तमेश शत्रु दृष्टि से जीवन आयु और पुरातत्व स्थान को मंगल की वृच्छिक राशि में देख रहा है फलतः जीवन की दिनचर्या कुछ अशान्त रहेगी और पुरातत्व का लाभ मिलेगा। तथा दशमेश दृष्टि से लाभ स्थान को स्वयं अपनी कुंभ राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इस लिए धन प्राप्ति में शक्ति पायेगा। धन जन की वृद्धि करने में संलग्न रहकर सफलता पायेगा औश्र संपन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करेगा।

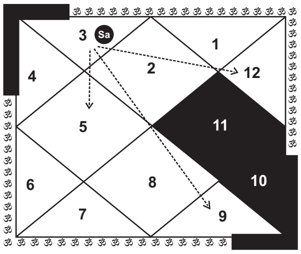

द्वितीय भाव धन सम्पति एवं कुटुम्ब स्थान में मिथुन राशि पर आसीन है जिसका स्वामी बुध है जिससे भाग्य के सुख सहयोग से धन लाभ की अच्छी प्राप्ति होगी समाज में मान सम्मान की प्राप्ति होगी धन का स्थान कुछ बंधन का कारका होता है इसलिये पितृ पक्ष से सुख लाभ में कुछ कमी होगी। तीसरी दृष्टि से चतुर्थ भाव माता एवं सुख स्थान को सिंह राशि में देख रहाहै जिसका स्वामी सूर्य है मातृ पक्ष से एवं भूमि मकान आदि सुख के मामले में सुख लाभ की कुछ कमी रहेगी। सातवीं दृष्टि से अष्टम भाव आयु एवं मृत्यु स्थान को धनु राशि में देख रहा है जिसका स्वामी गुरू है जिससे

आयु पक्ष के मामले में कफछ परेशानी की सामना करना पड़ सकता है तथा जीवन निर्वाह एव रहन-सहन के शानदारी में कुछ कमी रहेगी । धर्म-कर्म में रूचि की अपेक्षा धन-सम्पति की वृद्धि में ही ज्यादा लिप्तता रहेगी । दसवीं दृष्टि से एकादश भाव आयु एवं लाभ स्थान को मीन राशि में देख रहा है जिसका स्वामी गुरू है जिससे ग्यारहवें स्थान पर पाप ग्रह की दृष्टि पड़ रही है इसलिये शक्ति और बढ़ जाती है जिससे आमदनी के क्षेत्र में लाभ एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा कुटुम्ब पक्ष से सुख-लाभ की प्राप्ति होगी ।

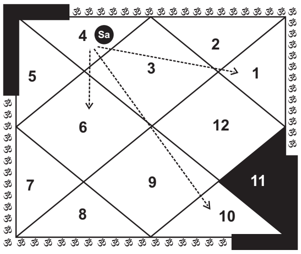

घन स्थान में शत्रु चन्द्रमा की राशि में बैठने से पैतृक संपत्ति प्राप्त करेगा और अष्टमेश के दोष के कारण धन संचित करने में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा तीसरे मित्र दृष्टि से सुख भवन को देखने के कारण मकान आदि का सहारा प्राप्त करेगा परन्तु माता पक्ष में सुख की प्राप्ति होगी । सातवी दृष्टि से स्वयं अपने क्षेत्र को देखने के कारण विवाह में विलम्ब होगा परन्तु विवाह लंबे समय तक चलेगा अर्थात जातक वैवाहिक सुख प्राप्त करेगा दसवी नीच दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की मेष राशि में देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कमजोरी और कष्ट प्राप्त करेगा । किन्तु भाग्य का मालिक होने के कारण धन की तरफ से भाग्यवान माना जाएगा ।

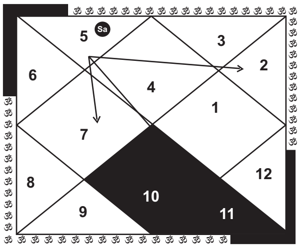

यदि तुला का शनि चौथे केन्द्र माता के स्थान पर उच्च का होकर मित्र शुक्र पर उच्च का होकर मित्र शुक्र की राशि में बैठा है तो घरेलू सुख-साधन और मकान प्राप्त करेगा जीवन साथी तथा गृहस्थी की महान शक्ति प्राप्त करेगा ।

आयु की वृद्धि प्राप्त करेगा तथा माता के स्थान में अष्टमेश होने के दोष के कारण कुछ परेशानी के साथ सफलता प्राप्त करेगा और तीसरी शत्रु दृष्टि से गुरू की धनु राशि में शत्रु स्थान को देख रहा है इसलिए कुछ परेशानियों के साथ शत्रु स्थान में प्रभाव प्राप्त करेगा ।

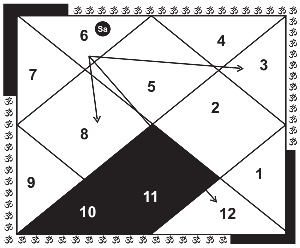

द्वितीय स्थान पर अपने मित्र बुध की राशि में बैठने के कारण धन का संग्रह जल्दी होगा और कुटुम्ब स्थान में मिश्रित फल पायेगा, छठवें स्थान का मालिक होने के कारण स्त्री स्थान के सुख में बहुत सारी बाधायें आ सकती है । और रोजगार के क्षेत्र में भी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा । माता के सुख में कमी प्राप्त करेगा और जीवन में कुछ अशांति अनुभव करेगा । पैतृक संपत्ति से भी वंचित रह जायेगा ।

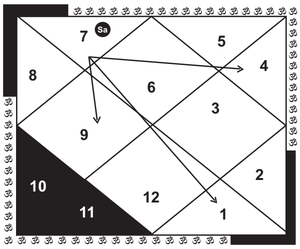

यदि तुला का शनि द्वितीय भाव धन व कुटुम्ब स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर होकर बैठने की वजह से बुद्धि ज्ञान की क्षमता एवं परिरम के द्वारा धन-लाभ की प्राप्ति होगी तथा कुटुम्ब पक्ष से सुख-दुख स्थिति दोनों का सामना होगा । विद्या लाभ की प्राप्ति होगी । सतांन पक्ष से कुछ परेशानी व कष्ट रहेगा । तीसरी शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को शुक्र की शत्रु राशि में देखने की वजह से मातृ पक्ष से सुख सहयोग की कमी प्राप्त होगी तथा भूमि-मकानादि पक्ष में सुख की कमी प्राप्त होगी ।

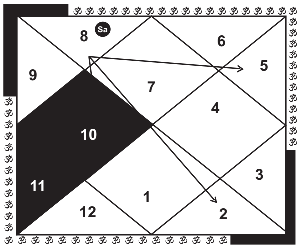

द्वितीय भाव मे धन व कुटुम्ब स्थान में मित्र शुक्र की राशि पर होकर बैठने की वजह से बुद्धि ज्ञान की क्षमता एवं परिरम के द्वारा धन-लाभ की प्राप्ति होगी तथा कुटुम्ब पक्ष से सुख-दुख स्थिति दोनों का सामना होगा । विद्या लाभ की प्राप्ति होगी । सतांन पक्ष से कुछ परेशानी व कष्ट रहेगा । तीसरी शत्रु दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को शुक्र की शत्रु राशि में देखने की वजह से मातृ पक्ष से सुख सहयोग की कमी प्राप्त होगी तथा भूमि-मकानादि पक्ष में सुख की कमी प्राप्त होगी ।

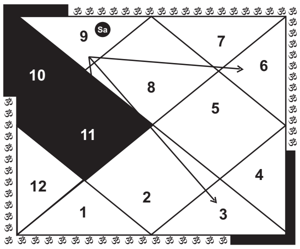

दूसरे धन स्थान में शत्रु मंगल की राशि पर बैठा है तो धन के सुख संबंधो में कफछ उदासीनता युक्त मार्ग से सफलता मिलेगी और पारीवारिक सुख में अनबन रहेगी तथा धन स्थान कुछ बंधन का कार्य करता है इसलिए संतान पक्ष के सुख में कुछ कमी रहेगी और विद्या की शक्ति प्राप्त करेगा । तीसरी दृष्टि से माता एवं भूमि स्थान को स्वयं अपनी मकर राशि में स्वक्षेत्र को देख रहा है इसलिए माता की शक्ति एवं भूमि की शक्ति का सुख प्राप्त करेगा । सातवीं मित्र दृष्टि से आठवें आयु स्थान एवं गुप्त स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देख रहा है इसलिए आयु की शक्ति पायेग तथा गुप्त शक्ति लाभ जीवन के सहायता के रूप में प्राप्त करेगा । दसवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देख रहा है इसलिए कुछ नीरसता युक्त मार्ग द्वारा आमदनी की शक्ति से सुख प्राप्त करेगा और आमदनी वृद्धि करने के लिए कठिन मार्ग से भी लाभ की सूरतें बुद्धि योग द्वारा स्थापित करेगा ।

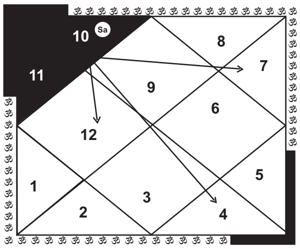

धनु लग्न में दूसरे स्थान पर अपने धर में बैठा हुआ शनि धन की संग्रह शक्ति प्राप्त कराता है और कुटुम्ब का साथ भी जातक को मिलता है ।

भाई-बहन के सुख में कमी रहती है परन्तु अपने मेहनत के बल पर धन प्राप्त करता है। माता के स्थान में कुछ नीरसता पाता है । और भूमि वाहन मकान के पक्ष में भी सुख नही उठा पाता आयु की शक्ति प्राप्त करता है। और पैतृक संपत्ति जातक को मिल जाती है। दसवीं उच्च दृष्टि से एकादश स्थान को मित्र शुक्र की तुला राशि में देखता है । इसलिए विशेष प्रयत्न से आर्थिक उन्नति प्राप्त करता है।

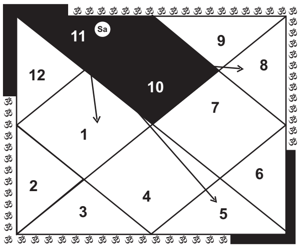

यदि कुंभ का शनि द्वितीय भाव धन व कुटुम्ब स्थान में अपनी राशि पर स्वक्षेत्री बैठा है तो धन संग्रह खूब करेगा कुटुम्ब पक्ष से सुख व लाभ प्राप्त करेगा । तीसरी नीच दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शत्रु मंगल की मेष राशि में देखने की वजह से मातृ पक्ष से सुख में कमी तथा परेशानी की प्राप्ति होगी भूमि मकान आदि के सुख संबंध में कमी रहेगी। सातवीं शत्रु दृष्टि से आयु एवं पुरातत्व स्थान को सूर्य की सिंह राशि में देखने की वजह से पुरातत्व शक्ति में कुछ कमजोरी रहेगी जीवन की दिनचर्या में कुछ परेशानी सी रहेगी। दसवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को मंगल की वृश्चिक राशि में देखने की वजह से आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाई के योग बन सकते है धन कमाने व धन वृद्धि के लिये विशेष मेहनत करेगा तथा सफलता तथा सम्मान प्राप्त करेगा।

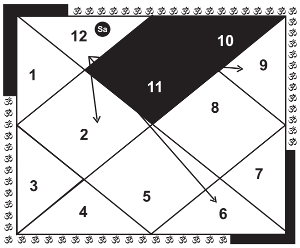

यदि मीन का का शनि द्वितीय भाव धन स्थान एवं कुटुम्ब स्थान में शत्रु गुरू की राशि पर बैठा है जिससे कठोर कर्म व परिश्रम से धन-लाभ तथा धन-जन का सुख-लाभ प्राप्त होगा किन्तु व्ययेश दोष के कारण धन व कुटुम्ब पक्ष के मामले में कमजोर स्थिति हो सकती है तथा न चाहते हुये भी खर्चा अधिक होगा। धन का स्थान कुछ बन्धन का कारण होने के कारण शारीरिक सुन्दरता व स्वस्थता के कुछ कमी हो सकती है। तीसरी मित्र दृष्टि से माता एवं भूमि के स्थान को शुक्र की वृषभ राशि में देखने की वजह से मातृ पक्ष भूमि भवनादि के पक्ष में सुख-लाभ प्राप्त होगा परन्तु व्ययेश दोष होने के कारण घरेलू-सूख साधनों के मामले में कुछ कमी हो सकती है सातवीं मित्र दृष्टि से पुरातत्व स्थान को बुध की कन्या राशि में देखने की वजह से आयु व पुरातत्व पक्ष से कुछ सुख-लाभ प्राप्त होगा दसवीं शत्रु दृष्टि से लाभ स्थान को गुरू की धनु राशि में देखने की वजह से आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाईपूर्वक लाभ प्राप्त होगा तथा अधिक लाभ की प्राप्ति के लिये प्रबल इच्छा के साथ प्रयास रहेगा।

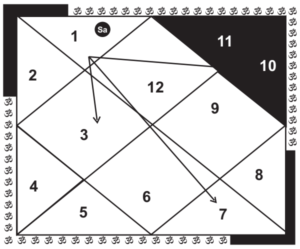

दूसरे धन एवं कुटुम्ब स्थान में शनि नीच का हो कर शत्रु मंगल की राशि में बैठने के कारण धन के संग्रह में काफी कठिनाईयों का अनुभव करना होगा और खर्च के दोष होने के कारण लगातार धन सम्बंधित मानसिक विकार लगा रहता है। माता और भूमि के सुख सम्बन्धों में भी काफी उतार चढ़ाव जातक को भोगना पड़ता है आयु शक्ति प्राप्त करता है और पैतृक संपत्ति मिलने के प्रबल योग होते है।

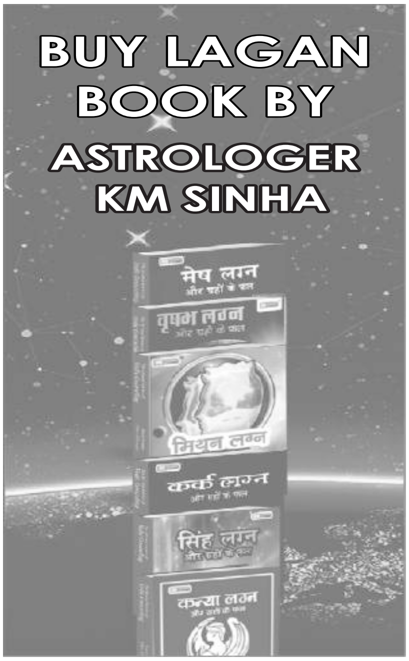

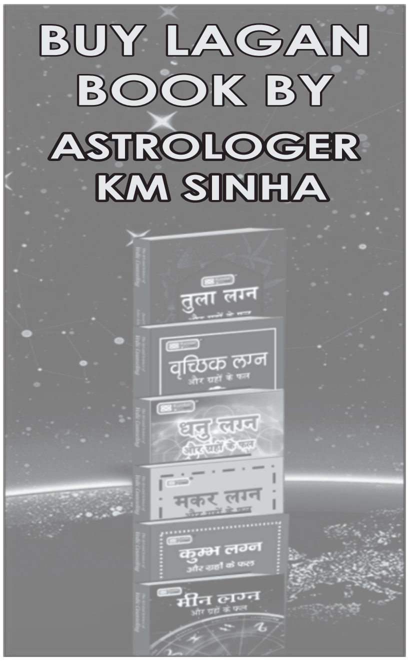

अक्टूबर महीने में त्योहार/व्रत

रवि SUN	**विवाह–मुहूर्त** इस मास में विवाह मुहूर्त का आभाव है	अ. अश्विन कृष्ण 2 **4**	अ. अश्विन कृष्ण 9 **11**	अ. अश्विन शुक्ल 2 **18** चन्द्रदर्शन	अ. अश्विन शुक्ल 9 **25** विजया दशमी
सोम MON	**मूल–विचार** ता. 2 रेवती प्रात:5/57 से ता. 4 अश्विनी दिन 11/52 तक । ता. 11 आश्लेषा रात्रि 1/19 से ता. 13 मघा रात्रि 10/54 तक । ता. 19 ज्येष्ठा रात्रि 3/53 से ता. 21 मूल रात्रि 1/13 तक । ता. 29 रेवती दिन 12/0 से ता. 31 अश्विनी सायं 5/58 तक	अ. अश्विन कृष्ण 3 **5**	अ. अश्विन कृष्ण 11 **12**	अ. अश्विन शुक्ल 3 **19**	अ. अश्विन शुक्ल 10 **26** विजयदशमी (बंगाल)
मंगल TUE		अ. अश्विन कृष्ण 4 **6** सं. श्रीगणेश चतुर्थी	अ. अश्विन कृष्ण 11 **13** पुरूषोतमी एकादशी	अ. अश्विन शुक्ल 3 **20** वै. श्री गणेश चतुर्थी	अ. अश्विन शुक्ल 11 **27** पापांकुश एकादशी
बुध WED	**पंचक–विचार** ता. समय मासारम्भ से 3 दिन 8/51 तक । 25 दिन 3/26 से 30 दिन 2/58 तक ।	अ. अश्विन कृष्ण 5 **7**	अ. अश्विन कृष्ण 12 **14** प्रदोष व्रत	अ. अश्विन शुक्ल 5 **21**	अ. अश्विन शुक्ल 12 **28** प्रदोष व्रत
गुरू THU	अ. अश्विन शुक्ल 15 **1** स्नानदान की पूर्णिमा	अ. अश्विन कृष्ण 6 **8**	अ. अश्विन कृष्ण 13/14 **15**	अ. अश्विन शुक्ल 5 **22**	अ. अश्विन शुक्ल 13 **29**
शुक्र FRI	अ. अश्विन कृष्ण 1 **2** गांधी जंयती	अ. अश्विन कृष्ण 7 **9**	अ. अश्विन कृष्ण 30 **16** अमावास्या	अ. अश्विन शुक्ल 6 **23**	अ. अश्विन शुक्ल 14 **30**
शनि SAT	स्नानदान की कृष्ण 2 **3**	अ. अश्विन कृष्ण 8 **10**	शुंद्ध अश्विन शुक्ल 1 **17** शारदीय नवरात्राम्भ	अ. अश्विन शुक्ल 8 **24**	अ. अश्विन शुक्ल 15 **31** शरद पूर्णिमा

कुण्डली एक्पर्ट के लाइव प्रोगाम में जिन लोगो नें लाइव चैटिंग में प्रश्न पूछे थे । उनमें से कुछ के प्रश्नों के उतर यहां पर उपलब्ध है ।

महादेव लाइव प्रसारण में प्रत्येक रविवार के चैट में पूछे गये प्रश्नों के उतम इस मैगजिन में प्रकाशित होंगे ।

प्रशन 1. ममता शर्मा (राजस्थान चूरू से) जन्म : 29.04.1992, समय : 02.30 मिनट प्रातः, स्थान : चूरू इनकी शादी कब होगी और जीवनसाथी कैसा होगा ?

उत्तर :– आप की कुण्डली का लग्न और राशि कुंभ है सप्तम स्थान सूर्य का है जिससे विवाह को देखा जाता है और सूर्य के साथ शुक्र आंशिक रूप से अस्त है, और सप्तम स्थान पर गुरू विराजमान है आप के विवाह का योग दिसम्बर 2020 से प्रारम्भ होगा और 1 दिसम्बर 2022 तक विवाह हो जाएगा सूर्य को जल चढ़ायें ।

प्रश्न 2. मेरा राहुल सहानी है जन्मः 16.12. 1993, समय : 05:45 pm स्थान : वाराणसी मेंरा सवाल यह है कि मेरी सरकारी नौकरी कब लगेगी और शादी कब तक होगी, लव होगी या अरेंज?

उत्तर : आपकी कुण्डली का लग्न मिथुन और राशि मकर है वैवाहिक स्थान पर सूर्य का विराजमान होना विवाह में रूकावट का कारण बन रहा है अतः सूर्य को नित्य जल चढ़ाये और पुखराज धारण करें जिसका वजन 5 कैरेट का होगा, लव विवाह के कोई योग नही है । अतः विवाह अरेंज होगी, सरकारी नौकरी के योग कम है और 2022 के बाद नौकरी लगेगी ।

प्रश्न 3. मेरा विकास कुमार जन्म : 18.10.1978 समय : 09.30 am स्थान : औरंगाबाद (बिहार) है मेरा करियर कैसा रहेगा मार्च में नौकरी छूटी थी अब कब नौकरी लगेगी ?

उत्तर : आप का लग्न वृश्चिक और चन्द्र राशि मेष है वर्तमान में राहु/शुक्र की दशा में नौकरी छूटी और 12.12.2021 तक नौकरी लगने के योग है आपको लाल मूंगा 8 कैरेट का धारण करना चाहिए

प्रश्नः 4. मेरा नाम अशोक कुमार जन्म : 14.09. 1977, समय 11:30 स्थान : दिल्ली मेरा मकान कब तक बनेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार कब होगा ?

उत्तर : आपका वृश्चिक लग्न और कन्या राशि है वर्तमान में बृहस्पति की दशा चल रही है अब बृहस्पति आपके अष्टम में उपस्थित है अतः लाल रूबी 5 कैरेट का धारण करें 2023 के मध्य तक आर्थिक स्थिति सही हो जायेगी ।

प्रश्न 5. मेरा नाम नैतिक है जन्म : 03.07. 1995, समय : 18:40, स्थान : दिल्ली, मेरा सवाल है कि मेरा बिजनेस कैसा रहेगा, और उन्नति करेगा या नही ?

उत्तर : आपका लग्न धनु और चन्द्र राशि सिंह है व्यापार का मालिक बुध आपके लग्न से छठवें घर में है अतः घर से दूर व्यापार करने के योग है और बुध द्विस्वभाव होने के कारण कई बार एक साथ कई काम करने के कारण मानसिक तनाव बनेगा रहेगा ।

प्रश्न 6. मेरा नाम नितिश कुमार सिंह जन्मः 05. 09.1994, समय 09.30 प्रात : स्थानः बनारस उ0प्र0 है क्या मुझे सरकारी नौकरी मिल सकती है ?

उत्तर : आपकी कुण्डली तुला लग्न और सिंह राशि की है और आपकी कुण्डली में सरकारी नौकरी के योग है आपकों निली 5.30 कैरेट का धारण करना चाहिए और नौकरी 16 फरवरी 2022 तक मिल जानी चाहिए ।

प्रश्न 7. मेरा नाम दिशा शर्मा जन्म : 19.11. 1995, समय : 03.55 सुबह स्थान : गोरखपुर मेरा सवाल है कि मेरी सरकारी नौकरी कब लगेगी और विवाह कब होगा, लव या अरेंज ?

उत्तर : आपका लग्न और राशि कन्या है और सरकारी नौकरी का कारक सूर्य लग्न से तृतीय भाव में है सरकारी नौकरी के योग कम है परन्तु पन्ना धारण करें जिसका वजन 5 कैरेट का चाँदी में दाये हाथ की छोटी उंगली में धारण करें प्रेम विवाह के योग है, और विवाह मार्च 2024 तक होगा ।

प्रश्न 8. मेरा नाम अमन है जन्म : 09.07. 1998, समय 07.04 सुबह स्थानः गोरखपुर मेरा सवाल है कि मेरी नौकरी कब तक लगेगी ?

उत्तर : आपका लग्न कर्क और चन्द्र राशि धनु है कर्म स्थान पर नीच का शनि विराजमान है जिसका नीच भंग नही हो रहा है अतः नौकरी मिलने में थोड़ा विलम्ब रहेगा 30 जुलाई 2025 के आस–पास नौकरी स्थाईत्व प्राप्त होगा । इन्हे घर से दूर जाकर कार्य करना चाहिए और पुखराज 5 कैरेट का धारण करें ।

प्रश्न 9. मेरा नाम प्रवीण जायसवाल है जन्म : 14. 06.1978, समय 1.15 प्रात स्थान : जलगाँव महाराष्ट्र मुझे कर्ज से कब मुक्ती मिलेगी ?

उत्तर : आपका लग्न मीन और चन्द्र राशि सिंह है वर्तमान में आपकी बृहस्पति की दशा चल रही है और 8.12.2023 के बाद कर्जा से मुक्ति मिलेगी और आपकों 12 कैरेट का सलोनी पहनना चाहिए ।

प्रश्न 10. मेरा नंदिता राय चौधरी मेरे पति का जन्म : 22.08.1971, समय : 04.50 प्रात स्थान : कोलकाता इन्हे जॉब में प्रमोशन कब मिलेगा ?

उत्तर : आपके पति का लग्न कर्क और चन्द्र राशि मीन है वर्तमान में सूर्य की महादशा चल रही है 1. 02.2022 के बाद नौकरी में प्रमोशन के योग बनेगें लाल मूंगा 7.25 कैरेट का पहनें ।

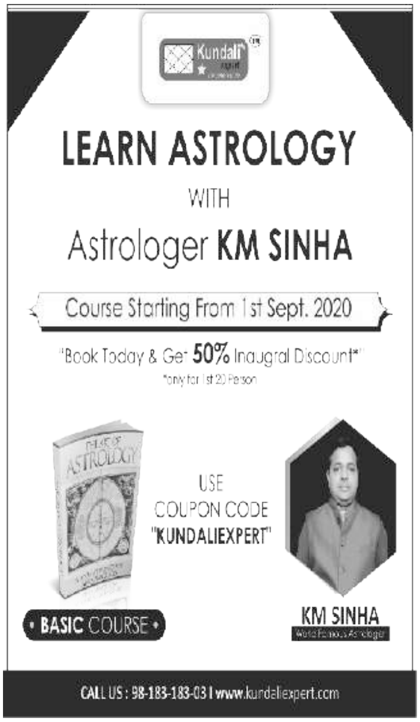

KM ASTROGURU PVT. LTD.

Regd Off.: B-1, 101, Block-E, Classic Residency Apartment Raj Nagar Extenion, Ghazabad

S.No.	

ADMISSION OPEN

For Astrology Course

AFFIX YOUR PHOTO

Course Name : 1 Year Basic Astrology Course ☐
2 Year Advanced Astrology Course ☐

1. Name of student: ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐
(IN BLOCK LETTERS)

2. Father's Name/ Guardian's Name: ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐
(IN BLOCK LETTERS)

3. Date of Birth : ____________________ 4. Religion: __________________

5. Mobile/Telephone: ____________________ 6. Nationality : ________________

7- Qualification: _______________________ 8. Email :______________________

9- Gender: ☐ Male ☐ Female 10. Parental's Alerts: ☐ Email ☐ SMS

11. Postal Address: ____

____

12. Class/Course to be joined: ______________ Timings:_________to:__________

13. Aadhar Card Number ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

14. Blood Group : _______________________

Signatue of the Applicant

Signatue of the Parents

-: FOR OFFICE USE ONLY :-

Receipt No.:
Dated :

Admin Signature ____________________

Kundali expert
For Better Future

KM SINHA

World Famous

-: ASTROLOGER :-

VISITING CENTER INDIA

Mumbai, Delhi, Kolkata, Chennai, Ahmedabad
Bhubneshwar, Chandigarh, Lucknow,
Jaipur, Gorakhpur, Ghaziabad, Bangalore, Hydeerabad

VISITING CENTER ABROAD

Indonesia, Australia
Philippines, USA, UK

KUNDALI EXPERT

B1- 101, Block E, Raj Nagar Extension, Ghaziabad 201017
Contact us : 98-183-183-03

Follow us: